بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

रद्दे वहाबियाह

पहला एडीशन मई 2012

कीमत

35 रू0

लेखक

आयतुल्लाह सय्यदुल उलमा

सय्यद अली नक़ी नक़वी

Published by :

Yadgar-e-Husaini

Lucknow (U.P.) India

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

राब्ता करें :

जनरल सेकरेट्री

यादग़ार-ए-हुसैनी

(0091) 9565772492

ई-मेल : yzdgarehusaini@gmail.com

खुलासा व इज़हारे तशक्कुर

ज़ेरे नज़र किताब ''रद्देवहाबिया'' दरअस्ल अरबी किताब ''कशफुल नकाब'' का उर्दू एडीशन है।

और कशफुल नकाब वह नादिर व नायाब रोज़गार किताब है जो सरकार सय्यद उल उलमा मद्दजिल्लहू आली' ने अपने ज़मानऐ तालिबे इल्मी में ख़ाके सय्यदुशशुहदा और रौज़ऐ नजफ़ अशरफ में कयाम फरमाकर तहरीर फरमाई थी, किताब कितनी मुस्तनद व जाम्य है इसका फैसला खुद अहले इल्म व अहले नज़र फरमायेगे।

इज़हार बूऐ मुशक गज़ालों के सामने।

उस नायाबे ज़माना किताब का एक नुस्ख़ा मुम्बई में आकाए रज़ी मद्दज़िल्लहू (पेश नमाज़ मस्जिद इरानियोन अल्मारूफ बा मुगल मस्जिद) के पास मौजूद था जो मौसूफ ने मेरे कहने पर जनाब मुहम्मद सादिक के ज़रिये इस ख़्वाहिश के साथ मुझे मरहमत फरमाया कि इस की इशाअत उर्दू के अलावा अरबी ज़बान में दोबारा हो।

और जब मेरी ख़्वाहिश और ज़िद के पेशेनज़र सरकार सय्यद उल उलमा मद्द ज़िल्लहू ने इज़ाराहे तलत्तुफ व ख़ुरद नवाज़ी अपनी अदीमु अल-फुर्सती, पीराना साली और नासाजयी मिज़ाज के बावजूद अरबी मसौदे पर नज़र सानी फरमाकर और उर्दू किताब को अज़सरेनौ तरतीब देकर और तेहरान में मुकम्मल फरमाके मुझे इनायत फरमाया तो मैने अरबी मतन की एक ज़िराक्स कापी आकाए रज़ी के पास भेजी ताकि वह आका अलहाज सय्यद मुहम्मद मूसवी (वकील आयतुल्ला अलखुई मद्द जिल्लहू अल आली मुकीम मुम्बई) से अपने खासुल्ख़ास रवासिम के बिना पर इसकी इशाअत के लिये मदद लें, लेकिन आका मूसवी ने बर-बिनाये मसलिहत , या बर बनाये मजबूरी या बर-बिनाये ''नाकाबिले अशाअत'' उसको दर खोरे ऐतना न समझा, हलांकि ''कशफुअन्नकाब'' वह किताब है जिस के दलायल व बराहीन का मुतालेआ फरमा कर खुद आलमे दौराने आयतुल्ला अलखुई मद्दजिल्लहू अल आली ने इसके पहले ऐडिशन पर तकरीज़ तहरीर फरमायी है, बहरहाल यह अक़्स मूसवी साहब के पास अब तक मौजूद है।

गो कि मैने इन किताबों की तबाअत व इशाअत का बेड़ा तने-तनहा उठाया था लेकिन बाद में सरकार सय्यद उल उलमा मद्दजिल्लहू के बाज़ परस्तारों और मुहेब्बीन ने भी इस कारे ख़ैर में शिरकत का इज़हार फरमाया तो मैं इंकार न कर सका।

चुनानचे मेरे शुक्रिये के मुस्तहिक हैं।

अलहाज काज़ी सय्यद मोहम्मद अहमद साहब जिन्होंने सहम इमाम अलयहिस्सलाम में से पाँच हज़ार रूपये की ख़तीर रक़म मरहमत फरमायी।

जनाब सलामत रिज़वी जिन्होंने उर्दू किताब की किताबत फरमायी और एक पैसा बतौर उजरत नहीं लिया।

जनाब मीर अहमद अली रिज़वी और जनाब सरफराज़ हुसैन छब्बर का जिन्होंने किताब की तदवीन व तबाअ़त की ज़िम्मेदारी अपने सर ली।

जनाब एम.एम. गुलाम हुसैन और जनाब गुलाम हुसैन ज़ैदी का जिन्होंने उर्दू किताब की तसहीय में तआउन किया और जनाब मौलाना सय्यद हसन साहब किब्ला मद्दजिल्लहू का जिन्होंने इन हर दो हज़रात की तसहीय के सिलसिले में मदद फरमाई।

अब रहा सवाल हज़रत सैय्यद अल-उलमा मद्दजिल्लहू अलआली के शुक्रिये का तो मेरे नज़दीक यह जसारत बेजा और एक किस्म की खुद नुमायी है।

यह बात दोपहर के सूरज की तरह रौशन है कि मज़हब हक़्का इसना अशर पर जो हमले कम अज़कम इस सदी के दौरान हुए हैं उनका मुसकित और दनदानशिकन दिफा अक्सर सैय्यद-अल-उलमा ही फरमाते रहे हैं, इसके लिए मैं तो क्या सारी शिया क़ौम सरकारे आली के ज़ेरे बार एहसान रहेगी, और जब-जब इस किस्म के हमले दुनियाए शिय्यत पर किये जायेंगे, अँजनाब ही के तहकीकात व निगारशात के हथियारों से उनका मुकाबला होता रहेगा और उनकी काट की जाती रहेगी।

मेरी दुआ है कि खुदावन्द-आलम ब-तुफैल मोहम्मद व आले मोहम्मद उनको तंदरूस्त व तवाना रखे और उनका साया हमारे सरों पर बाकी रखे। 'आमीन'

फकीर दरे अहलेबैत
जाफर अली असील

मुक्दमऐ नाशिर

रद्दे वहाबिया के सिलसिले में सरकार सय्यद उल उलमा की यह मअरका आरा किताब जैसा कि इस के असल किताब के असल दिबाचय से ज़ाहिर होगा नजफ अशरफ़ (इराक़) में लिखी गयी थी, और वही आज से निस्फ सदी से ज़्यादा पहले तबअ हुई थी, इसलिये ज़रफे मकान और ज़रफे जमान दोनों की दूरी की वजह से अब वह मिस्ल कलमी किताबों के जो गैर मतबुआ हो कमयाब नहीं बल्कि नायाब हो गयी थी, इसलिये हमने सरकार मुसन्निफ दाम ज़िल्लहू से इस्तदा की कि वह इस पर दोबारा नज़रे सानी फरमाकर इशाअत के लिये मरहमत फरमा दें और चूँकि अस्ल किताब अरबी ज़बान में है जिससे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अफराद उमूमी तौर पर इस्तेफ़ादा नहीं कर सकते, इसलिये वह इन्हें मुनासिब इज़ाफों के साथ उर्दू में भी तहरीर फर्मा दें चुनानचे! हमारी खुश नसीबी से हमारे यह दोनों मारूज़े पाये कुबूल तक पहुँचे और अब अलावा अरबी किताब की दोबारा इशाअत के लिये यह उर्दू किताब भी हम मन्ज़रे आम पर लाने की सआदत हासिल कर रहे हैं। **वस्सलाम**

पेश लफ्ज़ अज़-मुसन्निफ

बिस्मिल्लाही-अर-रहमानिर्रहीम,
अल्हमदुल्लिाही रब्बिल आलमीन वस्सलातु अला सैय्यदुल मुर्सलीन व आलिही अत्ताहिरीन

निस्फ किताब का पसे मन्ज़र :-

मेरा लखनऊ में वाकई बचपन तो नहीं, आगाज़ जवानी का दौर था जिस में आदमी को हमारे हिन्दुस्तान के अर्फ आम में ''बच्चा'' ही कहा जाता है, जब हिजाज़ में सऊदी सल्तनत कायम हुई और वहाबी तसव्वुरात पूरी शिद्दत के साथ मन्ज़रे आम पर आये और उन के इल्मी मुज़ाहिरात यूँ हुए कि पहले जन्नतुलमुअल्ला (मक़्का मोअज़्ज़मा) के मोहतरम मज़ारात मुनहदिम किये गये और फिर काज़ी उल-कुज़ा नजद इब्न बलीद ने एक नुमायशी इस्तफ़ता के साथ बज़ाहिर उलमाए मदीना के फतवे से जन्नतुलबकी के मज़ाराते मुकद्दसा मिसमार कराये, जिस से आलमे इस्लाम के बड़े हिस्से में और दुनियाये तशीय में कुलयतन तलातुम हो गया, इसलिये कि यहाँ शियों के चार इमाम हज़रत इमाम हसन अलैहिस्सलाम, इमाम ज़ैनुलआबेदीन अलैहिस्सलाम, इमाम मोहम्मद बाकर अलैही अस्सलाम और इमाम जाफर सादिक अलैही अस्सलाम के रौज़े भी थे और इनके अलावा हज़रत सैय्यद उन निसाये आलमीन फ़ातमा ज़हरा सलामुल्ला अलैहा की कब्रे मुताहर भी थी और दूसरे कुबूर भी ऐसे थे जिनसे दूसरे मुसलमानों की वाबस्तगी है।

हिन्दुस्तान में शाह वलीउल्लाह देहलवी के वक्त से एक जमाअत नजदी अक़ाऐद की परस्तार रही थी, मगर यह जमाअत मुसलमानों में घुली मिली हुई थी, अब हिजाज़ के इन्कलाब के बाद उसने खुलकर इब्न सऊद की हिमायत शुरू कर दी। ज़फर अली खाँ का मशहूर अख़बार ज़मीनदार

(लाहौर) इस जमाअत का ख़ास आरगन था, मशायख सूफिया और लखनऊ के उलमाए फिरंगी महल शियों के साथ मिलकर इस जमाअत के मुकाबले में सफ आरा हुए, चुःनानचे फिरंगी महल में अन्जुमन ''खुद्दामूँ-अलहरमैन'' कायम हुई जिसके सरपरस्त इस वक्त के सरबराह आवरदाह फिरंगी महल के आलम मौलाना कयामुद्दीन मोहम्मद अब्दुल बारी साहब थे और आल इण्डिया शिया कान्फ्रेन्स लखनऊ के ज़ेरे साये अन्जुमन ''तहफ़्फजू माआसरा मुतबररका'' कायम हुई।

बिला तफ़रकाय शिया व सुन्नी रिफाहे आम लखनऊ में जलसऐ आम हुआ और फिर कैसरबाग में हिजाज़ कांफ्रेन्स मुनअकिद हुई, जिसमें अलावा उल्माये शिया और उल्माये फिरंगी महल के तमाम हिन्दुस्तान के अकाबिर उल्मा व मशायख और कुछ अहम् लीडर मुसलमानों के शरीक हुए। उनमें जिन शखसियतों के नाम और सूरते मुझे याद हैं वह मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी, शाह फाख़िर इलाहाबादी और मौलाना मज़हरुद्दीन ऐडिटर अल-अमान और सब से पेश-पेश मौलाना मोहम्मद सुलेमान फुलबारवि थे।

मुसलमान मशहूर लीडरों में अली बरादरान शुरू में इब्न सऊद के हामी थे और अक़्सर वाक्यात को झुठलाते रहते थे, लेकिन जब उन्होंने खुद जाकर हिजाज़ के हालात देखे तो उन के रवैय्ये में तब्दीली पैदा हुई और हिजाज़ कांफ्रेन्स में वो भी शरीक हुए।

इस जलसे ने उल्माये शिया में से जनाब नज्म उल मिल्लत और जनाब नासिर उल मिल्लत और दीगर उल्मा के साथ उल्माये अहले सुन्नत में से मौलाना अब्दुल बारी साहब वगैरह के इत्तेफाके राय से अल्तवाये हज़ की तहरीक पेश हुई और हज़रात उल्मा के अलावा फखरे कौम मौलवी सैय्यद कल्बे अब्बास साहब ने इसकी ताईद में धन गरज तकरीर की और जहाँ तक याद है मज़हरूद्दीन साहब ऐडिटर अल-अमान ने भी ताईद की, मगर अली बरादरान मौलाना शौकत अली और मौलाना मोहम्मद अली जौहर ने इस तजवीज़ की मुखालिफ़त की और मौलाना मोहम्मद अली ने अपनी स्यासी

सूझ-बूझ ज़ाहिर करते हुए यह मिसरा पढ़ा :-

''उम्र गुज़री है इसी दश्त की सय्याही में''

उनकी तकरीर ख़त्म होते ही शाह मोहम्मद सुलेमान साहब फुलवारवी खड़े हुए और उन्होंने उनकी रद् करते हुए कहा कि सिर्फ सियासी सूझ-बूझ कोई चीज़ नहीं उसके साथ दीनी बसीरत की भी ज़रूरत है। मैं इस मिसरे को अकेला नहीं पढ़ूँगा, मुझे हक है कि मैं इसका दूसरा मिसरा पढ़ूँ।

''पाँचवी पुश्त है शब्बीर की मददाही में!''

चुःनानचे तजवीज़ कसरते राये से मंजूर हुई।

चूँकि दीगर उल्मा के साथ इस जिहाद में हमारे वालिद बुजुर्गवार जनाब मुमताज़ उल-उल्मा सैय्यद अबुल हसन उर्फ मुन्नन साहब किब्ला आल-अल्लाह मकामहू बड़े जोश व खरोश के साथ शरीक थे। इसलिए मैं जिसके अन्फवाने शबाब के साथ जौलानी कलम का दौर था। अपने कलम को लिये इस में उतर पड़ा, जिसमें पहली मरतबा बिला तफरीक शिया व सुन्नी आलमे इस्लाम से मुतअरिफ़ हुआ, इस ज़ेल में चूकि सबसे अह्म मसला ''इमारते कुबूर'' का था इसलिये अख़बार ''ज़मीनदार'' के एक मज़मून की रद में ''अलबैतुल मामूर की इमारतिलकुबूर'' किताब लिखी जो उस वक्त के मुम्ताज़ शेयी मतबा ''नूरू-अलमताबय'' में शाय हुई और ब-कसरत इस्लामी जरायेद में इस पर तबसिरे शाय हुए और दूर-दूर से इसकी माँग आयी और यह किताब बहुत कम अरसे के अन्दर अतराफ़े मुल्क में मुन्तशिर हो गयी। फिर अख़बारों ने ब-कसरत मज़ामीन के अलावा अल्तवाये हज के मसले पर शिया और सुन्नी दोनों के नुक्तए नज़र से बहस करते हुए एक बसीत मज़मून लिखा जिसे इदारह ''खुददामुअल हरमैन'' ने कुछ दूसरे हज़रात के मज़ामीन के साथ शाय किया, जनाब नज्मुल मिल्लत आल-अल्लाह मकामहू के पास ईराक व शाम वगैरह के उल्मा के जो मन्सूर इस मौजू पर आये थे उनके हुक्म से उनका उर्दू तर्जुमा और अपनी तरफ से आलमे इस्लाम के नाम एक अरबी अपील तर्जुमे के साथ शामिल करके ''फरयादे मुसलमानाने आलम'' के नाम

से एक कॉलम अरबी और दूसरे पहलू के कालम में उर्दू इस तरह एक मजमुआ मुरत्तब किया जिसे अन्जुमन ''मुबैय्यदुल उलूम'' मदरसतुल वाएज़ीन लखनऊ ने शाय किया।

अब मैने इस मौजू पर अरबी में एक मुकम्मल किताब लिखने का इरादा किया जिसमें वहाबियत की तारीख़ और नजदियों के तमाम अकायद पर सेर हासिल तबसिरा हो। इसलिये माख़ज़ों की तलाश में मुख़्तलिफ किताबख़ानों की सैर करनी पड़ी, और काफी मवाद मुकम्मल हवालों के साथ फराह्म हो गया। लेकिन अभी इस की तरतीब के साथ जमा आवरी और किताब की तहरीर का काम शुरू नहीं हुआ था कि शाबान 1345 हिजरी में तकमीले इलम के लिये मेरा ईराक का सफर हो गया, इत्तेफ़ाक से इसी दिन सैय्यद उल फ़ुक़हा जनाब मुफ़्ती सैय्यद अहमद अली किब्ला मए मुत्अल्लकीन ज़यारत अतबात आलयात के लिये रवाना हुए और रेल और जहाज़ दोनों में उनका साथ रहा। कर्बलाये मुअल्ला में हरमे हुसैनी के करीब एक मकान ताज महल मरहूमा का था, जिसमें अक़्सर हिन्दुस्तानी ज़ायरीन ठहरते थे, यहाँ कयाम हुआ।

फितरी तौर पर जो शख़्स ज़्यारत को जायेगा मगर रवानगी के वक्त जब पूछा जाये कहाँ जा रहे हो? तो कहेगा ''करबलाये मुअल्ला'' और जो शख़्स तहसील इल्म के लिये जा रहा हो, वह भी अगर चेः इन तमाम मुशाहिद मुशर्रफा की ज़्यारत करेगा मगर इस से जब पूछा जाए कहाँ जा रहे हो? तो कहेगा ''नजफ़े अशरफ'' चुःनानचा जनाब मुफ़्ती साहब किब्ला चूँकि ज़्यारत के लिए गये थे तो कर्बला पहुँचकर उनका एहसास यह था कि मन्ज़िले मकसूद पर पहुँच गये, लिहाज़ा कुछ मुद्दत के लिये वहाँ रह गये और दो-चार दिन वहाँ मुशर्रफ रह कर नजफे अशरफ चला गया। और चन्द दिन ख़ादिम के यहाँ कयाम करके मदरसये हिन्दी में जो लाहौर के ख़ानदान कज़िलबाश का बनवाया हुआ था इसलिये ''मदरसा नवाब'' कहलाता था, मुकीम हो गया। ईराक व ईरान में मदरसे के माने होते हैं बोर्डिंग हाउस यानी

तलबा के लिये दारूलअकामा, वरना दर्स तो मस्जिदों में या उल्मा के मकानात पर होते है।

अब पहुँच तो गये मगर तदरीस का काम अभी शुरू न हो सकता था क्योंकि माह रमज़ान की वजह से दर्स बन्द हो चुके थे, और 9 शव्वाल तक छुट्टी थी लिहाज़ा हमने इस दरमियानी मुद्दत को बा मसरफ़ बनाने के लिये ये काम हाथ में लिया कि रद्दे वहाबिया का वह मवाद जो हिन्दुस्तान में जमा किया था उसे किताबी शक्ल में अरबी में लिखना शुरू कर दिया। इस इल्तिज़ाम के साथ कि दस सफे रोज़ मसूदे के लिखे जाये चुःनान्चा दस दिन में सौ सफहात की किताब का मसूदा तैयार हुआ और इसी इल्तिज़ाम के साथ दस दिन में उसे साफ किया।

नज़फ अशरफ में एक जलीलुलकदर साहिबे इल्म व इत्ला, अलावा उलूमे दीनिया के अरबी के बुलन्द पाया अदीब व शायर और गैरत दीनी व एहसासे इस्लामी रखने वाले अल्लामा मीरज़ा मुहम्मद अली औरदबादी थे और वह बगैर ज़र्रा भर मुल्कि व कौमी तअस्सुब के ख़ालिस इल्मी और दीनी इक़दार के ज़बरदस्त कदरदाँ थे। इन्हें न मालूम क्योंकर मेरा हाल मालूम हो गया और वह पूछते हुए इसी इब्तिदायी दौर में मदरसे के हुजरे में मेरे पास पहुँच गये, और एक दम उन्हें मुझसे एसी मोहब्बत पैदा हुई जिसमें इज़ाफा होता चला गया, और बाद में हमारी इस ''एक जान दो कालिब'' वाले इत्तिहाद में अल्लामा सैय्यद मोहम्मद सादिक बहर उल-उलूम शरीक हो गये तो हम (बिला तशबीह) ''अकालीम सलासा'' ऐसे हो गये कि मेरे पूरे ज़मानऐ कयाम नजफ में हमारा इत्तिहाद मिसाली हैसियत इख़्तियार कर गया। बाद में जब हम लोग जिस्मानी तौर पर मुतफर्रिक हो गये तब भी कलबी इर्तिबात हम लोगों का ग़ायबाना तौर पर बरकरार रहा।

बहरहाल पहली मुलाकात के बाद तकरीबन हर रोज़ अल्लामा औरदबादी आने लगे और जितना-जितना यह काम होता गया वह उस पर मुत्तला होते रहे और उन्होंने नज़फे अशरफ के इल्मी हल्के में उसका चर्चा

शुरू कर दिया, इस तरह तसनीफ मुकम्मल होने के पहले एक माने में नजफे अशरफ में इस किताब की इशाअत हो गयी, और अब हम शबे-कदर की मख़सूसी में ज़्यारते कर्बलाये मुअल्ला के लिये गये तो यह किताब साफ शुदह शक्ल में साथ मौजूद थी।

चूँकि जनाब मुफ़्ती साहब मुझ पर ख़ास शफ़्क़त फरमाते थे, इसलिये मैं इस दफा भी उन्हीं के पास ताजमहल में जाकर ठहरा और उनके पास कदीमी तअल्लुकात के बिना पर कर्बलाये मुअल्ला के उलमा व अफ़ाज़िल तशरीफ़ लाया करते थे, अब मैं मौजूद था तो हर महफ़िल में हाज़िर रहता था और जनाब मुफ़्ती साहब तआर्रुफ़ में मेरी इसी तसनीफ़ का ज़िक्र फरमाते थे।

चूँकि वहाबी मज़ालिम और वहाबी नज़रयात का चर्चा हर जगह शिद्दत के साथ था इसलिए मुतअद्दि हज़रात रद्दे वहाबिया में किताब लिख रहे थे, और मेरे सिन व साल को देखकर इस किताब का ज़िक्र सुनते हुए मुतअज्जिबाना तौर पर उसके देखने का इश्तियाक ज़ाहिर फरमाते थे। अब मैं हर एक को यह तहरीर देखने के लिए कहाँ देता पढ़कर सुनाने लगता था। जिससे उन्हें मजीद मुंदरजात किताब के सुन्ने का शौक पैदा होता था, यूँ चन्द मगरिबैन के बाद काफी रात तक मेरा एक मुस्तकिल मशगला किताब ख्वानी का हो गया, और रोज़ उन हज़रात के साथ कुछ नये अफ़राद जिन तक यह तज़किरा पहुँचता था मुश्ताक होकर तशरीफ लाते थे। ज़ाहिर है कि वहाँ के लिहाज़ से मैं उस वक्त इब्तिदायी दर्जे का तालिबे इल्म था और यह हज़रात वहाँ के तल्बा नहीं बल्कि उलमा की हैसियत रखते थे मगर उनकी वुसअते क़लब थी कि हर एक ने इस मौजू पर इस किताब को एक नादिर चीज़ समझा, यहाँ तक कि आक़ा शेख मोहम्मद अली कुम्मी जो इस वक़्त के अकाबिर उलमा कर्बलाये मुअल्ला में थे साठ साल से बज़ाहिर उमर मुताजाविज़ थी और किफाया पर उनका हाशिया दो जिल्दों में नजफे अशरफ में तबा हुआ बाद में जब मैं इराक ही में था तो वह ईरान तशरीफ ले गये तो आयतुल्ला अल्उज़मा हाज शेख़ अब्दुल करीम यजदी हायरी के बाद कुम में

सफे अव्वल के उलमा में उनका शुमार हुआ, वह भी चूँकि रद्दे वहाबिया में एक रिसाला तहरीर फरमा रहे थे, तो इस किताब का ज़िक्र सुनकर वह तशरीफ लाये और ख़्वाहिश फरमायी कि वह दो तीन दिन के लिए उसे साथ ले जायें मैने उनकी जलालत व बुजुर्गी से मुतासिर होकर इस किताब को उन्हें दे देना गवारा कर लिया, वह उसे अपने साथ ले गये और हस्ब वादा तीन दिन बाद तशरीफ लाकर उसे वापस कर दिया चुनान्चे उसके बाद मम्दूह का रिसाला इस मौजू पर शाय हुआ और दूसरी किताब अल्लामा शेख़ मोहम्मद अली सनक़री की जिस का नाम था ''अल-मशाहिदुल्मुशर्रफाति वल वहाबिय्यून'' तीसरी किताब हुज्जतुल इस्लिाम आका सैय्यद हसन कज़वीनि की निकली।

हमारे मूरिसे आला हज़रत गुफ़रान मआब ताब सराह के उस्ताद सहिबे रियाज़ की औलाद में आका सैय्यद मोहम्मद अली तबातबाई एक बड़े ग़ैरत दीनी रखने वाले हस्सास बुजुर्ग थे जो सरकार आका मिर्ज़ा मोहम्मद तक़ी शीराज़ी और आक़ाये शरीय्यत वगैरा की सरकरदगी में पहली जंगे अज़ीम के बाद अंग्रेज़ों के तसल्लुत से इराक़ को आज़ाद रखने के जिहाद में शरीक रह चुके थे, उन्हें मेरी किताब से इन्तिहाई गिरवीदगी पैदा हो गई और मैं चन्द रोज़ के बाद नजफे अशरफ वापस हुआ तो अल्लामा औरदबादी ने अपने हल्कये अहबाब में नजफे अशरफ़ के अन्दर और आक़ा सैय्यद मोहम्मद तबातबाई ने कर्बलाये मुअल्ला में यह तहरीक चलाई कि इस किताब को छपना चाहिये चुनान्चे, मतबा हैदरया नजफे अशरफ़ में यह किताब तबा हुई।

इस ज़माने में खुद मेरी ज़हनियत रवादाराना न थी इसलिए किताब का नाम रखा गया :-

''सौते अज़ाबा अला इत्तिबाई इब्न अब्दुलवह्हाब'' जो मुझे बहुत पसन्द था मगर तबाअत के वक्त इन हज़रात ने कहा कि यह नाम बहुत सख़्त है और बदलवाकर ''कशफुन्नकाब अन अकाइद इब्न अब्दुल वहहाब'' नाम रखने पर मजबूर किया जिसका उस वक्त बहुत दुख हुआ फिर आखिर

किताब में एक इख्तितामी तब्सिरा था वह उन लोगों ने निकलवा दिया कि उसका लब व लहज़ा बहुत सख़्त है, इस मुल्क की फिज़ा इसकी, मुतहम्मिल नहीं है, मजबूरन वह भी निकाल दिया और सिर्फ चन्द सत्रों का इज़ाफा कर के ख़त्म कर दिया। जिस का मजीद सदमा हुआ।

इसके बाद रफ़्ता-रफ़्ता मेरी ज़हनियत खुद रवादाराना हो गयी जिसकी हिन्दुस्तान में सज़ा भुगतनी पड़ी।

इस किताब के मुसव्विदे के इब्तिदायी सफे पर मेरे इस वक़्त के इब्तिदायी उस्ताद असरे हाज़िर के मर्ज़े तक्लीद आयुतुल्ला अलहाज सैय्यद अबुलकासिम खोई दाम जिल्लहू ने जो उस वक़्त दर्स सतही के मुदर्रिस थे चन्द सतरे भी बतौर तकरीज़ लिखी थी, फिर छपने के बाद किताब अतराफ व अकनाफ में मुन्तशिर हो गयी, तो हिन्दुस्तान के बुजुर्ग मर्तबा आलम मौलाना सैय्यद जुहूर हुसैन साहब किबला ने एक अरबी तकरीज़ लिखकर भेजी और अहले सुन्नत के बुजुर्ग आलम और शेख़े तरीक़त मौलाना शाह मुहम्मद फुलवारवी ने नज़म और नसर अरबी में तकरीज़े भेजी और ज़बानी ऐसे अल्फाज़ फरमाये जो वालिद अल्लाम मुम्ताज़ुल उल्मा ताब सराह ने अपने इज़ाजे में जो मेरे लिए चन्द साल बाद लिखा था दर्ज फरमाये।

शाम के बुर्ज़ग मर्तबा आलम जनाब सैय्यद मोहसिन अमीन आलमी ताब सराह ने जो मशहूर बड़ी किताब ''आयानुशशिया'' के मुसन्निफ थे दो साल बाद एक ज़खीम किताब इस मौजू पर ''कश्फुलइरतियाबा'' तहरीर फरमाई तो मेरी इस किताब के दो सफे इस तरह अख़ज़ फरमाये जिसमे क़हरी तौर पर एक बड़े मसामहे की सूरत पैदा हो गयी और वह यह कि मैने ''तारीख़ नजद'' इब्न अलालूसी से वहाबी तहरीक के इब्तिदायी नशवोनुमा के हालात लिखे है, तो फुट नोट में लिख दिया है कि नकलनाहाबिमानहामिन तज़ाईफा तारीख़ नजद इब्न अल-अलूसी, इस का मतलब यह है कि इबारत तारीख़ नजद में किसी जगह नहीं है। मौसूफ ने इस नोट और इस मफ़्हूम पर तवज्जो नहीं फ़रमायी और इस इबारत को तारीख़े नजद इब्न

अल-आलालूसी के हवाले से दर्ज फरमा दिया। हाँलाकि वह इबारत मेरी है, इब्न आलासूसी की नहीं है। अब अगर कोई तलाश करे तो तारीख़े नजद में किसी जगह भी वह इबारत नहीं मिल सकती, जब यह किताब मेरी नज़र से गुज़री तो मैने एक ख़त के ज़रिए ममदूह को इस मसामहे की तरफ़ तवज्जो दिलायी, मुम्किन है नज़रे सानी में मौसूफ इस की इस्लाह फ़रमा देते मगर जहाँ तक मुझे इल्म है वह किताब दोबारा तबा नहीं हुई।

मेरी किताब ''कशफुन्नकाब'' चूँकि अल्लामा अवरदबादी के एहतमाम से छपी थी तो इस का मरकज़ तबाअत के बाद उन का मकान ही रहा, वहीं से फ़रोख़्त हुई और जो हज़रात उल्मा इरान वग़ैरह से आते थे उन्हें तोहफ़ा भी देते थे, हिन्दुस्तान में सिर्फ चन्द कापियाँ आयी थी जो मैने कुछ उल्मा‌ये आलम को तोहफा भेजी थी, मेरे पास सिर्फ एक कापी थी जो लखनऊ के फिरकावाराना फसाद के ज़ेल में जो चन्द साल कब्ल चेहल्लुम (20 सफ़र) के दिन हुआ था मेरे मकान और कुतुबख़ाने की आतिश ज़दगी में नेस्त व नाबूद हो गई।

अब हबीब मोहतरम जनाब जाफर अली असील साहब (बम्बई) ने जो उस की दोबारा तबाअत का ख़्याल ज़ाहिर किया और उर्दू में भी इस की इशाअत के लिये कहा तो मेरे लिये इसकी तामील मुमकिन न थी मगर मौसूफ ने खुद बम्बई में तलाश करके एक कापी दस्तयाब की और उस का अक़्स मेरे पास भेज दिया, ज़ाहिर है कि इसके बाद मुझ पर हुज्जत तमाम हो गयी जिसके बाद अगर मैं पहलु तही करूँ तो इस अम्रे ख़ैर के अन्जाम पाने में मेरी तकसीर सद्राह करार पाये लिहाज़ा बावजूद शदीद मवाने और मसरूफियतों के काफी ताख़रि के साथ सही, मैं इस मकसद के लिये ''कलम बानगश्त'' हो गया, और अब इतने अरसे में खुद हिन्दुस्तान में इस मौजू पर जो मजीद मवाद फराहम शुदह मेरे पास मौजूद था, उस में कुछ जो अरबी के लिये मौजू था उसका अस्ल अरबी में भी इज़ाफा कर दिया और जो हिन्दुस्तान ही के लिये मौजूँ है, उसे उस उर्दू किताब में शामिल कर रहा हूँ क्योंकि उन

शख्सियतों से जिन के तरावशात कलमी से काम लिया गया है। हिन्दुस्तान ही के इस्लामी हलके ही मतारुफ है। नेज़ जो मुकदमा लिखा जा रहा है उसके भी कुछ मज़ामीन मुसल्मानाने हिन्द से तअल्लुक रखते हैं लिहाज़ा उनको भी अरबी में शामिल नहीं किया गया। इस तरह मेरा अन्दाज़ा यह है कि उर्दू किताब का हजम अरबी वाली किताब से कुछ ज़्यादा होगा, इसलिए मजमूयी तौर पर उसे अरबी किताब ''कशफुन्नकाब'' का तर्जुमा नहीं कहा जा सकता, बल्कि इस के पूरे तर्जुमे पर मुशतमिल उर्दू में उसे एक मुस्तकिल तसनीफ की हैसियत हासिल है। वस्सलाम

अली नकी अल-नकवी
10 जीकादा 1404 हिजरी
(अलीगढ़)

खुलासा दिबाचा अरबी कशफुन्नकाब

बिस्मिल्लाहि-अररहमानिर्रहीम,

बाद हम्द खालिक़े मुताआल वस्सलातु वस्सलाम बर मोहम्मद व आल :

यह किताब ''कशफुन्नकाब'' अन अकायद इब्न अब्दुल वहाब अली नकी अल-नकवी के कलम से मारिजे जुहूर में आ रही है इस वक़्त जब तौफीक इलाही ने सरज़मीन नजफ अशरफ पर पहुँचने की सआदत अता फरमायी है बस सामान सफर मन्ज़िले कयाम पर उतारने के बाद जो अर्से से मेरे ज़हन में ख्याल था कि किताब ऐसी तहरीर हो जिस में वहाबी जमाअत के अकायद का ज़रा तफसील के साथ बयान हो। इसलिए कि बहुत से अफराद इस फिरके के अकायद से पूरे तौर पर वाकिफ नहीं है। चुनान्चे बहुत कम दिनों में इसकी तकमील हो गई और इस किताब को मैने एक मुकदमे और चन्द अबवाब पर तकसीम किया है -

मुकद्दमा :- तारीख़ इब्न अब्दुल वहाब और उनकी नशवोनुमा और तरक्की की कैफियत।

पहला बाब :- उनका अकीदा हज़रत अक़दसे इलाही के बाब में।

दूसरा बाब :- उनका अकीदा हज़रत पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम के बारे में।

तीसरा बाब :- उन का अ़क़ीदा औलिया व स्वालिहीन के बारे में।

चौथा बाब :- उन का अक़ीदा तमाम रूये ज़मीन के मुसलमानों के बारे में।

पाँचवाँ बाब :- उन का अक़ीदा अंम्बिया व स्वालिहीन के मज़ारात और कुब्बों के बारे में।

छठा बाब :- उन अहादीस व अख़बार में जो अहले नजद के बारे में रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही व सल्लम से वारिद हुए हैं।

सातवाँ बाब :- वहाबी जमाअत की इल्मी सरगरमियाँ इसके नुमायाँ होने के वक्त से ज़मानाये हॉल तक।

नोट :

इस उर्दू किताब में मज़कूरह अनादीन से पहले दो उनवान जिन्हें इस उर्दू किताब का मुकद्दमा समझना चाहिए शुरू में इज़ाफा किया जा रहा है।

1. मुसलमानों में ऊमूमन और शियों में खुसूसन हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के अन्दर लफ़्ज़ वहाबी की इस्तलाह।
2. हिन्दुस्तान में वहाबियत का फरोग और उसकी मुख़्तलिफ शक्लें।

मुसल्मानों में ऊमूमन और शियों में खुसूसन हमारे यहाँ की इस्तलाह

अस्ल ''वहाबी'' तो इब्न अब्दुल वह्हाब का पैरो, वही हिजाज़ का बरसरे इक़्तिदार गिरोह है जो नजद का बाशिन्दा है, और इस लिए उनका पाया तख़्त अब भी नजद के इलाके में शहर रियाज़ है, यह फ़िक़ा के लिहाज़ से हन्बली है यानी इमाम अहमद बिन हम्बल की फ़िक़ा के पैरो है और उसूल अकायद में उनके पेशरू इब्न तैमिया और उनका शार्गिद इब्न कैय्यिम और इब्न अब्दुल हाद वगैरह है।

इन्हीं इब्न तैमिया वगैरह के तसव्वुरात को मोहम्मद बिन अब्दुल वह्हाब ने अपनाकर चूँकि बारहवी सदी के अवाख़िर और तेरहवी सदी के आगाज़ में इलाका नजद के एक हिस्से के उस वक्त के सऊदी ख़ानदान के रास-दर-रईस मोहम्मद बिन सऊद की मदद से फैलाया जिसकी तारीख़ इस किताब के अरबी मुकद्दमे के तर्जुमे में बयान होगी, इसलिए अगर चेः उनके बाप अब्दुल वहाब उनके साथ मुत्तहद न थे बल्कि आख़िर में बाप-बेटे की मुख़ालिफत बहुत नुमाया हो गयी थी मगर वह मसलक बेटे के नाम पर नहीं बल्कि बेचारे बाप के नाम पर जो उसके ख़िलाफ थे मनसूब होकर ''वहाबी'' कहलाया।

और फिर चूँकि उनकी तालीम का अहम जुज़ दर्गाहों और रौज़ों पर हाज़री की मुख़ालिफ़त और अवलिया व मुकर्रबीन बारगाहे इलाही और बिल्खुसूस रसूल व आले रसूल स0 से तवस्सुल को शिर्क करार देना और नज़र व न्याज़ और फातिहा वगैरह से मुमानियत थी, लिहाज़ा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अन्दर अह्ले सुन्नत में यह इस्तलाह हो गयी कि बरेलवी हज़रात जो इन बातों के कायल है, वह अपने को ''सुन्नी'' कहते हैं और देवबन्दी हज़रात को जो अक़्सर इन चीज़ों के मुनकिर है ''वहाबी'' कहते हैं।

चुःनान्चा कुछ बरेलवी मुकर्ररीन और बाज़ साहबे कलम भी जब देवबन्दी हज़रात का ज़िक्र करते हैं तो मसलन यूँ कहते हैं कि मौलवी नम्बर 24 ने यूँ कहा चूँकि ''वहाबी'' के अद्द चौबीस हैं।

हिन्दुस्तान के शियों का यह मुहावरा हो गया है कि वह अह्ले सुन्नत के इस तबके को जो इन बातों का कायल है और अक़्सर शियों के साथ रवादारी का बर्ताव करते हैं या अज़ादारी वगैरह में शरीक होते हैं 'हनफी' कहते हैं, और इन उमूर के मुनकरीन और बिल्खुसूस अज़ादारी इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ अफराद को वहाबी कहते हैं, हालाँकि वाक्या यह है कि देवबन्दी हज़रात मसलक फिकही के हिसाब से हनफी हैं, वहाबियों के हम मसलक यानी हम्बली नहीं है और शियों के इस्तलाह में 'वहाबी' सुन्नियों की जो सब से बड़ी मिसाल हो सकती है मसलन मौलवी अब्दुर शकूर साहब अपने वक़्त के मुदीरुन्नज़म वह भी मसलकन हनफी थे वहाबियों की तरह हन्बली नहीं थे।

हमारी इस किताब का नाम जो ''रद्दे वहाबिया'' है इसमें हमारा नसबुल ऐन उसी ख़ास गिरोह की रद् है, जो इब्न अब्दुल वहाब का पैरू है, लेकिन बहैसियत मौजू जबकि तवस्सुल वगैरह मुबाहस पर फैस्लाकुन बहस की जायेगी तो जो उन लोगों के इन तसव्वुरात में हम मसलक हों सब की रद हो जायेगी चाहे वह किसी भी माने में 'वहाबी' करार पाते हो या नहीं।

हिन्दुस्तान में वहाबियत की दर आमद और उसका इरतका

जहाँ तक हमे मालूम है हिन्दुस्तान में वहाबी तसव्वुरात की दर आमद जनाब शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी के ज़रिये से हुई वह चाहे कुल्लियतन इन अकायद के अलम्बरदार न हो जिसकी तायीद इस से होती है कि वह खुद तसव्वुफ़ के कायल हैं। बल्कि उनका मशायख़ सूफी में शुमार है और उनके साहबजादगान जनाब शाह अब्दुल अज़ीज़ देहलवी मुसन्निफ तोहफये इस्ना अशरया वगैरह इस बाब में नुमाया नहीं हुए, मगर उनके बाद शाह इस्माईल जिनके नाम के साथ उमूमन ''शहीद'' की लफ़्ज़ इस्तेमाल होती है इस मसलक के बड़े अलम्बरदार बन गये, और इस जमाअत के सरगरदा सैय्यद अहमद हुए कि उनके नाम का भी तकरीबन जुज़ लफ़्ज़ ''शहीद'' है।

उलमाये देवबन्द अगर चेः जैसा कि पहले आ चुका हनफी है और तसव्वुफ़ के भी कायल है और इसके सिलसिलों में मुनसलिक हैं, मगर उनके इल्मी हैसियत से मूरिसे आला मौलाना मोहम्मद कासिम नानोतवी के यहाँ इस किस्म के तसव्वुरात इतनी शिद्दत के साथ हैं कि उनके अलफाज़ से शान रिसालत माआब स0 में गुस्ताख़ी के पहलू पैदा होते हैं, बहरहाल ये लोग बिल्कुल वहाबी हो या न हो मगर इनसे वहाबियत को तक़वीयत ज़रूर हुई।

बाज़ अफराद जिन में मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद पेश-पेश है जो यकीनन वहाबी मसलक के पैरो नहीं थे, और न तंग नज़री व असबियत का शिकार थे यहाँ तक कि इम्तियाज़ी नज़रिया ''तर्बरा'' की हिमायत में ''तवल्ला व तबर्रा'' ही सुर्खी से वह एक ऐसे मज़मून के ख़ालिक है जिसे, इमामिया मिशन लखनऊ ने ख़िलाफत व इमामत के किसी हिस्से का जुज़ बनाकर शाय किया इस मज़मून में खुसूसियत के साथ चन्द अल्फाज़ तो इतने मानीखेज़ और दिल आवेज़ हैं कि हिफ़्ज़ करने के काबिल हैं, वह यह है, ''अगर हम यह उसूल बना लें कि बुरो को भी अच्छा कहेंगे तो जो वाकई अच्छे

हैं उनके लिए हमारे पास क्या रह जायेगा ?''

मगर इल्मी तौर पर वह शेख़ इब्न तैमिया के ऐसे मद्दाह है जैसे वह उनकी जलालते इल्मी से इन्तिहायी मरऊब व मुतासिर हैं, उनके बाद से जैसे सवाद आज़म के सहिबे कलम अफराद की वज़ा बन गयी है कि वह इब्न तैमिया की तारीफ़ ज़रूर करें जो बज़ाहिर तकलीदी हैसियत रखती है, यानी उन लोगों ने जनाब इब्न तैमिया की तसानीफ की सूरत भी नहीं देखी है। बहरहाल इस से भी बिल्वास्ता वहाबी ख़्यालात को तकवीयत हासिल होती है, और अब सऊदी हुकूमत अगर बैनलअकवामी दबाव से मज़हबी तौर पर बहुत हद तक ''तक़य्या'' में है, और यह ''तक़य्या'' शुरू ही से ''कुब्बऐ नबवी'' की बका में तो रहा ही है जो कि उनके नुक्तये नज़र से (मआज़ अल्लाह) ''सनमेअकबर'' होने की वजह से ज़्यादा मुस्तहिक इन्हिदाम था। इसके अलावा मुसलमानाने आलम यहाँ तक कि हम शियों को हज से नहीं रोकते, बल्कि बहुत हद तक सहूलते फराहम करते हैं, जब कि उनके मज़हब की रू से उन सबका मुशरिकीन में दाख़िल होने की बिना पर मस्जिदे हराम के करीब जाना नजायज़ है, मगर इन बातों में तशद्दुद के कम होने के बावजूद अब उनकी दौलत जो तेल की बदौलत इन्तिहायी अफरात से हासिल हो गयी है ममालिके इस्लामिया में वहाबियत की तबलीग पर शिद्दत के साथ सर्फ हो रही है जिससे ज़हनी तौर पर शियों को तो बस अज़ीयत हो सकती है मगर उनका असर मोअतक़िदात के लिहाज़ से अह्ले सुन्नत की अक़सरियत पर पड़ना न गुज़ीर है।

मुक़द्दमा

इब्न अब्दुल वहाब की तारीख़ ज़िन्दगी और नशवोनुमा की कैफियत

इब्न अब्दुल वहाब का नाम व नसब मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब बिन सुलेमान तैमी है। उनकी नशवोनुमा इलाकाये नजद के शहर ऐनिया में हुई और उन्होंने हंबली फ़िक़ा अपने वालिद से पढ़ी और ज़मानये सिग़र सिनी ही से वह मिल्लत इस्लामिया के आम रुजहान के ख़िलाफ बाते कहने लगे और बहुत सी बातों पर जो मुसलमानों में रायज थीं एतराज़ करने लगे मगर अर्से तक उन्हें कोई हम नवा नहीं मिला उसके बाद उन्होंने मक्का-ऐ-मुअज़्ज़मा का सफर किया और फिर मदीना-ऐ-मुनव्वरा गये, और शेख़ अब्दुल्ला बिन इबराहीम बिन सैफ के शार्गिद हो गये और वहाँ उन्होंने रौज़ाए रसूल स0 पर दुआएँ करने पर शिद्दत से बर्हमी का इज़हार किया फिर नजद गये वहाँ से शाम के इरादे से बसरा गये और यहाँ शेख मोहम्मद मजमूयी से दर्स लिया, और अब बसरा के मुसलमानों की बातों पर एतराज़ करने लगे। तो वहाँ के मुसलमान बरअफ़रोख़ता हो गये यहाँ तक कि उन्हें बसूरते फ़रार वहाँ से निकलना पड़ा बिल आख़िर वह नजद के शहर हरीमा पहुँचे जहाँ उनके वालिद का क़याम था और अर्से तक उनसे तालीम हासिल करते रहे मगर यहाँ उन्होंने अहले नजद के अक्सर अफआल व आमाल पर ''शिर्क-शिर्क'' की आवाज़े बुलन्द की, और उनके वालिद ने उनको इससे मना किया तो वह उनकी बात भी मानने के लिए तैयार नहीं हुए बल्कि उनसे बरसरे जंग हो गये और कुछ लोग उनकी पार्टी में शामिल हो गये जिससे उनमें और अह्ले हरीमा में जंग व जिदाल की नौबत आयी। अब उनके वालिद शेख अब्दुल वहाब का 1153 हिजरी में इन्तिकाल हो गया तो उन्होंने और ज़्यादा शिद्दत के साथ अपने अकायद का ऐलान शुरू कर दिया जिसके बाद अहल हरीमा उनके कत्ल पर तैयार हो गये तो वहाँ से अनीया की तरफ मुन्तकिल हो गये, यहाँ का हाकिम उस ज़माने में उस्मान बिन मोहम्मद बिन मामर था जिसे इब्न

अब्दुल वहाब ने वह सब्ज़ बाग दिखाया कि वह अगर उनका साथ दे तो तमाम नजद का हुकमरां हो जायेगा उसने उनकी मदद का बेड़ा उठाया और अब उस मादद्दी ताकत का सहारा लेकर उन्होंने ज़ोर व शोर के साथ अपनी तबलीग जारी कर दी और जब अनीया के काफी आदमी उनके साथ हो गये तो उन्होंने ज़ैद बिन ख़त्ताब के मज़ार का कुब्बा जो इस नवाह में था मुहंदिम करा दिया मगर यह ख़बर अहसा और कतीफ के हुकमरा सुलेमान इब्न मोहम्मद बिन अज़ीज़ हमीदी को पहुँची तो उन्होंने बड़ा सख़्त नाराज़गी का ख़त अनीया के हाकिम उस्मान के पास भेजा कि उस शख़्स को कत्ल करा दो उस्मान को इब्न अब्दुल वहाब से गिरवीदगी तो थी मगर सुलेमान वाली अहसा के मुख़ालिफत की ताव न थी, इसलिए उसने खुफिया तरीके पर इब्न अब्दुल वहाब के पास पैगाम भिजवाया कि आप फौरन यहाँ से चले जाइये उन्होंने उसे बहुत पामर्दी की दावत दी और पूरे नजद का हुकमरा बनने की उम्मीदें दिलायी मगर वह उनके कहने में नहीं आये और सख़्ती के साथ फौरन चले जाने की ताकीद की, मजबूरन 1160 हिजरी में वह वहाँ से निकल कर दरयिया पहुँचे, यह सरज़मीन हमेशा से शैतानी तहरीकों का मरकज़ बनी रही थे, ये वही यमामा की सरज़मी है जहाँ से मुसलमा कज्ज़ाब उठा था और उसने नबूवत का दावा किया था, यहाँ का हुकमरा मौजूदा सऊदी हुकूमत का मोरसे आला कबीलये अनीज़ा में से मोहम्मद बिन सऊद था।

इब्न अब्दुल वहाब ने किसी ज़रिये से उसकी बीवी से राब्ता कायम किया और उसे तमाम नजद की हुक़्मरानी का ख़्वाब दिखाया, यह मोहम्मद बिन सऊद उनकी बातों में आ गया और तन-मन-धन से उसका साथ देने पर आमादा हो गया और मुसलमानों को मुशरिक क़रार देकर बनाम ''जिहाद'' उनके जान व माल और इज़्ज़त के अतलाफ के लिए इब्न अब्दुलवहाब के हाथ पर बैअत कर ली। मोहम्मद बिन सऊद से अहद व पैमान की तकमील के बाद मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब शहर के अन्दर दाख़िल हुए और इब्न सऊद ने एक बहुत बड़ा लश्कर मुर्तब करके अतराफ व जवानिब के मज़ारात को मुनहदिम करने और जो मुसलमान सद्देराह हो उनका खून बहाने के

लिए भेज दिया जिन्होंने पूरी तौर पर इस हुक्म की तामील की और क़त्ल व ग़ारत का बाज़ार शिद्दत के साथ गरम कर दिया।

जब यहाँ पूरी कामयाबी हासिल हो गयी तो अतराफ व जवानिब के हुक्काम के पास अताअत व इनकियाद के लिए खुतूत लिखे जिनमें से बाज़ ने मरऊब होकर ब-आसानी इताअ़त कुबूल कर ली और जिन्होंने तवज्जोह नहीं की, दरईया के लोगों को उनसे जंग करने पर मामूर किया गया चुनान्चे अतराफ नजद और उसके आगे बढ़ कर अहसा में खूनरेज़ मअर्के हुए जिनके बाद पूरी नजद और उसके तमाम कबीलों पर क़हर व ग़ल्बे के साथ आले सऊद की हुक्मरानी हो गयी, यहाँ तक कि 1206 हिजरी में मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने अपनी जान जाने आफरी के सुपुर्द की मगर आले सऊद नस्ल दर नस्ल उस मसलक की इशाअत में असकरी ताकत के साथ मसरूफ रही।

चुनान्चे मोहम्मद बिन सऊद के बाद उसका बेटा अब्दुल अज़ीज़ हुआ यह भी अतराफ व जवानिव में फौजी मुहिमे भेजता रहा और अब्दुल अज़ीज़ के बाद सऊद हुआ, यह अपने बाप से ज़्यादा सख़्त था, उसने मुसलमानों को हज से रोक दिया और सुल्तान तुर्की के ख़िलाफ खुरूज किया मगर उसके बाद सरगरमियाँ ज़्यादातर इलाका नजद में महदूद थी, यहाँ तक की जब जंगे अज़ीम में हुकूमत तुर्की जर्मनी का साथ देने की वजह से अंग्रेज़ों के गैज़ व गज़ब का शिकार बनी और जर्मनी की शिकस्त से कमज़ोर भी हो गयी तो पहले अंग्रेज़ों ने शरीफ मक्का हुकूमत तुर्की के खिलाफ़ खुद-मुखतारी का अलम बलन्द कराया फिर शरीफे मक्का से नाराज़ होकर उस वक़्त के सऊदी हुक्मराँ से जिसका नाम भी अब्दुल अज़ीज़ था मक्का पर हमला कराके शरीफ मक़्का को जज़ीरह कबरस में ले जाकर नज़रबन्द कर दिया और हिजाज पर भी आले सऊद का कब्ज़ा करा दिया जिसके बाद से अब तक सऊदी हुक्मरानों का दारूल सल्तनत अगर चः नजद में है मगर वह मक़्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा समेत तमाम हिजाज के हुकमराँ हैं।

पहला बॉब

मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब का अकीदा जनाब बारी अज्जा इसमा के बॉब में।

सब को मालूम है कि वहाबी हज़रात ऊमूमन अपने पेशवा की पैरवी में खालिस तौहीद के दावेदार हैं और अपने सिवा तमाम मुसलमानों को मुशरिक समझते हैं। लेकिन जब खुद इब्न अब्दुल वहाब की किताबों पर नज़र डाली जाती है तो पता चलता है कि यह शख्स ख़ालिक मुताआल के बारे में अपने पेशरव इब्ने तैमिया की पैरवी में ऐसा अक़ीदा रखता है जिससे ख़ालिक का जलाल व कमाल मजरूह होता है और उसकी यकताई जो तौहीद हकीकी का तकाज़ा है, मजरूह हो जाती है। वह इस तरह की कुर्आन मजीद के वह आयात जिनके बाज़ अल्फाज़ अपने ज़ाहिरी एक लुगवी माने के लिहाज़ से जिस्मिय्यत का तसव्वुर पैदा करते हैं, जैसे :- यदाहुमबसुततान'' जिसके एक लफ़्ज़ी माने यह हैं कि उसके दोनों हाथ खुले हुए हैं, और ''अला अर्शीसतवा'' जिसका एक मफहूम यह है कि वह अर्श पर सीधा हो के बैठा। इनमें उलमाये हक का मसलक यह है कि चूँकि उनका यह मफहूम शाने इलाही के ख़िलाफ और अक़्लन उसके लिए गैर मुमकिन है इसलिए उनका ऐसा मफहूम समझना चाहिए जिसका महावरात अरबी के लिहाज़ से उन अल्फाज़ में गुंजाइश भी है, और वह शाने इलाही के खिलाफ भी नहीं जैसे यद के माने कुदरत और इस्तवा के माने गलबा व इक्तिदार, मगर इब्न तैमिया और उनके पैरो जिन के पेशरू अब आख़िर में यही शेख इब्न अब्दुल वहाब हुए उन सब अल्फाज़ को उनके ज़ाहिरी लुगवी माने पर मुहम्मिल करते हैं, और उनमें से किसी में भी तावील के मुख़ालिफ है इस तरह उनका तसव्वुर यह है कि वह वाकई अर्श पर बैठा है उसके हाथ है, पैर है, पहलू है, आँखें है, चेहरा

है, ज़बान है, नफस है और यह सब चीज़े हकीकतन, वह आवाज़ के साथ बात करता है और चढ़ता, उतरता, आता, जाता, हँसता, रोता है।

यह बिल्कुल वह तजसीम है जिसके कुफ्र होने पर उम्मतुल मुस्लिमीन मुत्तफ़िक़ हैं, मगर उन उलमाये वहाबिया की किताबें इन बातों से भरी पड़ी हैं, चुनान्चे, खुद इब्न अब्दुल वहाब की एक किताब है, ''अत्तौहीदी अल्लज़ी हुअल हक्कुल्लाही अलल बईद'' इसमें इस आयत कुर्आन के ज़ैल मे किः हत्ता इज़ाफुज्जिआ अन कुलूबिहिम कालूमाजा काल बुकुम कालुल हक वहुवल अलियुल कबीर'' लिखा है (सूरऐ हसबा आयत-23)

''बीसवी बात :- सफात (यानी ज़बान, दहन और अल्फाज़ के साथ कलाम वगैरह) का सुबूत है, फिर्का अशाइरह (मुसल्मानों की अक्सरीयत) जो तातील (यानी उस तरह के सिफात की नफी) का कायल है, इसके ख़िलाफ है'' शरह ने इसके जेली हाशिये (फुट नोट) में लिखा है।

''यह अशारिया फिर्का अबुलहसन अशअरी की तरफ मनसूब है और इस फिर्के ने अक़्सर सिफात का इंकार किया है जैसे अल्लाह का ऊँचा होना और तमाम अपने मख़लूक से अलग होकर अर्श पर बैठना और उसका मोहब्बत करना अपने बंदो से और उसका रहम उन पर और उसकी रज़ामन्दी उनसे और उसका गज़ब वगैरह वगैरह, मुख़ालिफत में इसकी जो उन चीज़ों के बारे में रसूले खुदा और उनके असहाब और दीगर असलाफ सालिहीन से वारिद हुआ है।''

इसके बाद आख़िर किताब में एक बाब है इस मतलब पर उन अहादीस से इस्तदलाल के लिए जिनसे उनके मसलक की मुवाफिकत समझ में आती है चुनान्चे लिखा है-

''यह बाब उन अहादीस में है जो इस इरशादे इलाही के मुताअल्लिक है कि उन्होने अल्लाह की असल शान को नहीं समझा है और तमाम ज़मीन उसकी मुठ्ठी में होगी कयामत के दिन''

इब्न मसऊद की रिवायत है कि एक यहूदी आलिम रसूले खुदा के

पास आया और कहा ''ऐ मोहम्मद, हम (अपनी किताबों में) ऐसा पाते हैं कि अल्लाह तमाम आसमानों को एक उँगली में लेगा और ज़मीनों को एक उँगली में और दरख़्तों को एक उँगली में और पानी को एक उँगली में और ज़मीन को एक उँगली में और बाकी तमाम मख़लूक को एक उँगली और उन सब को इस तरह लेकर कहेगा मैं अस्ल बादशाह हूँ''

इस पर पैगम्बर स0 हँसने लगे ऐसा की दाढ़े तक आपकी नमूदार हो गयीं, इस यहूदी आलिम की बात की तसदीक के तौर पर फिर आपने यह आयत पढ़ी! (वमा कदरूल्लाहा हक्का कदरिही वल अर्जू जमीअन कबजतुहू यौमल कयामत) (ता आखिर आयत) सूरऐ रम्ज़ (आयत-67)
मुसलिम की एक रिवायत में यह है कि पहाड़ और दरख़त एक उँगली में फिर वह उन सब को जुम्बिश देकर कहेगा मैं बादशाह हूँ, मैं अल्लाह हूँ।

बुख़ारी की एक रिवायत में है कि आसमानों को एक उँगली पर, पानी और ज़मीन को एक उँगली पर और दीगर तमाम मख़लूक को एक उँगली पर उसे दोनों (बुख़ारी व मुसलिम) ने दर्ज किया है और मुस्लिम की रिवायत इब्न उमर से है कि अल्लाह आसमानों को रोज़े कयामत लपेट देगा फिर उन्हें अपने बाँये हाथ में लेगा फिर वही कहेगा मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं सरकश लोग? कहाँ है अपनी बड़ाई ज़ाहिर करने वाले? और इब्न अब्बास से रवायत है कि सातों आसमान और सातों ज़मीने खुदा की हथेली पर ऐसी होगी जैसे राई का दाना तुम में से किसी के हाथ में और

इब्न ज़रीर का बयान है कि मुझ से यूनुस बिन वहीब ने बयान किया वह कहते हैं कि अबु ज़ैद ने कहा कि मुझ से मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि रसूले खुदा ने फरमाया कि सातों आसमान कुसी में बस ऐसे हैं जैसे सात दिरहम (चाँदी के सिक्के) किसी सपर (ढ़ाल) में और अबु ज़ैद ने यह भी कहा कि मैने पैगम्बर खुदा को फरमाते सुना कि कुर्सी अर्श के अन्दर

नोट : ज़मीने तो एक उँगली में आ चुकी हैं, अब मालूम नहीं यह कैसी ज़मीन है जो एक और उँगली में है ?

ऐसी है जैसे लोहे का छल्ला एक बड़े जंगल की पुश्त पर लुढ़क रहा हो और इब्न मसऊद से रिवायत है कि आसमान दुनिया और उससे मिले हुए आसमान के दरमियान पाँच सौ बरस की राह है और इसी तरह पर आसमान का फासला पाँच सौ बरस की राह का है, और फिर सातवे आसमान और कुर्सी के दरमियान पाँच सौ बरस की राह और कुर्सी और पानी के दरमियान पाँच सौ बरस की राह और अर्शपानी के ऊपर है और अल्लाह अर्श पर है। फिर भी तुम्हारे आमाल में से कुछ उस पर पोशीदा नहीं रहता इसकी इब्न मेहंदी ने रवायत की है हिमाद बिन मुस्लिमा से उन्होंने आसिम से उन्होने ज़र से उन्होने अब्दुल्ला बिन मसऊद से और इसी से मिलती जुलती रवायत की है मसऊद ने आसिम से उन्होने अबु वायल से उन्होने अब्दुल्ला से हाफिज़ ज़हबी ने कहा है कि यह हदीस कई तरीके से वारिद हुई है। और अब्बास बिन अब्दुल मुम्तलिब रजी0 से रवायत है कि रसूले खुदा ने फरमाया :-

तुम जानते हो आसमान और ज़मीन के दरमियान कितना फासला है, लोगो ने कहा कि अल्लाह और उसका पैगम्बर ज़्यादा वाकिफ है, फरमाया उनके दरमियान पाँच सौ बरस की राह है और हर आसमान का दूसरे आसमान से फासला पाँच सौ बरस का है, और हर आसमान की जख़ामत पाँच सौ बरस की राह के बराबर है और साँतवे आसमान और अर्श के दरमियान एक समुन्दर है उसके नीचे और ऊपर की सतह के दरमियान वैसा ही फासला है जैसा आसमान और ज़मीन के दरमियान है और अल्लाह ताला उसके ऊपर है, और फिर भी उस पर आदमियों के आमाल में कोई बात पोशीदा नहीं रहती है।

इसकी अबु दाऊद ने तखरीज़ की है और इस में चन्द मसले हैं :-

पहले इस आयत की तफसीर की :- ''वल अर्ज़ जमीअन कबज़तन यौमल कियामा'' जमीन सब उसकी मुठ्ठी में होगी कयामत के दिन।

दूसरे ये कि ये और ऐसे ही मालूमात उन यहूदियों के पास बाकी थे जो हज़रत स0 के ज़माने में थे न उन्होंने उन्हे गलत समझा था और न उनकी

तावील की थी।

तीसरे ये कि उस यहूदी आलिम ने जब पैगम्बर स0 के सामने उसका ज़िक्र किया तो आपने उसकी तस़दीक फरमायी और कुर्आनी आयत उसकी मुताबिकत में नाज़िल हुई।

चौथे यहूदी आलिम के इस बड़े इल्म को बयान करने के बाद पैगम्बर खुदा स0 का हँसना।

पाँचवे सराहत दोनों हाथों की और ये की आसमान दाहिने हाथ में होगे और ज़मीने बायें हाथ में।

महमूद शकरी आलूसी जो खुद वहाबी मसलक थे ''तारीख़ नजद'' में दीन अहले नजद और उनके अफआल व आमाल के ज़ेल में लिखा है कि वह सफात (यानी हाथ, मूँह वगैरह) वाले आयात और अहादीस को उनके ज़ाहिरी मफहूम पर बरकरार रखते हैं और उनके मतलब को अल्लाह के हवाले करते हैं।

लेकिन अगर वह मतलब को अल्लाह के हवाले करते तो उनके ज़ाहिरी मफहूम पर बरकरार रहने का फैसला न करते।

गौर करने के बाद हर साहबे वसीरत शख़्स महसूस कर सकता है कि उन अल्फाज़ को ज़ाहिरी मफहूम पर महमूल करना इस्लामी तालीम से मुताबिकत नहीं रखता इसलिए की इससे ख़ालिक़े मुताआल की जिस्मियत लाज़िम आती है और मुजस्समा के कुफर पर तमाम मुसलमान मुत्तफिक है इसलिए कि वह उसूले तौहीद के ख़िलाफ है, इमामुल इलाहीन हज़रत अली बिन अबी तालिब अलैहिस्सलाम नहज अलबलागा के पहले ही खुत्बे में फरमाते हैं।

तौहीद का मुकम्मल होना यह है कि उससे सिफात की नफी की जाय इसलिए की हर मौसूफ इसका गवाह है कि वह सिफत के अलावा कुछ है और हर सिफत उसकी गवाह है कि वह मौसूफ के अलावा कुछ है तो जिसने उसके अवसाफ माने उसने उसे एक से ज़्यादा मान लिया और जिसने उसे एक से ज़्यादा माना उसने उसके अज़ज़ा मान लिए''

ज़ाहिर है कि अगर ख़ालिक के लिए अज़ज़ा मान लिए जायें तो वह अज़ज़ा या वाजिबुल वजूद और कदीम होंगे, या हादिस, अगर हादिस हों तो ख़ालिक की ज़ात हादिस हो जायेगी, इसलिए की हादिस चीज़ों से मुरक्कब चीज़ लाज़मन हादिस होगी और अगर वाजिबुल वजूद माने तो वाजिबुल वजूद और कदीम बिज़्ज़ात होने में खालिक के हमसर दूसरे हो जायेगे, जो शिर्क है। इसके अलावा वाजिबुल वजूद का होना आलात और अजज़ा की तरफ लाज़िम आयेगा और मोहताज होने का लाज़मा हुदूस व इमकान है।

रह गये वह आयात व अहादीस जिनसे इस गलत अक़ीदे पर इस्तदलाल किया जाता है तो ज़ाहिर है कि हर ज़बान में और बिल्खुसूस अरबी में एक-एक लफ़्ज़ के कई-कई मायने होते हैं, लिहाज़ा हर लफ़्ज़ के वह मायने करार दिये जाना चाहिए जो अक़्ल व नक़्ल के लिहाज़ से सही करार पाते हो मसलन**!** इस्तवा की लफ़्ज़ का एक सतही मफहूम सीधे बैठने का है लेकिन नहल के लिहाज़ से उस का बिल्कुल दुरूस्त मफ़हूम कुदरत व गलबे के साथ कायम व बरकरार होना है जो बिल्कुल उसूल मुहावरा के मुताबिक है, और शायानशाने इलाही इसी तरह 'वजहु' के माने वह आसारे कुदरत है जो मारिफते इलाही का ज़रिया होते है, जिस की नज़ीरें कलामे अरब में बकसरत है। यूँही यद के माने तसल्लुत व अख़्तियारे कामिल के हैं।

वह यहूदी आलिम वाली रवायत जो बयान की गयी है दर हकीकत इस अकीदे के गलत होने की दलील है उस रवायत में यहूदी के कौल पर हज़रत स0 के हँसने के साथ यह जुमला हलांकि ''उस यहूदी की बात की तसदीक के तौर पर'' यह न कोई रसूल स0 का कौल है, न अमल जिसे जुज़े हदीस समझा जाए बल्कि यह इस रवायत के बयान करने वाले का तसव्वुर है जो उसकी नाफहमी की दलील है, करीने अक़्ल यह है कि हज़रत स0 इस यहूदी की हिमाकत पर इतनी शिद्दत के साथ हँसे और यह आयत उसकी रद में पढ़ी कि उन्होंने अल्लाह को उस की हकीकी शान के साथ नहीं समझा, कायनात सब रोज़े कयामत उसके कब्ज़ये कुदरत में होगी, न यह की

कायनात की एक-एक चीज़ को वह अपनी एक-एक उँगली पर लेकर उसे हरकत देने का करतब दिखाए।

इस ख्याल और इसके अलावा दूसरे ख्यालात में जिनका बाद में ज़िक्र आयेगा, इब्न अब्दुल वहाब के मुक्तदा अबुल अब्बास अहमद बिन तैमिया हर्रानी मुतूफ़ी 28 हि0 है जिन्होंने सबसे पहले उन बातों पर ज़ोर दिया और इस बारे में मुस्तकिल रिसाले लिखे, जैसे अकीदये हमूबिया और वासतिया वगैरह और उनके शागिर्द इब्न कैय्यिम जोज़िया और इब्न अब्दुल हाद वगैरह उनके कदम बकदम चले, उल्माये इस्लाम ने इनके कुफर का फतवा सादिर किया और बाज़ ने उनके जवाज़ कत्ल का हुक्म दिया ताहम वह एक तवील मुद्दत तक कैद रहे।

इस महल पर ज़रूरत महसूस होती है कि इब्न तैमिया के बारे में जो वहाबी अक़ायद के बानी मुबानी है उल्माये इस्लाम के तसरीहात दर्ज किये जाये जिन से पता चले कि जब पेशवा की हैसियत यह है तो पैरवों की हैसियत क्या हो सकती है?

अल्लामा इब्न हज़र मक्की ने अपनी किताब ''जौहरे मन्जम की ज़्यारते कबरूननबीयिल मुकर्रम'' में लिखा है कि :

इब्न तैमिया की लगज़िश ऐसी है जिसका तदारूक नहीं हो सकता और ऐसी मुसीबत है कि जिसका वबाल-जवाल पजीर नहीं, इस शख़्स को नफसानी ख़्वाहिश ने आमादा किया कि वह अलमे इजतिहाद बुलन्द करके तमाम उल्माये सल्फ के ख़िलाफ बहुत से मसायल में उनके इजमा की मुख़ालिफत करे और पेशवयाने दीन यहाँ तक खुलफाये राशदीन पर रकीक एतराज़ात करे, यहाँ तक कि बारगाहे इलाही में भी गुस्ताखियाँ करे, इसने खुदा की शान, जलाल व जबरूत को सदमा पहुँचाया कि अवाम के सामने बालाये मिनबर साफ-साफ उसके जिस्म होने और सिम्ते ख़ास में होने का ऐलान किया और जो इसका इनकार करे 'उसे गुमराह करार दिया, यहाँ तक कि तमाम उल्माये ज़माना ने मुत्तफिक होकर बादशाह वक़्त को उसके कत्ल

या क़ैद करने पर मजबूर किया चुःनान्चा उसने आख़िर उम्र तक कैद हस्ती से रिहा होने तक उसे कैद रखा और उसके बाद यह आग ज़रा खामोश हुई और अंधेरे छट गये मगर फिर कुछ उसके हामी वक्तन फ-वक्तन पैदा होते रहे लेकिन उन्हे कोई ताकत हासिल नही हुई बल्कि हमेशा जलील व रुसवा और गज़ब इलाही में गिरफ़्तार रहे।''

उन्होंने अपनी दूसरी किताब ''अशरफुल वसायल इला फहमीश शमायल'' में लिखा है अमामे को दोनों कान्धों के बीच लटकाने के बारे में कि इब्न कैय्यिम ने अपने उस्ताद इब्न तैमिया के लिए कहा है कि उन्होंने एक नादिर बात कही है और वह यह कि जब आंहज़रत स0 ने अपने परवरदिगार को अपना हाथ उनके कांधों के बीच में रखे हुए देखा तो उस जगह को यह इम्तियाज़ अता किया, इराकी ने कहा कि हमें इसकी कोई अस्ल नहीं मिली, मैं कहता हूँ कि यह इन दोनों (इब्न तैमिया और इब्न कैय्यिम) के दूसरे ख़्यालात की तरह की चीज़ है जो मबनी है उस तसव्वुर पर जो उनका है, और जिसके साबित करने में उन्होंने बहुत तूल कलाम से काम लिया है, और अह्ले सुन्नत पर तान व तशनीय की है कि वह इसके मुनकर हैं और अल्लाह के लिए जिहत और जिस्म का तजवीज़ करना है।

(बाला तर है उसकी ज़ात उन ज़ालिमों के ख्यालात से) और उनके यहाँ इस मकाम पर इतनी खराब और बद ऐतकादी की बातें हैं, जिनसे कानों को अज़ियत होती है और फैसला यही होता है कि यह गलत, झूठ, गुमराही और बुहतान की बाते हैं। अल्लाह उनका बुरा करे और बुरा उसका जो उनके अकवाल का मोतकिद हो और इमाम अहमद बिन हंबल और उनके मसलक के बुज़ुर्ग मरतबा उलमा इस बुराई के दाग से बरी है और क्यूँ कर ऐसा न हो कि यह बहुत सों के नज़दीक कुफ्र है।''

यह जुज़ गैर यकीनी है इसलिए कि मैं बाद में एक दूसरे मुसन्निफ का ब्यान आयेगा कि दोबारा वह रिहा हुए और बाद में जान बहक तस्लीम हुए।

हमारे लखनऊ के मौलाना अब्दुल हलीम फिरंगी महली ''हल्ललमआकिद हाशिया शरहा अकाएद'' लिखते हैं कि :।

''तकीयुद्दीन इब्न तैमिया हंबली शख़्स था मगर वह हद से आगे बढ़ गया हौर ऐसी बातों के साबित करने का दर पे हुआ जो अज़मत व जलाल खुदा वन्द आलम के ख़िलाफ है कि उसके लिए सिम्त जिहत और जिस्म मान लिया और बहुत से उस शख़्स के हफवात है मसलन हज़रत उस्मान के लिए कहा कि वह माल से मुहब्बत रखते थे और हज़रत अली के लिए कहा कि उनका इमान दुरूस्त न था, इसलिए कि बचपन में इमान लाये थे और अहले बैत पैगम्बर स0 के लिए ऐसी बातें कही जो कोई मोमिन ज़बान पर नहीं ला सकता। हाँलांकि सही अहादीस उनके मुनाकिब में कुतुब सहाह में वारिद हुए हैं और एक जलसा किलाये जबील में हुआ और वहाँ अकाबिर उल्मा उस वक्त के जमा हुए जिनके रास व रईस काजीइल कुजा जैनुद्दीन मालकी थे, और वहाँ इब्न तैमिया को भी हाज़िर किया गया और तूलानी गुफ्तगू के बाद काजील कुजात ने उसे कैद करने का हुक्म दिया और यह 705 हिजरी का वाक्या है। फिर दमिश्क वगैरा में ऐलान हुआ कि जो शख़्स इब्न तैमिया के अकीदे पर हुआ उसका जान व माल हलाल है और उसका ज़िक्र मरातल जिनांयाफयी में मौजूद है, फिर उसने तौबा की और 707 हिजरी में कैद से रिहायी पायी और कहा मैं ''अशअरी'' मसलक का पाबन्द रहूँगा फिर उस अहद को तोड़ा और अपने अकायद का इज़हार किया तो दोबारा कैद सख़्त की सज़ा हुई फिर तौबा की और कैद से रिहाई हुई और शाम में कयाम किया वहाँ बहुत से वाक्यात इस सिलसिले में पेश हुए जो कुतूबे तारीख़ में मज़कूर हैं''

अल्लामा इब्न हज़र मक्की ने ''दर्दकामना'' जिल्द अव्वल में और ज़हबी ने अपनी तारीख़ में इसके अक़वाल व हालात का तज़किरा किया है यह बयान तो दरमियान में जिमनन आ गया, अस्ल मतलब यह है कि इब्न तैमिया ने चूँकि खुदा की जिस्मियत को अख़्तियार किया लिहाज़ा कहा कि

इसके लिए मकान है इसलिए कि हर जिस्म के लिए मकान ज़रूरी है, और चूँकि कुर्आन में है ''अर्रहमान अलल अर्शी इसत्वा'' इसलिए कहा कि अर्श ही इसका मकान है और चूँकि खुदा वन्द आलम अज़ल से है और आलम के तमाम अजज़ा हादिस है इसलिए इसे मजबूरन कहना पड़ा कि जिन्स अर्श अजली और कदीम है लेकिन इसकी ला मुतनाही शख्सियतें एक के बाद दीगर वजूद में आती रहती हैं तो मकान में होने की सिफ़त खुदा की कदीम है मकान के तैय्युनात हादिस है।

मरात अल-जनान याफई में इब्न तैमिया के फ़ितने के ज़िक्र में है कि मिस्र में जो उन पर इल्ज़ाम आयद हुआ वह यह कि वह कहते हैं कि ख़ुदा हक़ीक़तन अर्श पर बैठा है और वह हुरूफ़ और आवाज़ के साथ कलाम करता है और इसी के बाद दमिश्क वगैरह में ऐलान किया गया कि जो इब्न तैमिया के अकीदे पर हो उसका जान व माल हलाल है।

अबुल फ़िदा ने अपनी तारीख़ में 705 हिजरी के हालात में लिखा है कि इसमें तक़ीयुद्दीन अहमद इब्न तैमिया को दमिश्क से मिस्र बुलाया गया और एक जलसा हुआ जिसमें बहस मुबाहिसे के बाद तय हुआ कि वह इन ऐतक़ादात के सबब जेल में डाल दिया जाए इसलिए कि वह जिस्मीयत का क़ायल है।

इसके अलावा हमारी नज़र से इस इशतिहार की कुछ इबारतें भी गुज़री है जो बादशाह की तरफ से इस शख़्स के बारे में शाय किया गया था उनका खुलासा यह है कि इस बदनसीब इब्न तैमिया ने इस मुद्दत में अपने कलम की ज़बान को बढ़ा रखा था और अपने अल्फाज़ की बाग ढीली कर रखी थी और कुर्आन इलाही के मसायल में बहसें उठायी और अपने कलाम में बहुत सी गलत बातों की सराहत की और ऐसी बातों में गुफ्तुगू की जिन से सहाबा व ताबेईन ने खामोशी इख़्तियार की और वह बातें ज़बान पर लाया जो सल्फे सालिहीन के लिए नाकाबिले कुबूल थी, और वह ऐतकादात ज़ाहिर किये जिन्हें अइम्मा इस्लाम ने गलत करार दिया है, और जिनके ख़िलाफ़

तमाम उलमाये इस्लाम का इजमां है, और अतराफे मुल्क में इसके ऐसे फतवों की इशाअत हो रही है जिनसे अवाम गुमराह हो रही है, और इस बारे में उसने तमाम उलमाये असर और फुकहाये शाम व मिस्र की मुख़ालिफत की है। जब हम तक यह ख़बरें पहुँची और मालूम हुआ कि एक गिरोह उसका भी पैरू हो गया है और वह लोग अल्लाह के बारे में हुरूफ और आवाज़ और जिस्मियत की सराहत करते हैं, तो हम इसके खिलाफ खड़े होने के लिए मजबूर हुए''

यह मन्सूर काफी तूलानी हैं जिसके कुछ जुमलों का मतलब लिखा गया है।

इस सब से मालूम हुआ कि इस तरह सिफाते इलाही और जिस्मियत का ऐतकाद वह है जिसके कुफ्र होने पर उल्माये इस्लाम मुत्तफिक है। अब इससे इब्न अब्दुल वहाब और उनके पैरुओं के मुताल्लिक राय कायम की जा सकती है जो इन्हीं बातों के कायल हैं।

साबिक में जो कुछ दर्ज हुआ है वह अह्ले सुन्नत के तसरीहात थे और उल्माये शिया के तसरीहात मुजस्समा के कुफर के मुताल्लिक शरह लम्आ ''रियाज़ुल मसायेल, मसालिक और जौहरे कलाम तकरीबन तमाम फिका जाफरी की किताबों में देखे जा सकते हैं। इस तरह पूरी उम्मत का इज़्मा उनके कुफर पर साबित व मतहक्कि हो जाता है।

वल्लाहु अदुत्वु लिलकाफिरीन

दूसरा बाब

वहाबी अकीदा रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम के बारे में

इब्न अब्दुल वहाब और उनके पैरू यह अकीदा रखते हैं कि रसूले खुदा स0 दुनिया से उठ जाने के बाद अपनी कब्र में मिस्ल आम मरने वालों के हो गये कि न सुनते हैं और न जवाब दे सकते हैं, न आपको इसका अख़्तियार है कि मशरिक व मगरिब में जहाँ चाहे जाए और इसके अलावा आपकी कब्र मुतहर की ज़ियारत के लिए सफर करके जाना इनके नज़दीक हराम है और आपके साथ तवस्सुल और आप की कब्र के पास दुआ माँगना जायज़ नहीं है और या रसूल अल्लाह कहकर पुकारना शिर्क है। जो वफात के बाद आपसे मुख़ातिब होकर कोई हाजत तलब करे वह मुशरिक हैं कि उसका जान व माल हलाल है, उसको बख़्याल खुद साबित करने के लिए वह आयात व अहादीस से इस्तदलात करते हैं, जो दरहकीक़त इस पर दलालत नहीं करते और तमाम मुस्लमान मुत्तफिक हैं कि हज़रत स0 बाद वफात ज़िन्दा हैं, न ऐसी ज़िन्दगी जो बनस्से कुर्आन शोहदा के लिए भी साबित है बल्कि उससे बदरजहा ज़्यादा मुकम्मल ज़िन्दगी।

यह तसव्वुर कि हज़रत स0 की कब्र मुतहर की ज़्यारत के लिए सफर करना मम्नु है, इसकी बुनियाद एक हदीस पर है जो अहले सुन्नत के यहाँ वारिद है कि पैगम्बर खुदा सल्लललाहु अलैही व आलिही वसल्लम ने फरमाया कि सिवा तीन मस्जिदों के किसी जगह के लिए शिद्दे रिहाल यानी सफर करके जाना जायेज़ नहीं है, इसे जो अपने मक़सद की

दलील बनाकर पेश किया जाता है यह गलत है इसलिए कि ज़रा भी जो अरबी से वाकिफ है व समझ सकता है कि इस हदीस का मतलब यह है कि मस्जिदों में बस यह तीन मस्जिदें है जिनके लिए खास तौर पर सफर करना चाहिए इसलिए कि मुसतसना मुँह का मुसतसना की जिन्स से होना एक खुली हुई बात है, मसलन अगर कोई कहे कि मैने उमर भर में बस वह मस्जिद देखी है उसके सिवा कोई नहीं तो हर एक यही समझेगा कि मस्जिद कोई और नहीं देखी, यह थोड़ी कि कोई इमारत दूसरी या कोई चीज़ दूसरी नहीं देखी, इसी तरह इससे कि सिवा तीन मस्जिदों के और किसी के लिए सफर न किया जाए, मस्जिदों में इनहिजार साबित होगा, लिहाज़ा यह नतीजा निकालना दुरूस्त नहीं कि रौज़ये रसूल के लिए सफर करना जाएज़ नहीं है, वरना फिर एक शहर से दूसरे शहर तिजारत वगैरह के लिए भी सफर जायेज़ न होना चाहिए जिसका गलत होना ज़ाहिर है और कई मर्तबा खुद पैगम्बरे खुदा स0 ने बसिलसिला तिजारत शाम का सफर फरमाया और इसका सबूत मिलता है। इमाम अहमद बिन हंबल की रवायत का मज़मून यह कि किसी मस्जिद की तरफ जहाँ ज़िक्रे इलाही होता है। सफर करके जाना नहीं होगा सिवा तीन मस्जिदों के, इसे सैय्यद मुस्तफा नूरूद्दीन हुसैनी ने अपनी किताब ''खुलासातुल मिकाल फी शिद्दीररिहाल'' में दर्ज किया है, और हकीकत यह है कि हदीसों ने एक दूसरे की तशरीह करती हैं, और हुक्म मुतलक की वज़ाहत मुकैय्यद से होती है और बराबर तमाम मुसलमान और हर दौर के उल्मा रौज़ये रसूल की ज़ियारत के लिए सफ़र करते रहे हैं, और किसी ने भी उस पर ऐतराज़ नहीं किया इससे तमाम मुसलमानों का इजमा व इत्तिफाक साबित होता है, और जिन लोगों ने बाद में इसके मुख़ालिफ राह अख़्तियार की वह जमाअत से निकल गये और इजमायी रास्ते से मुनहरिफ हो गये।

बाज़ अहादीस से भी ज़्यारते के लिए सफर का सुबूत मिलता है, जैसा कि अली बिन बरहानुद्दीन शाफयी की किताब ''इंसानुलऊयून'' में है कि जब जनाब रसूले खुदा (स0) की वफात हो गयी तो बिलाल रजी0 अन्हा शाम की तरफ चले गये और कहा अब रसूल सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम के बाद मदीने की सूरत नहीं देखूँगा, अर्से तक वहाँ रहे मगर एक शब रसूलल्लाह स0 को ख़्वाब में देखा कि फरमाते हैं कि ऐ बिलाल! तुमने हमारा जवार छोड़ दिया और शाम में क़याम कर लिया तो क्या अब हमारी ज़्यारत के लिए भी नहीं आते? बस जूँही वह बेदार हुए उन्होंने सफर की तैयारी कर दी और मदीना आये और कब्र पैगम्बर स0 की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए।''

और यह अहादीस सहाह से साबित है कि जिसने रसूल अल्लाह स0 को ख़्वाब में देखा उसने हज़रत स0 ही को देखा है इसलिए कि शैतान हज़रत स0 की सूरत में नहीं आ सकता, इससे सफर करना ज़ियारते कब्रे रसूल स0 के लिए खुद हुक्मे रसूल से साबित हो जाता है, जिससे इन्कार की किसी को गुंजाइश नहीं है।

इब्न अब्दुल वहाब ने इस कौल को भी अपने पेशरू इब्न तैमिया और इब्न क़ैय्यिम से लिया है कि इन दोनों ने सबसे पहले यह सदा बुलन्द की और इसे साबित करने में तूल कलाम से काम लिया और उल्माये इस्लाम ने उसकी रद में मुस्तकिल किताबें तहरीर की जैसे-शिफाउस्सकाम फ़ी ज़ियारती खैरूलअनाम'' जो आठवीं सदी के काजीलकुजात शेख़ हाफिज़ तकीयुद्दीन हसन सबकी की तसनीफ है और ''जौहरे मुनज्जम फ़ी ज़ियारतें कब्र नबीयिल मुकर्रम'' अज अल्लामा इब्न हजर मक्की हैत्मी और ''मुनतहल मकाली फी शरह हदीसी ला तशद्दल रिजाल'' अज मुफ़्ती सदरुद्दीन और ''ख़ुलासतुल मिक़ाल

फी शदिदर रिजाल'' अज़ सैय्यद मुस्तफा नुरूद्दीन हुसैनी वगैरह-वगैरह।

यहाँ कुछ इन किताबों के इकतिबासात और कुछ दीगर उलमा के इरशादात जो जिमनन दूसरी किताबों में इस मौज़ू से मुताल्लिक हैं दर्ज किये जाते हैं, अल्लामा सब्की ने अपनी किताब के मुकद्दमे में लिखा है कि बारगाहे इलाही में तकररूब के बेहतरीन असबाब में से हज़रत सरवरे कायनात स0 की कब्र मुतहर की ज़ियारत और अतराफे आलम से इसके लिए सफर है जैसा कि शर्क व गर्व के तमाम मुसलमानों में सालहासाल से जारी व सारी है और इन बातों में जो शैतान ने इस ज़माने में बाज़ बदनसीबों के ज़ुबान पर जारी की है। इसमें शक पैदा करना है और यह शक उनके दिल में हर्गिज़ नहीं आ सकता जो सच्चे मुसलमान हों, और यह एक वसवसा है ऐसे बदनसीब का पैदा किया हुआ जिसका वबाल उस पर आयेगा और उस पर वही अह्काम जारी होंगे जो कानूने इलाही ने साफ तौर पर ऐसे अशख़ास के लिए नाफिज़ किये हैं और बातिल शुब्हे फना होकर रहते हैं।

दूसरी जगह इस किताब में लिखा है।

''इब्न तैमिया के पास इसकी कोई दलील नहीं और दीनी उसूल और इसलाफे सालीहीन की सीरत से मालूम होता है कि वह बहुत से नेकोकार व परहेज़गार अमवात के आसार को मुतबर्रिक समझते रहे हैं चे जायके अँबिया व मुरसलीन और जो इसका दावा करे कि अँबिया के मुकद्दस कुबूर और आम मुसलमानों की कब्रे यकसा हैं उसने इन्तिहायी गलत दावा किया जिसके बातिल होने का हम यकीन रखते हैं। और इसमें रसूले खुदा स0 के मरतबे को आम मुसलमानों की सतह तक घटाना है और यह यकीनन दाख़िले कुफ्र है। इसलिए कि जो रसूल स0

के मरतबे को उसकी शायानेशान सतह से गिराये वह काफिर है और अगर वह कहे कि यह मानना नहीं है बल्कि उनके मुनासिब दर्जे से उनकी अज़मत को बढ़ाने से रोकना है तो यह भी जिहालत और गुस्ताख़ी है और हमें यकीन है कि पैगम्बर खुदा इससे भी ज़्यादा ताज़ीम व तकरीम के मुस्तहक हैं, ज़िन्दगी में भी और अपनी वफात के बाद भी और इसमें शक नहीं कर सकता वह जिसके दिल में ज़रा भी ईमान हो''

अल्लामा इब्न हजर जौहर मुनज्जम में लिखते हैं :-

अगर तुम कहो कि हम ज़ियारते कब्र मुतहर और इसके लिए सफर के मुताबिक शरह होने पर इजमा क्योंकर मान सकते हैं हालांकि हंबली जमाअत में से इब्न तैमिया इस सबके मवाफिक शरा होने के मुनकिर हैं जैसा कि सुबकी ने ब्यान किया है और कहा है कि इब्न तैमिया ने इस पर बहुत तुलानी इस्तदलाल किया है, बल्कि उन्होंने ये दावा किया है कि सफर इस ज़ियारत के लिए इजमाअन हराम है, और इसमें नमाज़ कस्र न होगी और यह जितनी हदीसे इसकी फज़ीलत में हैं सब वजयी हैं और बाद में भी कुछ उल्मा ने इस कौल की पैरवी की है। तो मैं कहूँगा कि इब्न तैमिया कौन है जिसकी तरफ नज़र डाली जाए और दीन के मामलात में से किसी में उस पर भरोसा किया जाए और वह तो जैसा कि एक जमाअत ने जैसे गर बिन जमा, उसके अकवाल और बेकीमत दलायल का जायज़ा लिया है और इसके तवोहुमात और गलतियों का इज़हार किया है, एक ऐसा शख़्स है जिसे अल्लाह ने गुमराहों में दाख़िल किया है और उसे रुसवाई की चादर उढ़ा दी है और हलाकत का मुसतहिक करार दिया है और इन्तिहायी अफज़ा परवाज़ी और दरोग ब्यानी से उसने अपने लिए वह जगह बनायी है जो उसकी सुबकी और रहमते खुदा से महरूमी का सबब है और शेखुल इल्लाम

तकी सुबकी ने जिनकी बुज़ुर्गी, इजतिहाद, परहेज़गारी और पेशवायी मुसल्लम है उसकी रद में एक मुस्तकिल किताब तहरीर की है और उसमें मुस्तहकम दलायल से सही रास्ते को वाज़ेह किया है।''

मुफ्ती सद्रूद्दीन ने मुनतहल मकाल में लिखा है कि :-

बुज़ुर्ग मर्तबा आलिम मुतबहिर, मुहद्दसीन के महल इस्तनाद शेख़ मोहम्मद बरेसी ने अपनी किताब ''इत्तएहलफुल इरफान बरूयतल अंबिया वल मलाइकलजान'' में लिखा है कि इब्न तैमिया हंबली ने जुरात व जसारत से काम लिया है और दावा किया है कि हज़रत पैगम्बर खुदा स0 की कब्र मुतहर की ज़ियारत के लिए सफर हराम है और यह कि नमाज़ इस सफर में कस्र न होगी, इसलिए कि यह सफरे मासियत है और इसमें ऐसे तूल कलाम से काम लिया है जिसके सुनने से कान इंकारी है और तबीअते मुतनफ्फिर होती है और इस कलाम की नहूसत उसके शामिले हाल रही यहाँ तक कि उसकी जसारत बारगाह अज़जो जलाल हज़रत बारी तक पहुँच गयी और इसने अज़मते ख़ालिक के परदे को शिगाफता कर दिया और ऐसी बातों को साबित करने की कोशिश की जो उसकी शने अज़मत व कमाल के खिलाफ हैं कि खुदा के लिए सिम्त जेहत और जिस्मियत का दावा किया और जो उसे न माने उसे गुमराह और गुनहगार करार दिया और इसका मिम्बरों पर ऐलान किया और इसका चर्चा हर तरफ फैला और उल्माये मुजतहिदीन की जो इसके पहले हुए हैं बहुत से मसलों में मुख़ालिफत की और खुलफाये राशिदीन पर लचर और पोंच ऐतराज़ात किये जिसका नतीजा यह है कि वह शख़्स इस दौर के तमाम उलमा की नज़र से गिर गया और अवाम व ख़्वास सबको उस पर अगुशत नुमाई हुई और उलमा ने उसके गलत अक़्वाल का जायेज़ा लिया और उसके दलायल की रद की और उसकी

लग्ज़िशों को नुमाया किया और उसके तवोहुमात और गलतियों को वाज़ेह किया।''

अहमद बिन शहाबुद्दीन खफ़ाज़ी ने ''नसीमुर्रियाज शरहु शिफाअकाजी अयाज़'' में इस हदीसे रसूल स0 के दर्ज करने के बाद कि अल्लाह लानत करे यहूदी व नसारा पर कि उन्होंने अपने अंम्बिया की कब्रों को महल्ले सजदा बना दिया'' लिखा है।

''मालूम होना चाहिए कि इस हदीस की वजह से इब्न तैमिया और उसके ताबईन जैसे इब्न क़ैय्यिम ने अपना वह रुसवाये ज़माना तसव्वुर क़ायम किया जिसकी वजह से सबने उन्हें काफिर करार दिया और सुब्की ने एक मुस्तकिल किताब उस पर लिखी और वह ज़ियारते कब्र रसूल स0 और उसके लिए सफर को ममनू करार देना है। उन्होंने बख़्याल खुद तौहीद के पहलू का तहफ्फुज़ किया ऐसे मुहमिलात के साथ जिनका ज़िक्र भी मुनासिब नहीं है क्योंकि वह किसी साहबे अक़्ल की ज़ुबान पर नहीं आ सकते चेजायेके के किसी फाज़िल आदमी की ज़ुबान पर।

मुल्ला अली कारी ने शरहशिफा की दूसरी जिल्द में लिखा है कि :-

हंबलियों में से इब्न तैमिया ने तफरीत से काम लिया कि ज़ियारते रसूल (स0) के लिए सफर को हराम करार दिया जिस तरह दूसरों ने अफरात से काम लिया कि उन्होंने कहा कि ज़ियारत का दाख़िल इबादत होना ज़रूरियाते दीन में से है और इस के मुनकर पर हुक्म कुफ़्र जारी है और गालिबन यह दूसरा तसव्वुर हकीकत से ज़्यादा करीब है। इसलिए कि जिस चीज़ के मुस्तहब होने पर इजमाये उल्मा हो इसका हराम कहना कुर्फ होगा इसलिए कि यह बाला तर है इसकी किसी मुततफिका तौर पर मुबाह चीज़ को हराम कहा जाये जिसके कुर्फ

होने पर इत्तिफाक है।''

कशफुज्नुनून में है कि उल्मा ने इब्न तैमिया के बारे में बड़े इफरात से काम लिया है कि सराहतन लिखा है कि

''जो इब्न तैमिया को शेखुल इस्लाम'' कहे वह भी काफिर है'' इन तमाम इबारतों से मालूम हुआ कि बहुत से उल्मा इब्न तैमिया के कुर्फ पर इस कौल की वजह से मुत्तफिक हैं।

शेख़ इब्न हजर मक्की ने ''दर्द कामना'' में लिखा है कि :- ''लोग इब्न तैमिया के बारे में कई किस्म के हैं। कुछ तो उसे मुजस्समों में दाख़िल करते हैं। चूँकि अकीदा हमूमिया और वास्तीया वगैरह में लिखा है कि हाथ और पैर और पिण्डली और चेहरा सब हकीकतन अल्लाह के लिए साबित है और वह बजात खुद अर्श पर बैठा हुआ है कहा कि इससे मकान ख़ास में होना और इसका अजज़ा पर तक्सीम होना जिस्म के खुसूसियात में से है तो कहा गया कि बहरहाल यह शख़्स खुदा को लामकान नहीं मानता और इसके लिए जुज़्बे मकान का कायल है और कुछ लोग उसे बेदीन इसलिए मानते हैं कि उसका कौल है कि पैगम्बरे खुदा सल्ललाहु अलैही वसल्लम से फरयाद नहीं की जा सकती, इसमें रसूल खुदा सल्ललाहु अलैही व आलिही वसल्लम की तनकीस है और आप की ताज़ीम से रोकना है। सबसे ज़्यादा तशद्दुद इस बारे में नूर बकरी को था कि जब इस बारे में इज्तिमा हुआ तो बाज़ हाज़रीन ने कहा कि इस शख़्स को ताज़ीर लाज़िम है तो उन्होने कहा कि इसके कोई माने नहीं इसलिए कि अगर उससे रसूल स0 की तन्कीस होती है तो हुक्म कत्ल होना चाहिए और अगर तन्कीस नहीं होती तो हुक्म ताज़ीर भी क्यों हो? कुछ लोग मुनाफिक का हुक़्म जारी करते हैं हज़रत अली के बारे में यह कहने से कि उन्होंने जिधर भी रूख़ किया वह नाकाम व

नामुराद रहे और उन्होंने कई दफा ख़िलाफत हासिल करने की कोशिश की मगर नहीं पा सके और उन्होंने जंगे सिर्फ इक्तिदार के लिए की, न कि दीन के लिए अैर वह इक्तिदार के ख़्वाहिश मंद थे और उसमान माले दुनिया से बड़ी मोहब्बत रखते थे, और उसका यह कौल है कि अबू-बकर बूढ़े थे, समझते थे क्या कह रहे हैं, और अली बचपन में ईमान लाये और बच्चे का इस्लाम काबिले कुबूल नहीं, और दुख़्तर अबु-जेहल की ख़्वास्गारी के सिलसिले में जो कुछ कहा है। इस सब में हज़रत अली (अलै0) के ख़िलाफ तान व तशनीय है और पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम की हदीस है जो हज़रत अली से मुख़ातब होकर इरशाद फरमायी थी कि तुम्हे दुश्मन नहीं रखेगा कोई सिवा मुनाफिक के।

कुछ लोग ख़्याल करते हैं कि यह शख़्स इमामे उम्मत बनने का ख़्वाब देखता था इसलिए कि वह इब्न तोमरात का बहुत ज़िक्र करता था और उसकी तारीफे करता था इन सब बातों की वजह से व तूलानी मुद्दत तक कैद में रखा गया और इस सिलसिले में बहुत से वाक्यात है जो मशहूर हैं और वह जब कायल किया जाता था तो कह देता था कि मेरा यह मतलब नहीं था, मेरा मतलब दूसरा था और फिर एक बहुत दूर दराज़ का मफहूम ब्यान कर देता।''

इन तमाम उल्मा के अक्वाल से साबित हो गया कि ज़ियारते रसूल स0 के लिए सफर के इस्तेहसान पर मुसल्मानों का इत्तफाक व इजमा है, और जो इसका मुनकर है वह जरूरियातेदीन में से एक चीज़ का मुनकर है।

बहसे तवस्सुल

तवस्सुल रसूले खुदा स0 के ज़रिये से अल्लाह की बारगाह में इसके

लिए कुर्आन मजीद से भी सुबूत मौजूद है और बकसरत अहादीस भी है और सहाबा व ताबईन के आसार भी और फिर तबे तबाईन और तमाम उम्मते इस्लामिया का अलम्दरआमद भी है जिनमें से हर एक यके बाद दीगरे ज़ैल में दर्ज है।

कुर्आन मजीद से तवस्सुल का सुबूत

रसूल स0 से खिताब करके कुर्आन मजीद में इरशाद हज़रते अहदीयत है कि ''क्यों नहीं हुआ ऐसा कि जब उन्होंने (गुनाहों के इर्तिकाब से) अपने ऊपर जुल्म किया था तो वह आप के पास आते और आकर अल्लाह से मग़फिरत तलब करते और पैगम्बर उनके लिए अस्तगफार करते तो अल्लाह को तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान पाते'' (आयत)

अब हर शख़्स समझ सकता है कि अगर पैगम्बर से तवस्सुल मतलूब न होता तो बजाय खुद उनका अस्तगफ़ार काफी था, यह हुक्म न दिया जाता कि वह रसूल स0 के पास जायें और आपके पास आकर अस्तग़फार करें और इसकी ज़रूरत न होती कि रसूल स0 उनके लिए अस्तगफार करें, ज़ाहिर है कि खुदावन्द आलम बजाते खुद ''तौवाबुर्रहीम'' है मगर यहाँ उसने अपने तौवाबुर्रहीम होने की शर्त के साथ मशरूत कर दिया है, इससे बढ़कर तवस्सुल के मतलूब इलाही होने की दलील क्या हो सकती है ?

अ़हादीस व आसारे सहाबा व ताबईन

(1)

जनाबे आदम का तवस्सुल

इसका ज़िक्र मुतअदिद अहादीस में है, मिनजुमला उनके वह है

जिसे हाकिम ने मुस्तदरिक में दर्ज किया है और उसे सही करार दिया है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से ''तर्क औला'' हुआ तो उन्होंने कहा परवरदिगार! मैं तुझसे मोहम्मद मुस्तफा स0 के हक का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि तू मुझे बख़्श दे, इरशादे इलाही हुआ कि ऐ आदम! तुम ने उन्हें क्योंकर पहचाना? अर्ज़ किया कि इस वजह से कि जब तूने मुझे ख़ल्क किया तो मैने अर्श पर नज़र डाली तो उसमें लिखा हुआ देखा ''ला-इलाहा इल्लल्लाह मोहम्मदुर रसूलुल्लाह'' उनका नाम मैने तेरे नाम के साथ देखा तो समझा कि वह तमाम ख़ल्क में तुझे सबसे ज़्यादा महबूब हैं।

(2)

बतौर नमूना अमल खुद रसूल खुदा स0 का तवस्सुल

तबरानी की रवायत है मोजम कबीर और अवसत में 'नेज़ इब्न हयान और हाकिम ने सही होने की तसदीक के साथ अनस बिन मालिक की ज़बानी दर्ज किया है कि जब जनाब फातिमा बिन्त असद रजी0 की वफात हुई जिन्होंने हज़रत रसूल खुदा स0 की परवरिश की थी तो हज़रत स0 उनके सरहाने बैठे और कहा अल्लाह की रहमत आपके शामिल हाल हो ऐ मेरी मां के बाद मेरी माँ। इसके बाद जब लहद बनाने का वक़्त आया तो अपने हाथ से उसे खोदा और उसकी मिट्टी अपने हाथ से निकाली और लहद तैयार हो गयी तो हज़रत स0 खुद उसमें लेटे और कहा 'अल्लाह जो ज़िन्दा करता है और मौत देता है और वह खुद ज़िन्दा है ऐसा जिसे मौत नहीं परवरदिगार। मेरी माँ फातिमा बिन्त असद की मगफिरत फरमा और उनके महल में वुस्अत अता फरमा। तुझे वास्ता अपने पैगम्बर (स0) और उन पैगम्बरों का जो मेरे पहले थे तू तमाम रहमत वालों में सबसे ज़्यादा रहमत वाला है।''

और इब्न अबी शैबा ने ऐसी ही रवायत जाबिर की ज़बानी नकल की है और इसी तरह इब्न अब्दुलबर ने इब्ने अब्बास से और अबु नईम ने हुल्लियातुलअवलिया में अनस से।

इन तमाम रवायत का ज़िक्र हाफिज़ सुयूती ने जामय कबीर में किया हे।

यह ज़ाहिर है कि रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम को खुद तवस्सुल की ज़रूरत न थी मगर अपनी उम्मत को इस तरीके के इख़्तियार करने की तालीम देना थी।

(3)

रसूल स0 के वास्ते से जनाब अबु तालिब रजी0 का तलबे बाराँ :-

अम्मे रसूल स0 हज़रत अबु तालिब रजी0 ने हज़रत स0 को साथ ले जाकर तलब बाराँ किया फौरन बाराने रहमत आ गया, इस पर उन्होंने एक कसीदा कहा जिस के दो शेर इस मज़मून के थे कि :-

वह गोरा चिट्टा जिसके चेहरे के ज़रिये से अबर से बारिश हासिल की जाये, वह यतीमों का जाये पनाह ओर रांडों के लिए सबबे हिफाज़त है। पनाह लेते है इसकी तरफ बनी हाशिम के तबाह हाल अफराद तो उसके पास एहसानात में घिरे रहते हैं।''

इन अशआर को हज़रत पैगम्बर खुदा स0 ने इतना पसन्द फरमाया कि बाद में उन अशआर को और उनके नज़्म करने वाले अबुतालिब को याद फरमाया जिसे हाफिज़ जलाल सुयूती ने खसाईसे कुबरा में दर्ज किया है

(4)

हज़रत स0 के तलबे बाराँ पर एक शायेर के अशआर

सुयूती ने खुद हज़रत स0 के तलबे बाराँ के बाद बारिश होने के

ज़िक्र में लिखा है कि कबीला कनाना के शायर ने इस सिलसिले में अशआर पढ़े और वह अशआर सुयूती ने दर्ज किये हैं, इनमें उस शायर ने जनाब अबु तालिब के अशआर का भी हवाला दिया है और कहा है कि पैगम्बर के चेहरे के ज़रिये से हमें बारिश नसीब हुई और वह वैसे ही साबित हुए जैसा कि उनके चचा अबु तालिब ने उनके बारे में कहा था हज़रत स0 ने उस शायर की तारीफ फरमायी और इस तरह उसके उन अल्फाज़ की तसदीक फरमायी कि पैगम्बर के चेहरे की बदौलत बारिश नसीब हुई।

(5)

एक नाबीना को रसूल स० की तालीम

बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में और बैहकी ने दलायल में सेहत की तसदीक करते हुए और अबु नईम ने किताबुल मारिफत में उसमान बिन हनीफ से रवायत है कि एक नबीना पैगम्बरे खुदा स0 के पास आकर कहने लगा कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह मुझे बीनायी अता फरमाये आप स0 ने फरमाया! चाहो तो सब्र करो दुआ न कराओ और चाहो तो दुआ कर दूँ।

इब्न माजा की रवायत में यूँ है कि चाहो तो अल्लाह से दुआ करू और चाहो तो सब्र करो कि वह तुम्हारे लिए बेहतर है।

बहरसूरत इस ने कहा आप दुआ कर दीजिए हजरत स0 ने फरमाया! अच्छा तो फिर पूरी उम्दगी के साथ वजू करो, फिर दो रकात नमाज़ पढ़ो और उसके बाद उन अल्फाज़ के साथ दुआ करो कि परवरदिगार! तुझ से सवाल करता हूँ और तेरी तरफ मुतवज्जा होता हूँ तेरे पैगम्बर मोहम्मद के वास्ते से जो रहमत के पैगम्बर हैं और ऐ मोहम्मद मैने आपके वास्ते से रूख़ किया है अपने अल्लाह की तरफ कि

वह मेरी इस हाजत को पूरा करे परवरदिगार तो इन की सिफारिश को मेरे बारे में कुबूल फरमा, जब उस शख़्स ने ऐसा ही किया तो उसकी आँखे रौशन हो गयी।

(6)

सवाद बिन कारिब के अशआर

तब्रानी ने मुअज्जम कबीर में सवाद बिन कारिब का वाक्या लिखा है उसमें है कि उन्होंने पैगम्बर खुदा स0 के सामने अपना कसीदा पढ़ा उस में था कि तमाम पैगम्बरों में आप का वसीला अल्लाह के यहाँ सब से ज़्यादा करीब है और फिर यह कि आप मेरी शफाअत कीजिएगा, उनमें से किसी भी बात पर हज़रत स0 ने एतराज़ नहीं फरमाया।

(7)

ख़लीफा अव्वल अबु-बक्र का तवस्सुल

शरह दलायल अल खैरात में हज़रत अबू-बक्र के मुताअल्लिक है कि वह हज़रत पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम की कब्र पर आये और कहा :-

''ऐ मोहम्मद मैं आप से तवस्सुल करता हूँ''

(8)

उम्मुल मोमनीन आयशा का तवस्सुल

इमामुद्दीन आमरी की किताब ''बहजतुल महाफिल'' में है कि अहल मदीना शदीद कहत में मुबतिला हुए तो उन्होंने जनाब आयशा से शिकायत की, उन्होंने कहा :-

''पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम की कब्र मुतहर पर छत में एक रौशनदान करा दो कि उसके और आसमान के

बीच में कोई चीज़ हायल न रहे, लोगों ने ऐसा ही किया तो शदीद बारिश हुई कि नबातात और हैवानात सब पर उसकी सेराबी का खुशगवार असर हुआ।''

(9)

खलीफा सानी उमर का तवस्सुल

हाफिज़ अबु नईम असफहानी ने ''दलायल नबूवत'' में अनस की ज़बानी लिखा है हज़रत उमर तलबे बाराँ के लिए निकले और इब्न अब्दुल मुत्तलिब के ज़रिये से तलबे बाराँ करते हुए कहा :-

''खुदावन्द : पहले जब कहत पड़ता था तो हम तेरे पैगम्बर से तवस्सुल करते थे और अब हम अपने पैगम्बर के चचा के ज़रिये से तुझ से इल्तिजा करते हैं कि हमें बारिश से सेराब फरमा।''

चुःनान्चा बारिश हुई**!**

इस वाक्ये को जाहिज ने ''अलब्यान व बतीयीन'' में दो जगह दर्ज करने के बाद लिखा है कि काबल अहबार ने हज़रत उमर से कहा कि बनी इसराईल जब कहत में मुबतिला होते थे तो पैगम्बरों के पिदरी रिश्तेदारों के ज़रिए से तलबे बाराँ करते थे उनके इस कहने से हज़रत उमर ने जनाब अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के ज़रिए से तलबे बाराँ किया।

तारीख़ में है कि जब बारिश हुई तो लोग जनाब अब्बास रजी0 से मुतमस्सह करने लगे, हाथ उनके जिस्म से लगाकर अपने चेहरे पर फेरने लगे और कहते थे मुबारक हो आप को ऐ हरमैन (मक्के और मदीने) को सेराब करने वाले, चूँकि जनाब अब्बास दौरे इस्लाम से कब्ल और फिर बाद इस्लाम साकीयुल हज्जीह यानी मक्का मुअज़्माा के हज्जाज को पानी पिलाने के इन्तिज़ाम के ज़िम्मेदार थे, इस तरह हरमे

खुदा (मक्का मुअज़्ज़मा) के लोगों को सेराब करना उनका काम था और आज वह इस बाराने रहमत के नुजूल का सबब बनकर हरम रसूल यानी मदीने के सेराब करने वाले साबित हैं। लिहाज़ा उनको सब ''साकिअल हरमैन'' कह रहे थे लेकिन किसी ने उन लोगों का मूँह बन्द नहीं किया कि यह शिर्क़? इसका ज़िक्र इब्न असीर जजरी ने ''असदुल गायां'' में किया है लिखा है कि इस बारे में हस्सान बिन साबित ने अशआर कहे जिनमें है कि ''लोगों ने कहत साली की शिद्दत में सवाल किया तो अब्बास के चेहरे के वास्ते से अबर ने बाराँ से सेराब किया।

इस शेर में तवस्सुल भी है और सेराब करने की निस्बत खुदा की तरफ नहीं? अब्र की तरफ है वहाबी नुक्ताये नज़र से शिर्क है।

(फिर कहा है) ''इनकी बदौलत अल्लाह ने इन शहरों को ज़िन्दा कर दिया और चारों तरफ शादाबी नज़र आने लगी।''

एक रवायत में है जो जनाब इब्न अब्बास रिज़वानुल्लाह अलैह की ज़बानी है कि हज़रत उमर ने कहा।

खुदावन्दा :- हम तुझसे अपने पैगम्बर स0 के चचा का वास्ता देकर सेराबी तलब करते हैं और इन की सफेद दाढ़ी को सिफारिश के लिए लाए हैं। उसके बाद बारिश हुई।

(10)

कब्र रसूल स० पर जाकर रसूल स० से फरयाद

इस्तेआब इब्न अब्दुलबर में है कि ज़मानये उमर में एक दफा जो कहत पड़ा तो मुसलमानों में से एक शख़्स बैहक़ी ने लिखा है कि वह असहाबे रसूल स0 में से बिलाल बिन हारिस थे, ये कब्र रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम पर आये और कहा या रसूल अल्लाह : अपनी उम्मत के लिए तलबे बारा कीजिए कि यह हलाक हो

रहे हैं। उस पर किसी ने एतराज़ नहीं किया।

(11)

नाबगैज़ादी की कब्रे रसूल स० से फरयाद

ख़लीफा सोम उसमान के ज़माने में अम्माल हुकूमत ने नाबगाज़ादी के साथ तशद्दुद से काम लिया तो नाबगा ने कुछ अशआर नज़म किये हैं जिनमें कहा है कि-

''ऐ पैगम्बर और उनके दोनों साथियों की कब्रः हम आप से फरयाद कर रहे हैं।''

और यह नाबगा हज़रत रसूल सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसस्ललम के बुजुर्ग मरतबा सहाबी हैं।

(12)

अब्दुल्लाह बिन उमर की रसूले खुदा स० से फरयाद

शिफाये काज़ी अयाज़ में है कि अब्दुल्लाह बिन उमर के पैर में एक दफा ख़ास तकलीफ हो गयी, किसी ने कहा जो सब से ज़्यादा आप का महबूब हो, उसे पुकारिये, उन्होंने कहा

''वा मुहम्मदाह''

बस यह कहते ही उनके पैर की तकलीफ दूर हो गयी।

(13)

उसमान बिन हनीफ की तवस्सुल के लिए हिदायत

बैहकी ने और अबु नईम ने किताब अल्मारिफत में दर्ज किया है। सुहेल बिन हनीफ का बयान है कि एक शख़्स ख़लीफा सोम उस्मान के पास किसी ज़रूरत से जाता था और वह उसकी तरफ तवज्जोह न करते थे, उसने उस्मान बिन हनीफ से इसका ज़िक्र किया। उन्होंने कहा

जाकर वज़ु करो, फिर मस्जिद में जाकर दो रकात नमाज़ पढ़ो, फिर कहो खुदावन्द! मैं तुझसे सवाल करता हूँ और तेरी तरफ रूख़ करता हूँ, तेरे पैगम्बर मोहम्मद स0 नबी रहमत के ज़रिए से, या मोहम्मद! मैं आप के ज़रिए से अपने परवरदिगार की तरफ रूख़ करता हूँ कि मेरी यह हाजत पूरी हो, इसके बाद अपनी हाजत का इज़हार करना, चुनानचः इसने ऐसा ही किया और फिर जनाब उस्मान बिन अफ़्फ़ान के दरवाज़े पर गया तो दरबान आया और वह उसे उस्मान के पास ले गये उन्होंने उसको ऐजाज के साथ बैठाया और कहा बताओ! तुम्हारी क्या ज़रूरत है? और उस ज़रूरत को पूरा कर दिया।

(14)

पैगम्बर के वसीले से तलबे शिफा

सही मुस्लिम में अस्मा बिन्त अबू-बक्र से रवायत है कि उन्होंने पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम का जुब्बा निकाल कर दिखाया और कहा यह आयशा के पास था और पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम इसे पहनते थे। अब हम इसे धोकर मरीज़ों को पानी पिलाते हैं और इसके ज़रिये से शिफा हासिल करते हैं, इसे वहाबी जमाअत के मुकतदा इब्न क़ैय्यिम ने भी अपनी किताब ''जादुल मआद'' में दर्ज किया है।

(15)

अब्दुल्लाह बिन जुबैर का तवस्सुल

इब्न ख़लकान ने अपनी तारीख़ में शाबी की रवायत दर्ज की है कि मैने एक अजीब वाक्या देखा। हम लोग सहने काबा में बैठे थे, मैं और अब्दुल्लाह बिन उमर और अब्दुल्लाह बिन जुबैर और मसअब बिन जुबैर

और अब्दुल मलिक बिन मरवान, नमाज़ के बाद सब लोगों ने कहा कि एक शख़्स तुम में से उठे और रूक्ने यमानी की तरफ जाये और उसे पकड़कर खुदा से दुआ करे। अपनी हाजत तलब करे तो वह ज़रूरत पूरी होगी और फिर सबने कहा कि तुम ऐ अब्दुल्लाह बिन जुबैर उठो कि तुम हिजरत के बाद सबसे पहले माँ के पेट से पैदा होने वाले शख़्स हो। इस पर वह उठे और उन्होंने रूक़्ने यमानी को पकड़कर कहा :

खुदावन्द! तू बुजुर्ग है, हर बड़ी से बड़ी बात के लिए तुझ ही से उम्मीद वाबस्ता की जा सकती है। मैं तुझ ही से सवाल करता हूँ तेरी अर्श की हुर्मत के वास्ते से और तेरे चेहरे की हुर्मत के वास्ते से, और तेरे पैगमबर की हुर्मत के वास्ते से कि तू मुझे दुनिया से न उठाना यहाँ तक कि मैं हिजाज़ का हुक्मरा हूँ और मुझे ख़लीफा कहकर सलाम किया जाए।''

मज़कूरा बाला तवस्सुल के शवाहिद में कुछ तो हज़रत स0 की वफ़ात के बाद से मुताअल्लिक हैं लिहाज़ा यह नहीं कहा जा सकता कि ज़िन्दगी में हज़रत स0 के वसीले से दुआ में कोई हर्ज नहीं बाद वफात नहीं होना चाहिए। इसके अलावा एक तो उसूलन जो शिर्क़ में दाख़िल हो इसमें किसी की हयात और मौत का फ़र्क कोई माने नहीं रखता और फिर ये रसूल स0 की वफात हकीकतन वैसी मौत नहीं जो आम अमवात की होती है बल्कि आप स0 इस ज़ाहिरी मौत के बाद भी हक़ीकतन सुनते और जवाब देते हैं इसकी तफसील का ये मौका नहीं है मगर मुजमलन इतना अर्ज़ है कि हयात शुहदा नबस कुर्आन से साबित है। और पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम का मर्तबा पेश खुदा हकीकतन दूसरे शोहदा से बदरजहा बालातर है और अबु दाऊद की रवायत है कि रसूले खुदा स0 ने फरमाया कि रोज़े जुमा मुझपर

कसरत से दुरूद भेजा करो कि इस दिन फरिश्ते हाज़िर होते हैं और कोई शख़्स मुझपर भी दुरूद नहीं भेजेगा मगर यह कि वह उस का दुरूद मेरे सामने पेश होगा (रावी कहता है) मैने कहा कि आप की वफात के बाद भी? फरमाया हाँ मेरी वफ़ात के बाद भी, यकीनन अल्लाह ने ज़मीन पर हराम किया है कि वह पैगम्बरों के जिस्म को खायें और पैगम्बर ज़िन्दा रहता है, उसे रिज़्क अता होता है।

हाफिज़ इब्न माज़ा ने अपने सनन में इसकी रवायत की है और इस मज़मून की कई हदीसें हैं जो खसायेस कुबरा सुयोती में और दलायल अन्नबूवता हाफिज़ अबु नईम अस्फहानी में आयी हैं। और मुहद्दिस सनदी ने अपने हाशिये में जो सुनन इब्न माज़ा पर है, इस हदीस की शरह में लिखा है कि इस में शक़ नहीं होना चाहिए। इसलिए कि यह बात शोहदा के बारे में तो कुर्आन में आयी है तो फिर पैगम्बरों का क्या ज़िक्र? और ख़ास अंबिया के बारे में भी कुछ हदीसे मौजूद हैं। इनमें से यह है कि अ-हज़रत स0 ने जनाब मूसा अलै0 को देखा कि वह अपनी कब्र में नमाज़ पढ़ रहे हैं।

अब जब कि हयाते रसूल स0 साबित हो गयी तो आपकी इस ज़िन्दगी में तो तवस्सुल की हदीसे हैं, वह सब इस वक़्त भी तवस्सुल के सही होने की दलील है।

कस्तलानी ने 'मवाहिबु लदीनिया' में लिखा है कि हज़रत स0 की ज़िन्दगी में और नेज़ वफात के बाद हज़रत स0 से तवस्सुल के शवाहिद इतने ज़्यादा हैं कि उनका अहाता नहीं किया जा सकता, मुहद्दिसीन सल्फ हज़रत स0 की कब्र मुतहर पर जाकर दुआ को काबिले ऐतराज़ नहीं समझते थे चुनानचः अल्लामा शम्सुद्दीन जज़री ने ''नहसने हसीन'' में बहुत अच्छे अल्फाज़ में लिखा हैं कि-

''अगर पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम की कब्र मुताहर पर दुआ कुबूल न हो तो और कहाँ कुबूल होगी?''

और शाह अब्दुल हक़ देहलवी ने अपनी किताब ''जज़बुलकुलूब'' में लिखा है कि मकासिद के हुसूल और अजीब व गरीब फायदों के मुरत्तब होने में जो वाकियात हज़रत सरवरे कायनात स0 की कब्र शरीफ़ पर फरयाद और तलब हाजत से मोहताजों और गरीबों के सामने आये हैं, बकसरत हैं।

काज़ी अयाज़ ने शिफा में इमाम मालिक का मकालमा ख़लीफा अब्बासी अबु जाफर मंसूर दवानिक़ी के साथ दर्ज किया है कि ख़लीफा ने उनसे पूछा कि मैं किबला की तरफ रूख़ करूँ या चेहरे मुबारक की तरफ रूख़ करके खड़ा हूँ? इमाम मालिक ने कहा कि आप हज़रत स0 की तरफ से मुँह क्यों कर मोड़ियेगा जब कि वह आपके भी वसीला हैं अल्लाह की तरफ से और आप के बाप अबुल बशर हज़रत आदम के भी।

हमारे फाज़िल हम अस्र सैय्यद इब्राहीम रावी रिफायी ने ''अवराके बगदादिया'' में रबली से नक़्ल किया है, उन्होंने आदाबे ज़्यारत में लिखा है कि फिर कब्र शरीफ़ पर आये हज़रत स0 के सर मुबारक की तरफ रूख़ और किब्ले की तरफ पुश्त किये हुए और चार हाथ के करीब की दूरी पर खड़ा हो और जिधर रूख़ हो, उसके नीचे के हिस्से पर नज़र रखें और सलाम पेश करें क्योंकि हदीस है कि जो मुझे सलाम करेगा, मैं उसका जवाब दूँगा, और सलाम में आवाज़ बुलन्द न करे जैसे हज़रत स0 की ज़िन्दगी में हुक्म था, फिर आख़िर में हज़रत स0 के चेहरे मुबारक की तरफ आकर हज़रत स0 से तवस्सुल करें और आपसे परवरदिगार की बारगाह में शिफाअत का खवाहा हो।

गुज़िश्ता शवाहिद में से बाज़ से साबित हो जाता है कि हज़रत

पैगम्बर खुदा स0 की तरफ निस्बत रखने वाली हर चीज़ से बरकत हासिल करना सहाबा व ताबईन और सल्फ सालिहीन के नज़दीक मुसल्लम रहा है।

अब्दुल्लाह बिन उमर की निस्बत बयान है कि वह आसार पैगम्बर खुदा स0 की जुस्तुजू में फिरते थे और जहाँ हज़रत स0 ने नमाज़ पढ़ी हो, चाहे उम्र में एक दफा, वहाँ जाकर नमाज़ पढ़ते थे और उन्हीं जगहों पर फिर मस्जिद की तामीर हुई। इसका समहूदी ने वफ़ा में ज़िक्र किया है।

इबनुल क़ौय्यम ने अपनी किताब ''जादुल मिआद'' में जनाब इस्माईल और हाज़रा के ज़िक्र में हतमी तौर पर लिखा है कि ''इब्राहीम अलै0 और उनके फरज़न्द इस्माईल का वतन से दूर होना और तन्हाई और कुर्बानी के लिए आमादगी, इस सबका नतीजा यह था कि इनके आसार और इनके कदमों के निशानात महल इबादत बन गये। मोमिनीन के लिए और मनासिक हज में दाख़िल हो गये क्यामत तक के लिए।'' अब जब जनाब इस्माईल और हाजरा के आसार इस वजह से कि उन्होंने राहे खुदा में इज़ाऐं उठायीं, इसके मुस्तहिक हुए कि वह महल इबादत बन जाऐ, तो जो ज़ात अंबिया में अफज़ल हो और जिसका इरशाद हो कि किसी नबी को वह ईज़ाये नहीं पहुँची जो ईज़ाये मुझे पहुँची हैं आप स0 के आसार किया इसके मुस्तहिक नहीं होंगे कि उनकी ताज़ीम व तकरीम की जाये? और यह कुल्लिया है कि किसी बुलन्द ज़ात की तरफ निस्बत से दूसरी चीज़ में अज़मत पैदा हो जाती है चुनानचः खसायस कुबरा सुयोती में मेराज के हाल में पैगम्बर खुदा स0 की ज़बानी है कि-

मैं चला और मेरे साथ जिबरईल थे, एक जगह पहुँच कर उन्होंने

कहा सवारी से उतरिये और नमाज़ पढ़िये, मैने ऐसा किया तो उन्होंने कहा आप जानते हैं? आपने कहाँ नमाज़ पढ़ी? यह तैयबा है जहाँ आप हिजरत करके जायेगे। इसके बाद मैं चला तो फिर उन्होंने कहा उतरिये, यहाँ नमाज़ पढ़िये, यह तूरेसेना है जहाँ अल्लाह ने मूसा से कलाम किया। फिर मैं चला, और उन्होंने कहा उतरिये, नमाज़ पढ़िये, यह बैतलह्म है जहाँ ईसा अलै0 पैदा हुए थे''

अब हर साहबे ज़मीर फैसला कर सकता है कि ईसा अलै0 की विलादत का मक़ाम इस लायक हो कि वहाँ नमाज़ पढ़ी जाये तो क्या हज़रत ख़ातमुल अंबिया स0 का मकाने विलादत इसका मुस्तहिक था कि वह मुनहदिम कर दिया जाये जैसा की वहाबियों ने किया?

इसके अलावा हज़रत स0 की ताज़ीम व तकरीम और हज़रत की तरफ निस्बत रखने वाली चीज़ों का एहतराम व इकराम और उनको मुतबर्रिक समझना, इसके बकसरत शवाहिद आसार सहाबा व सल्फ सालिहीन में मौजूद हैं।

अबु उमर शैबानी की रिवायत है कि मैं इब्न मसऊद के पास एक साल उठता बैठता रहा, जिस वक़्त वह क़ाला रसूलल्लाह कहते थे, उनके जिस्म में थरथरी पड़ जाती थी।

शेख़ बद्रूद्दीन बिन इब्राहीम बिन सऊदुल्लाह इब्न जमाआ कनानी मतूफ़ी 733 हिजरी की किताब ''तज़किरतुस्सामय वलमुतकल्लिम'' मतबुआ दायरा तुलमआरिफ हैदराबाद 1353 हिजरी में है कि इमाम जाफर सादिक अलै0 के सामने जब हज़रत पैगम्बर खुदा स0 का ज़िक्र होता था तो आपका चेहरा ज़र्द हो जाता था।

इसी किताब में इमाम मालिक के लिए लिखा है कि जब हज़रत पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम का उनके सामने

ज़िक्र होता था तो उनका रंग मुतगैरयर हो जाता था और वह झुक जाते थे।

अब्दुल करीम समआनी की किताब ''अदबुलइमला व वलइसतिमला (मतबूआ बरी 1953 इसवी) में यहया बिन बकीर से रवायत हे जब मुअत्ता (मजमूआ अहादीस पैगम्बर स0) की हदीसों को पढ़-पढ़कर मालिक मुकाबला कराते थे तो पूरा लिबास अमामे के साथ पहनते थे और सर झुकाये रहते थे और जब तक उन अहादीस को लिखवाकर फारिग नहीं होते थे सर वगैरह को खुजाते भी नहीं थे, न नाक छिनकते थे, यह कैफियत उनकी इरशादाते पैगम्बर स0 की ताज़ीम व तकरीम के लिहाज़ से होती थी।

इसी किताब में मअन बिन ईसा बर्राक का बयान है कि मालिक जब अहादीस बयान करने बैठते थे तो गुस्ल करते थे और खुशबू लगाते थे, हाज़िरीन मजलिस में से कोई आवाज़ बुलन्द करता तो ख़फा होते थे और कहते थे कि ख़ालिक ने इरशाद फरमाया है कि पैगम्बर स0 की आवाज़ पर आवाज़ बुलन्द न करो, आज रसूल खुदा स0 की हदीस बयान होते वक़्त कोई आवाज़ बुलन्द करे तो वह ऐसा होगा जैसे कि उसने आप स0 की आवाज़ पर आवाज़ बुलन्द की।

अलावा दूसरे हज़रात के नवाब सिद्दीक हसन खाँ कन्नौजी ने भी लिखा है कि :- इमाम मालिक मदीने में पयादा चलते थे कि शायद उनके जिस्म से ख़ाक का कोई वह जुज़ मुत्तसिल हो जाये जिसपर रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम रास्ता चले हैं और हज़रत स0 की ताज़ीम के सबब वह मदीने से सवार होकर नहीं चलते थे और कहते थे कि मुझे शर्म आती है कि मैं सवारी पर चलूँ उस ख़ाक के ऊपर जहाँ रसूल सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम दफ़न हैं।

ताज़ीम की एक किस्म यानी बोसा लेना। इसके ख़िलाफ वहाबी

मसलक के हज़रात बहुत तशद्दुद से काम लेते हैं, मगर इसके लिए खुद हज़रत पैगम्बर खुदा स0 का रज़ामन्दाना सुकूत ही नहीं बल्कि सरीह इजाज़त भी मौजूद है और आप के बाद सल्फ सालिहीन का अमल भी जारी है। चुनान्चाः ''अदबुल इमला व लस्तिमला'' में अब्दुर रहमान बिन काब बिन मालिक की रवायत है अपने वालिद से कि मैं हज़रत की ख़िद्मत में आया तो हज़रत स0 के हाथों और दोनों घुटनों का बोसा लिया और शेख़ मुहरयुद्दीन इब्न अरबी की किताब ''मुहाजिरतुल अबरार'' में इब्न यजीद की रवायत है अपने वालिद से कि एक ऐराबी रसूल स0 के पास आया और एक मोजिज़े की ख़्वाहिश की, उस मोजिज़े को देखने के बाद कहा या रसूल अल्लाह! मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं आपके हाथों और पैरों का बोसा लूँ। आप स0 ने इसकी इजाज़त दे दी। फिर उसने कहा कि अब मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं आपको सजदा कर लूँ, हज़रत स0 ने फरमाया नहीं, किसी को किसी का सजदा नहीं करना चाहिए।

बोसा बनज़र ताज़ीम भी होता है और बनज़र मोहब्बत भी, बहरहाल इसको शिर्क़ कहना या ममनू करार देना, दोनों गलत हैं।

असाबा हाफिज़ इब्न हज़र में है कि खुद पैगम्बर खुदा स0 ने उस्मान बिन मज़ऊन रिज़वानुल्लाह अलैह की लाश का बोसा लिया और उस वक़्त आप की आँखें भीगी थीं।

बाद वफात पैगम्बर खुदा स0 हुजरये नबुवीया और रौज़ये मुकद्दसा और दूसरे मंसूबात को भी बोसा लेने पर मुसलमानों का अमल रहा और उल्मा इससे मुत्तफिक रहे, चुनानचः इमाम अहमद बिन हंबल के एक मुसाहिब ख़ास इब्राहीम हरबी के लिए शेख़ मंसूर हंबली ने हाशिया इकना में लिखा है कि उन्होंने कहा ''हुजरये नबी स0 का बोसा

लेना मुस्तहब है''

मेहदी अब्बासी के पास एक शख़्स नालैन लाया, इस इददआ के साथ कि यह रसूले खुदा स0 के पाये मुबारक तक पहुँची है। और हज़रत स0 की पहनी हुई है, तो बावजूद यह कि खुद बाद में कहा मुझे यकीन है कि यह शख़्स गलत कहता है। रसूल स0 के पाये मुबारक से यह नाल छू भी नहीं गयी है। फिर भी इस लिए खड़े होकर बोसा लिया और आँखों से लगाया कि आम मुसलमान मुझ पर बे-अदबी का इल्ज़ाम लगायेंगे कि मेरे पास रसूल खुदा स0 की नालैन लायी गयी और मैने उसकी ताज़ीम व तकरीम नहीं की। यह वाक्या शेख़ इब्न अरबी ने ''मुहाजिरतुल अबरार'' में दर्ज किया है। इससे ज़ाहिर है कि मंसूबात पैगम्बर खुदा स0 की ताज़ीम जम्हूरे मिल्लत इस्लामिया के दिल व दिमाग में मुर्तकिज़ थी।

ताज़ीम व तकरीम और तहसील बरकत ही की एक सूरत मस करना भी है, ख़्वाह अपने हाथ को रसूल स0 के जिस्म मुबारक तक पहुँचाकर या आप स0 से ख़्वाहिश करना कि आप उस पर हाथ फेर दीजिए इन दोनों बातों का वकू रसूल खुदा स0 की इजाज़त और खुद आप स0 के अमल से साबित है।

हाफिज़ इब्न हज़र अस्कलानी ने असाबा में लिखा है कि बनी बकार का वफद हज़रत पैगम्बर खुदा स0 की ख़िदमत में आया, इनमें मआविया बिन सोर बिन इबादा बहैसियत सरदार के थे, जिन की एक सौ बरस की उम्र थी, यह सब मुसलमान हुए और रूख़सत होते वक़्त माविया ने हज़रत स0 से ख़वाहिश ज़ाहिर की कि मैं आपके जिस्म मुबारक को अपने हाथ से मस करके बरकत हासिल करना चाहता हूँ, हज़रत स0 ने इसकी इजाज़त दी। फिर उन्होंने कहा मेरा यह बेटा बुशर

बड़ा सआदत मन्द है, इसके चेहरे पर हाथ फेर दीजिए, हज़रत स0 ने उसके चेहरे पर हाथ फेर दिया।

हज़रत स0 के मुहाये मुबारक की तकसीम के लिए सहहा अहले सुन्नत से पता चलता है कि वह खुद हज़रत स0 के हुक्म से हुई थी। जैसा कि सहीह मुस्लिम में है कि हज़रत स0 ने अबु तलहा अन्सारी से जिन्होंने सर मुबारक से बालों को साफ किया था फरमाया उन्हें लोगों में तक्सीम कर दो।

''महाजिरतुल अवायेल'' में है कि इन बालों को अबु तलहा ने रसूले खुदा स0 के हुक्म से तक़सीम किया और आप स0 के मुहाये मुबारक इसलिए तक़सीम किये गये थे कि वह सहाबा के पास बरकत के लिए बाकी रहे।

''जमा बैनससहीहैन'' में अब्दुल्लाह बिन मौहिब की रवायत है कि मेरे घर वालों ने मुझे रौज़ये रसूल स0 जनाब उम्मेसलमा रजी0 के पास पानी के एक प्याले के साथ भेजा, वह चाँदी का एक ज़र्फ लायीं जिस में पैगम्बर खुदा स0 के कुछ मुहाये शरीफ थे, उनमें से कुछ बाल उन्होंने उस प्याले में डाल दिये, और जब कोई बीमार होता था तो वह उसी ज़र्फ से निकाल कर कुछ बाल डाल देती थीं। और वह बीमार उस पानी को पीता था, रावी का बयान है कि मैने झुककर उस बरतन में देखा तो कुछ सुर्ख रंग के बाल थे।

काज़ी अयाज़ ने शिफा में हज़रत स0 के मोजिज़ात व बरकात में लिखा है कि हज़रत स0 के मुहाये मुबारक में से चन्द बाल ख़ालिद बिन वलीद की टोपी में थे जिनकी वजह से वह हर जंग में फतह पाते थे।

बुख़ारी की रवायत इब्न सीरी से है कि उन्होंने उबैदा से कहा कि हमारे पास कुछ मुहाय मुबारक है जो हमें अनस या उनके घर वालों

से मिले हैं। उन्होंने कहा अरे उनमें से एक बाल मेरे पास हो तो वह मेरे लिए दुनिया वमाफीहा से बेहतर है।

इसी तरह जो शै ज़रा भी रसूल खुदा स0 से ताल्लुक रखती हो, उसे हमेशा मुतबर्रिक व मुकद्दस समझा गया, चुनान्चः शिफाये काज़ी अयाज़ में है कि अब्दुल्ला बिन उमर मिम्बर रसूल स0 के उस महल पर जहाँ रसूल स0 तशरीफ फरमा होते थे, हाथ रखते थे और उसे तबर्रुकन अपने मुँह पर मलते थे।

असाबा हाफिज़ इब्न हज़र में है कि यजीद बिन असवद के जब एहतिज़ार का वक़्त था तो सहाबी रसूल स0 वासला बिन असका उनके पास आये तो उन्होंने उनका हाथ लेकर अपने मुँह पर मला और सीने पर रखा और कहा यह वह हाथ है जो रसूल स0 के दस्त मुबारक से मस हुआ है।

मुसनदे अहमद में है उम्मे सलीम से रवायत है कि हज़रत स0 ने एक मश्क से जो उनके यहाँ थी पानी नोश फरमाया था तो उस मश्क का दहाना जो हज़रत स0 के दहन मुबारक से मस हुआ था जुदा करके हुसूल बरकत के लिए रख लिया गया, और ऐसा ही वाक्या इब्न माज़ा और तिरमिजी ने कबशुल अन्सारिया के मुताअल्लिक दर्ज किया है और तिरमिजी ने हुसन सहीह लिखा है।

जमा बैनुलसहीहेन ने सहल बिन साद सहाबी के मुताअल्लिक रवायत है कि उन्होंने पैगम्बर खुदा स0 से एक चादर आपकी मांग कर हासिल की और जब लोगों ने इसके मुताअल्लिक पूछा तो उन्होंने कहा कि मैने इसे इसलिए हासिल किया कि वह मेरा कफन हो और इस तरह मैं अज़ाबे कब्र से महफूज़ रहूँ।

शिफाये काज़ी अयाज़ में है कि सहाबये पैगम्बर खुदा आपके आसारे

मुबारक को आप स0 के बाद बड़ी-बड़ी कीमतों पर हासिल करते थे।

सरे दस्त इतने शवाहिद पेश कर दिये गये हैं जो असबात मतलब के लिए काफी व वाफ़ी हैं।

बावजूद यहकि वहाबी हज़रात अपने को अह्ले सुन्नत में दाख़िल करते हैं और उनके हम ख़्याल जो हिन्दुस्तान में हैं, वह अक़्सर अपने को ''अह्ले हदीस'' कहते हैं मगर उनका मसलक जो पैगम्बर खुदा स0 से तवस्सुल की मुख़ालिफत और आप स0 के आसार व मंसूबात की ताज़ीम व तकरीम के ख़िलाफ है, सुन्नत के भी ख़िलाफ और हदीस की रौ से भी गलत है।

तीसरा बाब

वहाबी अक़ीदा अवलिया व सालिहीन के बारे में

इब्न अब्दुल वहाब को उनकी बुर्जुगी और किसी इम्तियाज़ से शिद्दत के साथ इंकार है, और उनका ऐतकाद यह था कि उनमें से किसी से भी तवस्सुल और ख़ालिक की बारगाह में शिफाअत की दरखास्त उन्हें खुदा समझ लेना है और इबादत में उसके साथ दूसरे को शरीक करना है, उसे उन्होंने और उनके ताबईन ने बड़े तूल-तवील बयानात के साथ तहरीर किया है। जिनमें से बाज़ इबारतों का मज़मून उनके नुक्तये नज़र के पूरे तौर से नुमाया करने के लिए पेश किया जाता है, फिर उनके मुंदरजात को एक-एक करके बातिल किया जायेगा।

खुद इब्न अब्दुल वहाब ने अपनी किताब ''अत्तौहीद'' में उन आयात कुर्आन के दर्ज करने के बाद जो तौहीद के बारे में और दूसरे खुदाओं की इबादत करने वाले मुशरिकीन की रद में लिखा है।

''यह शिर्क जो इन आयतों में और ऐसी ही दूसरी आयतों में मकसूद है, इसमें दाख़िल है कब्रों को पूजने वालों और अंबिया और मलायका और नेक बंदगान इलाही की इबादत करने वालों का शिर्क यही अरब के अहले जाहिलियत का शिर्क था जिसके ख़त्म करने के लिए हज़रत मोहम्मद मुस्तफा स0 की बेसत हुयी थी कि वह उनसे दुआऐं मांगते थे और उनकी तरफ पनाह लेते थे और उनसे सवाल करते थे, खुदा के यहाँ इनके तकर्रुब को अपना वसीला करार देते थे जैसा कि कुर्आन मजीद की बहुत सी आयतों में इसका ज़िक्र है। हालांकि वह उन्हें

आसमान, ज़मीन या किसी एक ज़र्रे का भी कायनात में से ख़ालिक नहीं समझते थे, मगर चूँकि इनकी इबादत करते थे लिहाज़ा वह मुशरिक करार पाये तो इसी तरह यह लोग जो औलिया व सालिहीन का वास्ता देते हैं और उनसे दुआएँ मांगते हैं।''

इसमें बुनियादी गलती यह है कि ज़ियारते कुबूर करने वालों और औलिया व मुकर्रीबीन की ताज़ीम व तकरीम करने वालों की, उनकी इबादत करने वालों की लफ़्ज़ से ताबीर की गयी है। इसके लिए यह समझने की ज़रूरत है कि इबादत के क्या माने हैं?

''इबादत'' दर हकीकत किसी ख़ास काम का नाम नहीं है बल्कि यह वह काम है जो किसी को खुदा समझने की नीयत से और इस नीयत के तकाज़े से किया जाए, इसी लिए औलाद का अपने माँ बाप के सामने झुकना और जाहिल का आलिम के सामने झुकना, एक उम्मती का सादात के सामने झुकना, किसी भी छोटे का अपने बड़े के सामने झुकना इबादत नहीं है, लेकिन मजूसियों का आग के सामने झुकना, और बुत परस्तों का बुतों के सामने झुकना इबादत है। इससे ज़ाहिर है कि शिर्क किसी काम की नौइयत से वाबस्ता नहीं बल्कि एतकाद उलहूहियत से वाबस्ता है, हो सकता है किसी को सजदा किया जाये मगर वह इबादत इसकी करार न पाये और हो सकता है कि सिर्फ आँख का इशारा हो और वह इबादत का मिस्दाक हो।

मुशरिकीन चूँकि अपने बुतों को खुदा समझते थे लिहाज़ा कहते थे कि हम इन की इबादत करते हैं (मा नाबुदूहुम इल्ला लयकरबूना इलल्लाही जुल्फी) लेकिन मुसलमान जो रसूल स0 या किसी तकररुब इलाही की ताज़ीम व तकरीम करते हैं, उनसे पूछा जाए तो वह कहेगें कि हम इनकी इबादत नहीं करते, इबादत अल्लाह की करते हैं। हाँ हम

उनकी ताज़ीम तकरीम करते हैं यहीं से उन मुसलमानों में और उन मुशरिकीन में फर्क़ ज़ाहिर है।

इस तरह की ताज़ीम व तकरीम शिर्क़ नहीं हो सकती जबकि वालिदैन के लिए ख़ालिक ने खुद हुक्म दिया कि ''इनके सामने अपने को तज़लुल व आजज़ी के साथ झुकाये रहा करो'' यह ताज़ीम का हुक्म नहीं तो और क्या है? और इरशाद फरमाया कि।

''जो शआयरे ईलाहिया की ताज़ीम करे तो यह तकवा व परहेज़गारी का एक जुज़ है'' और इस तरह अल्लाह की हुरमतों की ताज़ीम के लिए फरमाया और हज़रत पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम को हुक्म दिया कि :

''अपने बाजू झुकाइये इसके लिए जो मोमिनीन में से आप का पूरा मुतब्बे है'' सबसे बालातर यह कि हक़ ताला ने मलायका मुकर्रबीन को हुक्म दिया कि वह अबुल बशर जनाब आदम अलै0 को सजदा करें और इब्लीस को सजदा न करने पर मतरूद व मरदूद करार दिया और सूरह यूसुफ में है कि हज़रत युसूफ़ अलै0 ने ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और चाँद सूरज उन्हें सजदा कर रहे हैं और फिर उसकी ताबीर यूँ वक़ू में आई कि उन्होंने अपने बाप को जो नबी खुदा हज़रत याकूब थे और अपनी वालिदा को बुलन्द तख़्त पर बैठाया तो उन दोनों ने और तमाम भाईयों ने जो ग्यारह थे, उन्हें सजदा किया।

शरीयत इस्लाम में अल्लाह के सिवा किसी के लिए सजदे का रवा न होना एक हुक्म शरई है लेकिन साबिक शरियतों में इस का जाएज़ होना और वकू में आना इसकी तो दलील कतई है कि वह शिर्क नहीं है क्योंकि उसूल दीन में तमाम अंबिया मुत्तहिद है। जो शय दाख़िले शिर्क हो वह किसी भी शरीअत में जाएज़ नहीं हो सकती।

इस सब से यह अम्र पाये सुबूत तक कतई तौर पर पहुँच जाता है कि हर ताज़ीम इबादत नहीं है इबादत की बुनियाद खुदा समझने पर है और जो मुसलमान अंबिया व औलिया व मुकर्रबीन की ताज़ीम करते हैं, उनके ज़हन में हरगिज़ उनके खुदा होने का तस्ववुर नहीं होता बल्कि वह यकीनी तौर पर सिदक दिल से जानते हैं कि यह अल्लाह के बन्दे हैं जिन्होंने अपनी पूरी उमर उस की इबादत और इताअत में सर्फ की है और उसकी राह में उन्होंने कुर्बानियाँ दी हैं। इसी लिए वह हमारी ताज़ीम व तकरीम के मुस्तहिक हैं तो यह ताज़ीम दर हक़ीक़त अल्लाह की ताज़ीम है जो ऐन तौहीद है और यह ताज़ीम गैरूल्लाह की जो अल्लाह की तरफ निस्बत ख़ास के पेश नज़र है, ताज़ीम इन अफराद की है लेकिन वह इबादत इनकी नहीं है, बल्कि उसकी इबादत है जिसकी तरफ इन्तिसाब से इनकी ताज़ीम हो रही है।

और दुआ वह बराहे रास्त इनसे नहीं होती कि हम उन्हें हाजत बरारी के लिए खुदा से बेनियाज़ होकर काफी समझते हो बल्कि मतलब यह होता है कि यह जो बारगाह इलाही में उसकी इताअत व इबादत की वजह से कुर्ब हासिल किये हुए है, हमारे लिए उसकी बारगाह में हाजत बरारी के लिए दुआ करें और यह आम मोमीनीन के लिए आपस में वारिद हुआ है कि एक की दुआ दूसरे के बारे में बसा अवकात मुस्तजाब होती है और चूँकि हम उन्हें ज़िन्दा समझते हैं जैसा कि शुहदा के बारे में सराहतन कुर्आन में है। तो हम उनसे मुख़ातिब होकर भी मदद के लिए जो कहते हैं, इसका भी मतलब यह होता है कि वह अल्लाह की बारगाह में हमारे लिए अर्ज व मारूज़ करें या मर्ज़ी बारी के मातहत इसके इजन से खुद मदद कर दें, और इस तरह अल्लाह के फेल की निस्बत गैरुल्लाह की तरफ कुर्आन मजीद से साबित है, जैसे वफात का देना अल्लाह का

काम है। इरशाद हुआ है कि अल्लाह नुफूस को वफात देता है, उनकी मौत के वक़्त और दूसरी जगह इसकी निस्बत मलकुलमौत की तरफ है। इरशाद हुआ है :- कहिए कि तुम्हे वफात देता है मौत का फरिश्ता और तीसरी जगह उसकी निस्बत इन फरिश्तों की तरफ दी गयी है जो मलकुलमौत के मातहत है।

इरशाद हुआ कि वह जिन्हें फरिश्ते वफात देते हैं दर हलाँकि वह अपने नुफूस पर सित्म ढाने वाले हैं, इसी तरह अताये रिज़्क या औलाद की निस्बत किसी की तरफ हो तो उसमें कोई हर्ज नहीं जबकि कहने वाला अक़ीदा यही रखता हो कि अस्ल अता करने वाला खुदा वन्द आलम है और वह अगर अता करेंगे तो इसके हुक़्म से या खुद उसकी बारगाह में सिफारिश के ज़रिये से।

सुनन अबु दाऊद में ख़बीर बिन मतअम की रवायत है कि एक ऐराबी ने हज़रत स0 के पास आकर कहतसाली का हॉल बयान किया और मक़सूद इसका यह था कि हज़रत स0 तलबे बाराँ फरमाऐं मगर उसने यह कहा कि हम अल्लाह से सिफारिश कराते है आप के यहाँ और आप की शिफाअत चाहते हैं अल्लाह की बारगाह में, पहले जुमले पर हज़रत स0 ने कई दफा तसबीह इलाही फरमायी और इरशाद फरमाया कि उसकी ज़ात बरतर है इससे कि उसको किसी के पास शिफाअत के लिए पेश किया जाये। इससे ज़ाहिर है कि आप स0 ने इस फिकरे पर आप बारगाह इलाही सिफारिश कीजिए कोई एतराज़ नहीं फरमाया।

हाँ जो शख़्स इन हज़रात को अल्लाह का (मआज़ अल्लाह) बराबर समझे और अल्लाह के मुकाबले में उन्हें हाजत रवा और कारसाज़ माने उसे हम भी मुशरिक समझते हैं।

इब्न अब्दुल वहाब का कौल है कि-

''जो कुछ मुसलमानों का औलिया व सालिहीन के साथ अमल है, यही बस मुशरिकीन अरब का अमल था।''

यह अजरुए कुर्आन दुरूस्त नहीं है क्योंकि कुर्आन मजीद से साबित है कि वह अपने असनाम को ''अल्लाह'' कहते थे यानी खुदा समझते थे और इसलिए वह खुदा की इबादत से अपने को बेनियाज़ समझते थे, चुनानचः कुर्आन में है कि ''उन्होंने पैगम्बर के लिए कहा कि यह हमें हमारे खुदाओं से गुमराह किये देता है।''

सूरहः साफात में है कि वह कहते हैं कि ''क्या हम एक दिवाने शायर की ख़ातिर अपने खुदाओं को छोड़ दें?''

सूरहः स्वाद में है कि उनकी जवानी रसूल के लिए कि उसने बहुत से खुदाओं को एक खुदा बना दिया, यह अजीब बात है।''

सूरहः शोअरा में है अहले दोज़ख़ की ज़बानी कि ''वह अपने माबूदों से कहेंगे कि हम खुली हुई गुमराही में थे, तुम्हें परवरदिगार आलम्या के बराबर करार देते थे।'' इससे ज़ाहिर है कि वह अपने माबूदों को अल्लाह के बराबर करार देते थे।

सूरहः अहकाफ में है कि उन्होंने कहा ''तुम आये हो कि हमें हमारे खुदाओं से हटाओ।''

सूरहः नूह में है कि वह मुशरिकीन कहते हैं कि अपने खुदाओं को कभी न छोड़ना, दकुआ, सुवा कू, यागौस और यउक और नसर को'' (यह सब उनके बुतों के नाम है जिन्हें वह साफ-साफ खुदा कह रहे हैं)

सूरहः हूद में है कि ''हम हरगिज़ इन खुदाओं को नहीं छोड़ेगें,'' फिर है कि ''हम समझते हैं कि हमारे खुदाओं में से किसी ने तुम्हें कुछ नुकसान पहुँचा दिया है।'' और खुद खुदावन्द आलम ने इरशाद फरमाया है कि नहीं फायदा पहुँचाया उन्हें उनके खुदाओं ने जिन्हें वह

अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे कुछ भी।''

और सूरहः हजर में है कि ''हम ने आप को बचाया उन मज़ाक उड़ाने वालों से जो अल्लाह के सिवा दूसरा खुदा बनाते हैं।''

और सूरहः बनी इस्राईल में है कि ''अगर उसके साथ और खुदा होते जैसा कि वह कहते हैं तो इस वक़्त वह अर्श के मालिक के मुकाबले में कोई सूरत निकाल लेते।''

और सूरहः मरयम में इरशाद हुआ है कि ''इन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर बहुत से खुदा बना लिये हैं ताकि वह उनके लिए बाइसग़ल्बा हो, हरगिज़ नहीं, बहुत जल्द वह उनकी इबादत से इंकार करेंगे और खुद उनके फरीक मुख़ालिफ होंगे।''

और सूरहः अंबिया में इनकी ज़बानी इरशाद हुआ है कि ''क्या यही वह शख़्स है जो तुम्हारे खुदाओं का ज़िक्र किया करता है?''

फिर है जब हज़रत इब्राहीम ने बुतों को तोड़ डाला।

उन्होंने कहा कि किसने हमारे खुदाओं के साथ यह सुलूक किया? यकीनन वह ज़ालिमों में से है।''

फिर है

''उन्होंने (इब्राहीम अलै0) से कहा क्या तुमने हमारे खुदाओं के साथ यह सुलूक किया है ऐ इब्राहीम''

''फिर इरशाद हुआ कि उन्हें आग में डाल दो और अपने खुदाओं की मदद करो''

और सूरहः फुरक़ान में है,

उन्होंने उसे छोड़कर ऐसे खुदा बनाये है जो किसी चीज़ को ख़ल्क नहीं कर सकते और वह खुद ख़ल्क किये गये हैं।''

इस सब से ज़ाहिर है कि वह मुशरिकीन अपने बुतों को बिला

तकल्लुफ इलाह यानी खुदाओं की लफ़्ज़ से ताबीर करते थे। इसके बरख़िलाफ किसी मुसलमान से जो पैगम्बर अकरम सल्लल्लाहु अलैही व आलिही वसल्लम या औलिया व मुकर्रबीन में से किसी की ताज़ीम करता है पूछा जाये कि तुम उन्हें खुदा समझते हो और इनकी इबादत करते हो? तो वह हरगिज़ इसका इक़रार न करेगा बल्कि शिद्दत के साथ इंकार करेगा, इसी से उन मुशरिकीन और मुसलमानों में फर्क ज़ाहिर हो जाता है।

मुसलमानों के लिए यह कहना ''उनका नमाज़ रोज़ा वगैरह सब अवाम को धोखा देने के लिए है और अपने शिर्क को इस्लाम के दामन में छुपाना है, इसके मुकाबले में कोई शख़्स इतने ही बुलन्द आहन्ग के साथ यह कह सकता है कि नजदी वहाबियों का नमाज़, रोज़ा और हज वगैरह सब नुमायशी है और इसका हक़ीक़त से कोई वास्ता नहीं है। जब कि वह उस रसूल स0 की अज़मत के मुन्कर हैं जिनकी बदौलत इनको यह सब बातें याद हुई हैं।

ज़ाहिर है कि इस तरह एक दूसरे को कहना कोई इल्मी बहस का अन्दाज़ नहीं रखता इसलिए इस पर ज़्यादा लिखना तज़ीय अवकात है।

चौथा बाब

वहाबी अक़ीदा तमाम अत्राफ़े आलम के मुसलमानों के बारे में

वहाबी लोग अपने सिवा तमाम दुनिया के मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक समझते है। आलोसी ने "तारीख नजद" में एक अहम वहाबी आलम शेख अब्दुल लतीफ बिन अब्दुर्रहमान इब्न मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब नजदी की एक तूल तवील इबारत नकल की है- जिससे मालूम होता है कि तमाम मुसलमानाने आलम पर उनके क्या इल्जामात है जिन में से बहुत सी बातें झूठ हैं और बाज सच है मगर इनको गलत कहना गलत है मसलन यह कि वह अल्लाह से मुहब्बत के बजाय गैरुल्लाह से मुहब्बत करते हैं। हालँकि रसूल स0 और आले रसूल या दीगर अवलिया व मुतकर्रबीन से जो लोग मुहब्बत करते हैं वह अल्लाह के मुकाबले में मुहब्बत नहीं है बल्कि अल्लाह की खातिर है या उस के लिए कि उन्होंने उस के दीन के खातिर कारनामें अन्जाम दिए है। उस की राह में कुर्बानियां पेश की है। ऐसी मोहब्बत एक फरीज़ा दीनी की हैसियत रखती हैं। चुनान्चे ज़ाबिल कुर्बा की मोहब्बत को आय मवद्दत में अजरे रिसालत कह के तलब किया गया है। तो जिसने इस मुहब्बत से इन्हराफ किया, उसने रसूल स0 का हक अदा नही किया और एक जगह इरशाद हुआ कि वह जो इमान और अमल सालेह रखते हैं, उनके लिए अल्लाह एक मोहब्बत करार देता है। यानी उस मुहब्बत को फर्ज़ करार देता है और हजरत इबराहीम अलै0 की जबानी है कि-

"परवरदिगार! मैंने अपनी औलाद में से कुछ को तेरे घर के पास रखा है। परवरदिगार ! इसलिए कि वह नमाज़ कायम रखें तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ झुका दे कि उनसे मोहब्बत करें।"

और सूरह बरात में है कि

"अगर तुम्हारे बाप, दादा, औलाद- वगैरह-वगैरह खुदा और रसूल स0 से ज्यादा तुम्हें महबूब हों तो अजाब के मुन्तज़िर रहो।"

यहां खुदा के साथ मकाम मुहब्बत में रसूल स0 का नाम लिया है।

अनस की रवायत है कि पैगम्बर खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया।

"तुम में से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसे उसके बाप, बेटे और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हूँ।"

इसकी बुख़ारी और मुस्लिम दोनों ने तखरीज की है और सनन इब्नमाजा में अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब से रवायत है कि

"रसूल खुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलीहीवसल्लम ने फरमाया कि बाखुदा किसी के दिल में इमान दाखिल नहीं हो सकता जब तक मेरे अहले बैत से मुहब्बत ने करे, अल्लाह की खातिर और मेरी क़राबत के लिहाज से और हजरत स0 ने हजरत अली अलै0 के लिए रोज खैबर फरमाया कि मैं कल उसे अलम दूंगा, जिससे खुदा और रसूल मुहब्बत रखते हैं और वह खुदा और रसूल से मुहब्बत रखता है।"

उसे भी बुखारी व मुस्लिम दोनों ने दर्ज किया है। नेज खुद हजरत अली अलै0 से खिताब कर के फरमाया!

"ऐ अली। तुम्हारी मुहब्बत ईमान और तुम से बुगज कुफर व निफाक है।" और ऐसी ही बकसरत हदीसें हैं।

अब यह लोग जो मोहब्बते रसूल बगैरा को असबाब शिर्क में दख़िल कर रहे हैं, तो बदीही तौर पर यह जाहिर है कि इनके दिलों में जर्रा भर रसूल और आले रसूल की मुहब्बत नहीं है। जिस के बाद

बनस्से रसूल स0 ईमान की दौलत से महरूम होना जाहिर है। लेकिन जो वाकई साहबे ईमान है, वह इनकी मोहब्बत का परवरदिगार आलम की तरफ से एक फरीज़ा समझते हैं।

और इब्न अब्दुल वहाब की किताब अत्तौहीद के शारह का यह कहना है कि यह इन से अल्लाह से ज्यादा मोहब्बत करते हैं और यह इन की राह में इतना खर्च करते हैं जिसका अशरे अशीर भी अल्लाह के लिए सर्फ नहीं करते, बिल्कुल गलत है बल्कि यह इन से मोहब्बत अल्लाह की मोहब्बत के सबब से करते हैं और जो कुछ इनके नाम पर खर्च करते हैं वह भी अल्लाह की खुशनूदी के लिए करते हैं।

अजीब बात है कि यह लोग अमवात के कुबूर की ज्यारत और उनकी तरफ से खैर खैरात और तवस्सुल की बिना पर मुसलमानों को काफिर क़रार देते हैं और इनके बहुत बड़े इमाम फख़रुद्दीन राजी इन चीजों को उन बातों में करार देते हैं जिन पर तमाम मज़ाहिबे आलम के अफराद मुत्तफिक है और जो आम फितरते इन्सानी का तकाज़ा है चुनानचः व तफसीर कबीर में इस आयत के तहत में कि लोग आपसे रूह के बारे में दरयाफ्त करते हैं, बकाए रूह के दलायल के ज़ेल में लिखते हैं।

"दसवीं दलील यह है कि हिन्दू और रोम और अरब व अजम तमाम दुनिया के अहले मजाहिब, यहूदी हों या नसरानी या मजूसी या मुसलमान सब अपने अम्वात की तरफ से खैर खैरात करते हैं, उनके लिए खैर करते है और उन की कब्रों की ज्यारत को जाते है। अगर यह सब यह न समझते होते कि मरने के बाद भी वह किसी न किसी तरह की जिन्दगी रखते है तो उनका यह फेल अबस होता इन सब का मुत्ताफिक होना इस खैर खैरात पर इसकी दलील है कि यह फितरी तौर पर बिला

इख़्तिलाफ यह मानते हैं कि असल इन्सान इस जिस्म के अलावा कोई जुज़ है और वह जुज़ इस जिस्म के मुर्दा होने के साथ मुर्दा नहीं हो गया।"

अहादीस पैगम्बर खुदा स0 से भी इस का सुबूत मिलता है चुनान्चः सहीह मुस्लिम में यह रवायत है कि

"बड़ा हुसन अमल यह है कि अपनी नमाजों के साथ अपने मां बाप के लिए नमाजें पढ़ो और अपने रोज़ों के साथ अपने माँ बाप के लिए रोज़े रखो।"

इस हदीस के मुताल्लिक इब्राहीम बिन ईसा तालकानी ने अब्दुल्लाह बिन मुबारक से दरयाफ्त किया तो उन्होंने कहा कि इस हदीस की सनद में तो नुकस है मगर अम्वात की तरफ से तसददुक में इख़्तिलाफ कोई नहीं है।

"महाजिरतुलअब्रार" इब्न अरबी मो दो जगह जिल्द अव्वल व जिल्द दोम में अनस बिन मालिक की रवायत यह है किः

"किसी मैय्यत की तरफ से जो खैरात की जाती हे, उसे नेएमे इलाही की सूरत में फरिश्ते लेकर उसकी कब्र के पास जाते हैं और पुकार कर कहते हैं यह तेरे लिए तोहफा भेजा गया है।"

वहाबी तसव्वुर कि यह लोग खुदा समझ कर मोहब्बत करते हैं और झुकते है ओर उम्मीद वाबस्ता करते है, इसमें पहला जुज़ कि वह खुदा समझते है, बिल्कुल गलत है। हाँ मोहब्बत करते हैं जिस के मुत़ाअल्लिक तशरीह हो चुकी है और यह कि वह झुकते है, दुरूस्त है लेकिन वह खुदावन्दी निस्बत के पेश नज़र रखने की वजह से झुकना, हकीकतन अल्लाह के लिए झुकना है, न कि ज़ातन इन अशखास और इन चीजों के लिए और उम्मीद अल्लाह से है, इनके वसीले से, न कि

जातन उन से। खौफ व रज़ा यानी डर और उम्मीद के बारे में इमाम अबु हनीफ़ा नोमान बिन साबित की तशरीह किताब "अलआलिम वलमुतआल्लिम" में हैः मुतअल्लिम का सवाल यह है कि जो किसी से खौफ करे या उम्मीद वाबस्ता रखे तो क्या वह काफ़िर है? इस का जवाब जो अलिम ने दिया है, वह यह है किः

"रजा और खौफ यानी उम्मीद और डर की दो सूरतें है एक यह कि कोई शख़्स किसी से उम्मीद करे या उससे डरे यह समझते हुए कि वह खुद अल्लाह को छोड़ कर किसी ज़रर रिसानी या नफा रिसानी की कुदरत रखता है तो यह शख्स काफ़िर है और दूसरी सूरत यह है कि किसी से उम्मीद रखता हो या किसी से डर रहा हो खैर की उम्मीद या अजमाइश के खौफ की वजह से अल्लाह की तरफ से कि शायद अल्लाह इसके जरिए मुझ तक खैर पहुंचाए, या इस के हाथों मुझ पर कोई मुसीबत नाज़िल करे या किसी नेमत को सल्ब करे तो ऐसा शख़्स काफिर नहीं होगा, इसलिए कि बाप भी बेटे से उम्मीद रखता है कि वह उसे फायदा पहुंचाएगा और कोई शख़्स अपनी सवारी के जानवर से उम्मीद रखता है कि वह उसे मन्ज़िल तक पहुंचाएगा और बादशाह से उम्मीद रखता है कि वह उसकी दादरसी करेगा और इन बातों से कुफ़र लाज़िम नही आता। इसलिए कि इसके ज़हन में यह है कि असल मरकज नफा व ज़रर अल्लाह है मगर वह शायद इस बेटे के जरिए से मेरी मदद करादे या उस बादशाह के हाथ मेरी दादरसी करादे, इसलिए ऐसा शख्स काफिर नहीं है। इसी तरह खौफ़, कुरआन मज़ीद में हजरत मूसा अलै0 की ज़ुबानी है कि मुझे डर है कि कहीं यह लोग मुझे कत्ल न करें, मालूम हुआ कि असबाब ज़ाहिरी की बिना पर किसी से खौफ़ भी बाअसे से कुफ़र नहीं है।"

यह कहना कि लोग ख़ुदा को छोड़ कर दूसरों से दुआ मांगते है तो यह पहले बयान हो चुका है कि दूसरों से ज़ातन दुआ नहीं मांगते बल्कि मतलब यह होता है कि वह अल्लाह की बारगाह में इनके लिए दुआ करें या वह इजाज़त दे तो इसकी दी हुई ताक़त (ख़ुद इसकी मदद करे, इस के अलावा इनके वसीले से ख़ुदा वन्द आलम की बारगाह में दुआ माँगते हैं और तवस्सुल को शवाहिद पैग़म्बर खुदा स0 के बारे में वहाबी अकीदों के बाब में दर्ज हो चुके हैं। कुछ मज़ीद शवाहिद यहा दर्ज किए जा रहे है,

सुनन इब्नमाजा में अबु सईद ख़दरी से रवायत है किः

"हज़रत पैग़म्बर ख़ुदा स0 ने फ़रमाया कि जो अपने घर से नमाज़ के लिए निकले यह कहे, ख़ुदावन्द! मैं तुझसे सवाल करता हूँ इन अफ़राद के हक़ का वास्ता देकर जो तेरी बारगाह के सायल हैं और तुझसे सवाल करता हुँ अपने इस रास्ता तै करने के हक़ से जो तेरी तरफ़ है इसलिए कि मैं न किसी नफसानियत की वजह से निकला हूँ, न शर और फ़साद के लिए, न दिखाने और सुनाने के लिए, मैं निकला हुँ सिर्फ तेरी नाराज़गी से बचने के लिए और तेरी खुशनूदी की तलब में तो मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि मुझे आतिशे दोज़ख़ से पनाह में रख और मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा कि सिवा तेरे कोई नहीं जो गुनाहो को माफ़ करे"

इसे हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती ने जामय कबीर में भी दर्ज किया है। और हाफ़िज़ अबु ग़यमि असफहानी ने "अमलुलयौम वल्लयल" में अबुसईद ख़दरी से रवायत दर्ज की है कि

"हज़रत रसूल ख़ुदा स0 जब नमाज़ के लिए बरआमद होते थे तो कहते थे कि ख़ुदावन्द मैं तुझसे सवाल करता हूँ तुझसे सवाल करने

वालों के हक़ का वास्ता देकर और अपने मक़सद से निकलने के हक़ के वास्ते से कि मै ज़ाती हवा व हवस से नहीं निकला हूँ, न दिखाने और सुनाने के लिए मैं निकला हूँ तेरी खुशनूदी की तलब में और तेरी नराज़गी से बचने के लिए तो मैं तुझ से सवाल करता हूँ कि मुझे आतिशे दोज़ख़ से महफूज़ और मुझे बहेशत में दाख़िल फरमा"

और सुयूती ने भी किताब अद्दावात में अबु सईद ख़ुदरी से इसकी रवायत की है।

बुजुर्गों का अमल भी मुतर्क़रबीन से तवस्सुल पर जारी रहा चुनान्चे हाफ़िज़ इब्नहजर अस्क़लानी ने अपनी किताब "खैराते हिसान फी मनाक़िब इमाम अबु हनीफा नोमान" में पच्चीसवीं फ़सल में दर्ज किया है कि

"इमाम शाफ़ई जब बग़दाद में थे तो इमाम अबु हनीफा की ज़रीह के पास आते थे, उन्हें सलाम करते थे और अपनी हाजत के पूरा होने के लिए उन से तवस्सुल करते थे।"

अल्लामा इब्न हजर मक्की ने इमाम शाफ़यी के अशआर दर्ज किए है जो उन्होंने अहलेबैत रसूल स0 को मुख़ातिब करके कहे थे जिनका मज़मून यह है कि -

"आले रसूल स0 मेरा ज़रीया है और वह इस बारगाह में मेरा वसीला है। उन्हीं के वास्ते से मुझे उम्मीद है कि फ़र्दाये क़यामत में मेरे दाहिने हाथ में मेरा नामाए आमाल दिया जाएगा।"

पैग़म्बर ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के साथ तवस्सुल की बहस में खलीफ़ा दोम उमर का जनाब अब्बास अम्म रसूल स0 को तलबे बारान के लिए ले जाना बयान हो चुका है।

यहां इस में कुछ इज़ाफा किया जाता है कि इब्न असीर जज़री

ने "असदुल गाबा" में लिखा है कि

उमर बिन खत्ताब ने कहतसाली की शिद्दत में अब्बास के ज़रिए से तलबेबाराँ किया और ख़ुदा बन्द आलम ने बाराने रहमत नाज़िल किया तो उमर ने कहा बख़ुदा यह वसीला हैं अल्लाह की तरफ़ और यह मक़ाम व मर्तबा है उसकी बारगाह में और हस्सान बिन साबित ने इस मज़मून के अशआर कहें कि ''जब मुसल्सल कहतसाली रही तो सबने खुदा से सवाल किया और बादल ने अब्बास के चेहरे की बरकत से सेराबी अता की, रसूल स0 के चचा और उनके वालिद के भाई और वह जो दूसरे लोगों को छोड़कर आपके वारिस हैं इन्हीं के ज़रिए से अल्लाह ने इन शहरों को जिन्दा किया और वह ख़ुश्क होने की हालत के बाद तरोताज़ा हो गए और जब बारिश हुई तो लोग अब्बास के हाथों को मस करके अपने मुंह पर मलने लगे और कहते थे मुबारक हो आपको ऐ हरमैन के सैराब करने वाले, और हाफिज़ इब्न हजर की रिवायत में जो इब्न अब्बास रज़ी0 की ज़बानी है कि उमर ने दुआ में कहा ख़ुदाबन्दः हम तुझ से तलबे बाराँ करते हैं अपने पैगम्बर के चचा के ज़रिए से और उनकी सफ़ेद दाढ़ी को शफ़ाअत के लिए पेश करते हैं।"

इससे मालूम होगा कि उनको जो नेकूकार और परहेज़गार अशख़ास और मुक़र्रीबीना इलाही से तवस्सुल करें इस आयत की ज़द में लाना कि जिन्हें मुशरिकीन पुकार रहे है, खुद अल्लाह के यहाँ किसी वसीले की फ़िक्र में है जिसे इब्न अब्दुल वहाब ने किताब अलतौहीद में दर्ज किया है और कहा है, इसमें उन मुशरीकिन की रद है जो नेक आदमियों से दुआ करते हैं और यह बहुत बड़ा शिर्क है। हालांकि इसके मुक़ाबले से सूरह मायदा में ख़ालिक का खुद हुक्म मौजूद कि अल्लाह के यहां के लिए वसीला, हासिल करो।" उसे नज़र अन्दाज़ करके वसीला

अख़्तियार करने को शिर्क करार देने का नतीजा यह है कि उमर फारूक क़ाफ़िर और मुशरिक हों और अपने इस कौल की वजह से जो उन्होंने जनाब अब्बास रजी0 के लिए कहा कि यह बख़ुदा अल्लाह के यहाँ के लिए वसीला और इसके यहाँ मन्ज़िल और मरतबा है। हकीकत यह है कि मुशरिकीन की मज़म्मत वसीला बनाने पर इसलिए हुई है कि वह ऐसी चीजों को वसीला बनाते थे जो तवस्सुल के लायक नहीं है यानी बेजान पत्थरों के बुत को जबकि ख़ुदाबन्द आलम ने उनकी ताज़ीम और इससे तवस्सुल का हुक्म नहीं दिया है इसलिए बाज़ जगह है कि यह ऐसों को पुकारते है जिनके लिए अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी है लेकिन इसकी बारगाह में अपने हुस्ने अमल और अताअत और इबादत से कुर्ब हासिल करने वाले, उनकी ताज़ीम व तकरीम की खुद अल्लाह की तरफ़ से हिदायत है, लिहाज़ा उनसे तवस्सुल शिर्क क्यों कर हो सकता है? चुनानचः मुसलमानों में हर दौर में सालिहीन व मुर्क़रीबिन के साथ तवस्सुल और उनके कुबूर पर हाज़िरी और दुआ को हाजत बरारी का ज़रिया समझना सलफ़ सालिहीन में बराबर जारी रहा।

असाबा हाफिज इब्न हजर में अब्दुररहमान बिन रबीअ बिन कअब के ज़िक्र में है कि उन्हें ख़लीफा सानी उमर ने बाब व अबवाब पर आमिल बनाया और तुर्कों से जंग के लिए भेजा और वह वहीं तुर्किस्तान में दफ़न हुए और वहां के लोग आज तक उनकी क़ब्र के ज़रिए तलवे बारां करते हैं।

और यज़ीद बिन असवद के ज़िक्र में है कि सलीम बिन आमिर का ब्यान है : दमिश्क़ में कहत पड़ा, माविया ने यजीद इब्न असवद के वास्ते तलवे बारां किया जिस से बारिश हुई।

शेख इब्न अरबी ने 'महाजिरतलु अबरार' में लिखा है कि

अलीबिन अमरु कातिब ने कर्तबा में बयान किया कि मुझ से अबुल क़ासिम इब्न बश्कवाल मुहददिस ने यह अशआर अबु सईद बिन फ़ाजिल के सुनाए और उनकी क़बर क़र्तबा में इसी तरह हाजतों के पूरे होने में मशहूर है जैसे मारूफ़कर्ख़ी की कब्र बग़दाद में और मुफ़्ती मोहम्मद रज़ा साहब अन्सारी ने अपनी किताब "बानी दर्सनिज़ामी" में मुल्ला निज़ामुद्दीन फ़िरन्गी महल के हाल में तहरीर की है लिखा है कि मौलाना इनायत अल्लाह फिरन्गी महल ने लिखा है :

"क़ब्रे मुबारक इस वक्त भी मुफ़ीदे खास व आम और ख़ास कर मरीज़ाने इल्म के लिए नुस्ख़ऐ शिफा है, मशहूर है कि जिसको मतलब किताब का समझ में न आता हो, किताब खोलकर मज़ारे अकदस पर हाजिर रहें और रुहानियत हज़रत से तवज्जोह करे फौरन मतलब समझ में आ जाएगा ''वहुवा मुजर्रिब"

(तज़किरा उल्माए फ़िरन्गी महल मतबूआ सन् 181)

शियों में उमूमन और बाज़ अहले सुन्नत का भी अमल है कि गिरने लगते है तो "या अली" कहते हैं। और संभल जाते हैं, मैने जैसा कि "सफ़रनामा हज़" में लिखा है मुझे मदीना मुनव्वरा में यह मुशाहिदा हुआ कि चलने में मुझे ठोकर लगी और गिरने लगा तो एक दुकान पर से आवाज आयी "या रसूल अल्लाह" और मैं संभल गया।

हक़ीक़त के लिहाज़ से "या रसूलअल्लाह" और "या अली" कहने में कोई फ़र्क नहीं है। वहाबी मसलक के लिहाज़ से दोनों ही शिर्क है। अहले सुन्नत के एक बड़े तबके में "या शेख अब्दुल क़ादिर" का रिवाज है, मुफ़्ती मुहम्मद रज़ा अन्सारी ने इसी किताब में यह बयान किया है कि मुल्ला निज़ामुद्दीन ने कुछ लोगों को जो उनके पास इल्तिमास के लिए

हाज़िर हुए थे कहा कि तुममें से जो शख्स ज़्यादा दीनदार हो "या शेख अब्दुल क़ादिर शूयाल्लाह" जिस कदर मुमकिन हो विर्द करे, फिर उस पर फुट नोट में लिखा है :

"इस विर्द के जवाज़ और अदम जवाज़ के बारे में उल्मा में एखतिलाफे राये है। बाज उल्मा इसके पढ़ने की मुमानियत करते हैं। कोई सौ साल पहले इस सिलसिले में एक साहब ने जिन उल्मा से इस्तफता किया था उनमें मौलाना रशीद अहमद नान्गोरी देवबन्दी भी थे, उन्होंने भी कुललियतन इस विर्द को ममनू नहीं क़रार दिया हैं इन उल्मा के जवाबात किताबी शक्ल में शाय हुए है। किताब का नाम है। ''फतवा जवाज़ या शेख अब्दुल कादिर शयल्लाह" मौलाना अशरफ़ अली थानवी ने भी इस की इजाजत दी है। इनकी तहरीरी इजाज़त मौलाना मुहम्मद वासिक़ अलयक़ीन सज्जादा नशीन कुर्सी जिला बाराबंकी और मौलाना मुहम्मद नासिर फिरंगी महल (हफीद मुल्ला निजामुद्दीन) के पास मैंने खुद देखी है।"

यह कहना कि यह मुसलमान कबरों पर अकूफ करते हैं यानी वहां जमकर बैठते हैं तो यह ज़ाहिर है कि यह जम कर बैठना अगर तिलावत कुर्आन और तसबीह व मुनाजात और नेक आमाल के लए हो या उन लोगों की मदद के लिए जो इस क़बर की ज़ियारत के लिए आते हैं तो इस में हर्ज क्या है? वह कारख़ैर में एआनत की हैसियत रखता है।

उन इल्ज़ामात में से जो ख़ुश अकीदा मुसल्मानों पर है। एक बड़ी शिद्दत के साथ पेश किया जाता है कि वह इन बारगाहों की चौखट का बोसा लेते हैं मगर इस के कुफ़र शिर्क होने पर कोई दलील नहीं है जब कि ताज़ीम शायेर इलाहिया का हुक्म उमूमी मौजूद है और यह बोसा भी अकसामे ताज़ीम में से है जिसका हुक्म हजरे असवद के

लिए मौजूद है और इसके अलावा किसी चीज को बोसा लेने की मुमानियत नहीं है तो यह ताजीम के उमूमी हुक्म में दाख़िल रहेगा और पहले आ चुका है उम्मुल मोमिनिन आयशा का बयान है कि रसूल ख़ुदा स0 ने उस्मान बिन मज़ऊन की लाश का बोसा लिया और मैनें देखा कि हज़रत स0 के आँसू रुख़सार हाये मुबारक पर जारी है। इसका शेख़ सुलेमान बलख़ी कन्दरोजी ने पंयंनावयअलमवदत्त में ज़िक्र किया है और इब्न अब्बास और आयशा दोनों की रवायत है कि ख़लीफा अव्वल अबुबकर ने पैग़म्बर खुदा स0 की वफ़ात के बाद आप की लाश का बोसा लिया,उसे इब्न माज़ा ने अपने सुनने में दर्ज किया है और कबर का बोसा लेने के लिए हज़रत पैग़म्बर ख़ुदा स0 की हदीस किफाया शाबी और ***फतावायु गराऐब*** और ***मतालिबुल मोमिनीन*** और ***खजानतुर्वाया*** में है कि अपने माँ बाप की क़ब्र का बोसा लेने में कोई हर्ज नहीं है। इसलिए कि एक शख्स पैग़म्बरे ख़ुदा स0 के पास आया और कहा कि या रसूल अल्लाह! मैंने क़सम ख़ाई है कि मैं बहेश्त की चौखट और हूरैन की पेशानी का बोसा लूँगा, अब मैं किया करूं? हज़रत स0 ने फ़रमाया कि माँ के पैर और बाप की पेशानी का बोसा ले लो। उसने कहा कि या रसूल अल्लाह! अगर मेरे माँ बाप ज़िन्दा न हों? फ़रमाया उनकी क़बर का बोसा ले लो, इसने कहा अगर उनकी क़बर न मालूम हो? फ़रमाया कि दो लकीरे खीचों , एक माँ की क़बर के ख्याल से और दूसरी बाप की क़बर के ख़्याल से उन दोनों का बोसा लेलो, तुम्हारी क़सम पूरी हो जाएगी।

"तमसह" के मायने है हाथ मस करके अपने मुँह पर मल लेना। उसे वहाबी लोग रूक्ने यमानी के लिए जाएज़ व मुस्तहसन समझते है। इसके बाद दूसरे मुक़ामात पर भी उमूम हुकम ताजीम और सीरत सल्फ़

सालिहीन और अदम सबूत मना शरई की बिना पर उसे जाएज़ व मुस्तहसन समझना चाहिए और पहले इस किताब में आ चुका है कि जब उमर ने अब्बास के वास्ते से तलबे बाराँ किया और बारिश हुई तो लोग अब्बास के साथ तमसह कर रहे थे और कह रहे थे कि मुबारक हो आपको ऐ हरमैन को सेराब कर ने वाले।

और शिफ़ाए काज़ी अयाज़ में है कि अब्दुला बिन उमर को देखा गया कि उन्होंने हाथ रखा मिंम्बर के उस महल पर जहाँ पर रसूल ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि व आलीही वसल्लम बैठते थे और फिर उस हाथ को अपनी पेशानी से लगाया तो अगर तमसह कुफ्र हो तो उन तमाम सहाबा व ताबईन को काफ़िर समझना पड़ेगा।

यह कहना कि यह लोग अपने को उन अवलिया व मकर्रबीन का मोहताज समझते है तो बिला शुबह हर खुदा के बन्दे के लिए लाज़िम है कि अपने को मोहताज समझे और जो अपने को बेनियाज़ समझ ले वह काफ़िर है जबकि कुर्आन में सुरह अहज़ाब में है कि "ऐ इन्सानो! तुम अल्लाह की बारगाह में मोहताज हो और अल्लाह बस है बेनियाज़ है और काबिले तारीफ"

और सूरह मुहम्मद में है।

"अल्लाह गनी है और तुम सब मोहताज हो"

और औलिया व सालिहीन की तरफ एहतियाज़ इसलिए है कि वह अल्लाह की बारगाह में हमारे लिए दुआ करें और मोमिनीन दूसरे मोमिन का दुआए ख़ैर के लिए मोहताज है चिज़ायके अवलिया व मुक़र्रबीन और अन्बिया व मुर्सलिन और अइम्मा ताहीरीन की तरफ यह कहना कि "इनके ज़रिए से बारिश तलब करते हैं तो इसके मुतआलिक शवाहिद पहले आ चुके है कि मदीना में क़हत पड़ा और जनाब आयशा

से शिकायत की गयी तो उन्होंने तरकीब बताई कि क़ब्र पैग़म्बर ख़ुदा स0 का एक हिस्सा ज़ेर आसमान कर दो, चुनानचा बारिश हुई और हज़रत उमर ने हज़रत अब्बास अम्म रसूल के ज़रिए से बारिश तलब की।"

यह कि हौलनाक जंगलो में उन्हें मदद के लिए पुकारते हैं इसके लिए रसूल ख़ुदा स0 की हिदायत मौजूद है जिसे तिबरानी ने दर्ज किया है कि हजरत स0 ने फरमाया जब तुममें से किसी की चीज़ खो जायें या ऐसी जगह हो जहाँ कोई मददगार नहीं है, तो कहे, "ऐ बंदगाने ख़ुदा मेरी मदद करो।" एक रवायत में है कि "मेरी फ़रयाद को पहुचो" इसलिए कि अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे हैं जिन्हें तुम नहीं देखते हों।

यह कहना कि "यह लोग लड़कियों की शादी वगैरह के लिए इनसे इल्तिजा करते हैं। बड़े-बड़े मसलों में इन पर भरोसा करते है तो बेशक यह उस हद तक दुरूस्त है कि यह उन से उन मक़ासिद में अपने लिए दुआ के तलबगार होते है। और इस मायने से उनसे मदद हासिल करना चाहते हैं मगर इसके लिए यह कहना कि "यह उनसे गुनाहों की बख़्शिश के तालिब होते हैं। "एक जसारत आमेज़ झूठ है। कोई मोमिन गुनाहो की माफ़ी की इल्तिजा ख़ुद उनसे नहीं करता बल्कि उनकी शिफ़ाअत का उम्मीदवार होता है, और अल्लाह सुब्हानहू की बारगाह में उनके वास्ते से तालिबे मग़फ़िरत होता है। बेशक वह एतिकाद रखते हैं कि इन अइम्मा ताहिरीन और मुक़र्रबीन इलाही के दामन से वाबस्ता इनकी तरफ रहमते इलाही को मुतवज्जा करेगी जैसा कि अहले बैत अलैहिस्सलाम के बारे में हदीस रसूल है कि

"मेरे अहले बैत की मिसाल कश्ती नूह की सी है जो उस पर सवार हुआ उसने निजात पा ली।"

और अस्तग़फार के लिए जैसा कि रसूल स0 से तवस्सुल की बहस में बयान हो चुका है ख़ुदाबन्द आलम ने कुर्आन में हुक्म दिया है कि रसूल स0 की बारगाह में हाज़िर हों और वहां आकर अस्तगफ़ार करें और फिर रसूल स0 उनके लिए ख़ुदा से अस्तगफ़ार करे तो फिर मुगफ़िरत इलाही का उन्हें उम्मीदवार होना चाहिए और ख़ुद रसूल को हुक्म दिया कि आप मोमिन व मोमिनात के लिए अस्तगफ़ार कीजिए, और सूरह यूसुफ़ में याकूब अलै0 के फ़रज़न्दों की ज़बानी है कि उन्होंने अपने वालिद बुर्जुगवार से कहा कि हमारे लिए बारगाह इलाही में अस्तगफ़ार कीजिए, और उन्होंने वादा किया कि मैं तुम्हारे लिए अस्तगफ़ार करूंगा और हज़रत इब्राहीम अलै0 ने अपने मुँह बोले बाप से वादा किया कि मैं आपके लिए अस्तगफ़ार करूँगा और फिर उस वादे की बिना पर अस्तगफ़ार किया भी और कुर्आन मजीद में सूरह नूह में जनाब नूह अलै0 की दुआ है कि जो मोमिन मेरे घर में आए उसकी मगफ़िरत फ़रमा।

यह कहना कि उन मुसलमानों के दिल में जो अवलिया इलाही से दुआ मांगते है, खुदा का तसव्वुर बिल्कुल नहीं होता मोमिनीन के साथ सूयेज़न बल्कि इफ़्तरा और बुहतान है इस शख़्स को उनके दिल का हाल क्यूं कर मालूम है? यक़ीनन ज़रा भी बसीरत रखने वाला हर साहिबे ईमान जानता है कि असल मर्क़ज हाज़ात अल्लाह सुबहानहू है और यह तमाम अवलिया व सालिहीन इसी की इबादत और इताअत से इस मर्तबे तक पहुंचे है। इसके खिलाफ़ और इसके सिवा हरगिज़ कोई दूसरा तसव्वुर नहीं होता है।

बेशक आम सूफ़िया के मुतअल्लिक हमें ज़ाती तौर पर कोई इल्म नहीं है। न हम उनकी तरफ़ से वकालत करने के मौक़िफ में है। मगर

ख़याल यह है कि वह भी अपने पीरो मुर्शिदों और अवलिया के मुतअल्लिक यह तसव्वुर नहीं रखते हैं कि वह ख़ुदा से बेनियाज़ होकर ज़ातन नफ़ा और नुकसान पहुचाने पर क़ादिर है। लेकिन नजदी आलिम ने उनका क़ौल बयान किया है कि अल्लाह ने हर वली के साथ एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया है जो सवाल करने वाले की हाजत को पूरा करे तो उसे एक बेबुनियाद बात तो समझा जा सकता है लेकिन कुफ्र या शिर्क़ का मूजिब करार नहीं दिया जा सकता है जबकि यह बिल्कुल सही है कि ख़ुदाबन्द आलम ने कायनात में मुख़तलिफ कामों के लिए फरिश्ते मुर्क़रर किए है मसलन जिबरईल अमीन वही है इस्राफ़ील के जिम्मे सूर फूँकना है। मालिक खजानादार जहन्नम है। रिज़वान खाजन जन्नत है। इस्राईल मलकुलमौत है वगैरा-वगैरा, तो अगर बिल्फर्ज़ अल्लाह कोई फरिश्ता लोगों की हाजत बरारी के लिए किसी महल ख़ास पर मुक़र्ररर कर दे तो इसमें क्या ख़राबी है? और यह उन आयाते कुर्आनी के बिल्कुल ख़िलाफ़ नहीं है जिन का मज़मून यह है कि अल्लाह हाजत बरारी करता है। जैसे पहले आ चुका है कि वफ़ात देना अल्लाह का काम है लेकिन ख़ुद कुर्आन में एक जगह इसकी निस्बत मलकुल मौत की तरफ़ दी गयी है और कई जगह फ़रिश्तों की तरफ़।

सबसे ज़्यादा उन वहाबीयो को शाक़ अहलेबैत ताहिर अलै0 के अत्बाते आलियात की जो इराक में है। मरजीयत व मरकज़ीयत है जिसमें इस इनाद का दख़ल है जो बाद रसूल स0 एक तबक़े को अहले बैत पैग़म्बर स0 से हो गया। इस सिलसिले में यह लोग हवालियान अहले बैत अलै0 पर तोहमत तराशी व बुहतान तराज़ी की इन्तिहा कर देते हैं हालांकि जो शख़्स साफ़ दिल और बेलौस नियत के साथ इन रौजो पर आए, उसे ख़ालिके करीम की बारगाह में खुजू व खुश और

उसकी जनाब में अख़लास व इबादत के वह नमूने नज़र आएंगे जिन की नज़ीर किसी दूसरे मुक़ाम पर न मिलेगी, और इनके सलाम व ज़ियारत को सुने तो इनकी हर लफ़्ज से तौहीद इलाही और उसकी अज़मत का इक़रार नुमायां होता है। मसलन अमीरुलमोमिनीन हज़रत अली अलै0 के रौज़े पर पहले ही जो इज़्ने दुख़ूल पढ़ा जाता है उसमें है।

"कोई ख़ुदा नहीं सिवा अल्लाह के वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद स0 उसके बन्दे और रसूल है जो उसकी तरफ से हक़ को लेकर आए, और उसके पैग़म्बरो की तसदीक़ की" (ता आख़िर मज़मून)

ऐसे ही अल्फाज़ तमाम ज्यारतों और दुआओ में है जो इन मुशाहिद मुकद्दसा में पढ़े जाते हैं और ज़्यारत के बाद जो दो रकत नमाज पढ़ी जाती है, उसके बाद कहा जाता हैः

"ख़ुदाबन्दः मैने यह दो रकत नमाज़ पढ़ी है हदया करने के लिए अपने मौला, तेरे वली खास, तेरे रसूल के भाई, अमीरुलमोमिनीन अलीबिन अबु तालिब के लिए, खुदाबन्द तू दुरूद भेज मुहम्मद व आले मुहम्मद स0 पर और इस नमाज़ व ज्यारत को मुझसे कुबूल फ़रमा और मुझे इस पर वह जज़ा अताकर जो हुसने अमल रखने वाले को अता होती है। ऐ ख़ुदा! मैंने तेरे लिए ही नमाज़ पढ़ी है और तेरे लिए ही रूकू किया है और तुझ ही को सजदा किया है तू एक अकेला है, तेरा कोई शरीक नहीं, इसलिए कि नमाज़ और रूकू व सुजूद बस तेरे ही लिए हो सकता है क्योंकि सिवा तेरे कोई खुदा नहीं, खुदा वन्द। मुझे मेरा मक़सद अता फ़रमा बवास्ताये मुहम्मद व आले मुहम्मद।"

और ऐसा ही तमाम मशाहिद मुक़दसा पर होता है।

इससे ज़ाहिर है कि इन मशाहिद मुर्शरफ़ा पर हाज़िर होने से

तौहीद की बुनियाद ज्यादा मुस्तहकम होती है। मुसलमानों की शीराज़ा बन्दी होती है और कुफ़्र व इल्हाद के तसव्वुरात का इस्तेहसाल होता है, इसके खिलाफ़ जो ज़हर अफशानी और बुहतान तराज़ी होती है उसकी सही पादाश ख़ुदाबन्द आलम के हाथ में हैं जबकि इस बेबुनियाद तसव्वुर से कितने बेगुनाहों का ख़ून बहाया जाता रहा है और उनकी हत्तक हुरमत की जाती रही हैं जो वहाबी किरदार के मुताअल्लिक बतवातिर साबित है।

नवाब सिददीक़ हसन ख़ाँ कन्नौजी ने "अबजदुल उलूम" में लिखा है कि शेख मुहम्मद हाज़ी शार्गिद अल्लामा शोकानी ने इब्न अब्दुल वहाब के लिए लिखा है कि इब्न अब्दुल वहाब की किताबों में बाज बाते काबिले कुबूल है और बाज रद कर देने के काबिल है और सबसे ज्यादा मशहूर इनकी दो खुसूसियतें है।

1. एक तमाम रूयेजमीन के मुसलमानों को काफ़िर समझना,
2. दूसरा मुसलमानों का बग़ैर सुबूत और गवाह के ख़ून बहाना।

दूसरी जगह है कि वहां के जाहिल अरबों को उन्होंने समझाया कि पैग़म्बर या किसी आलिम से जो तवस्सुल करे, वह मुशरिक हो जाता है। और आगे बढ़ कर उन्होंने तमाम रूये ज़मीन के मुसलमानों को काफ़िर क़रार दे दिया चुनानचः मुहम्मद बिन इस्माईल अनआयी जो की बहुत बड़े आलिम थे, पहले उन्होंने इब्न अब्दुल वहाब के मुताअल्लिक़ कुछ मिले हुए इत्तलाआत की बिना पर मदह में क़सीदा कहा था जिसकी इब्तिदा नजद और अहले नजद पर सलाम से की थी बाद में जब मोतबर ज़राय से वहा के मज़ीद हालात मालूम हुए तो उन्होंने दूसरे अशआर पहले क़सीदे पर पशेमानी और तौबा के मजमून के कहे और इस तरह ऐलान किया कि मैं अपने उन अशआर को जो मैंने मदह में कहे

थे वापस लेता हूँ कि अब मुझ पर सूरते हाल उसके ख़िलाफ़ ज़ाहिर हो गयी है और ख़ुद अपने उन दूसरे अशआर की शरह लिखी जिसका नाम रखा "महवल है बता फी सरही अब्यातित तौबा" यानी गुनाह का मिटाना तौबा वाले अशआर की शरह में, इसने लिखा है कि पहले एक नजदी आलिम ने अकर अब्न अब्दुल वहाब की बड़ी तारीफ व तौसीफ़ की थी जिसकी बिना पर मैंने वह क़सीदा कहा लेकिन बाद में मुझे इब्न अब्दुल वहाब की बहुत सी क़ाबिले एतराज़ बाते मालूम हुई जैसे ख़ून रेज़ी और लूटमार और धोखा देकर ख़ास-ख़ास अफ़राद की जान लेना और तमाम रूये ज़मीन के मुसलमानों को क़ाफ़िर क़रार देना इस में उन्होंने तमाम मुसलमानों के क़ाफ़िर होने के बख़याल ख़ुद दलायल तहरीर किये है तो हमने इन के हाल को ऐसा पाया कि जैसे कोई शख़्स थोड़ा इल्म शरीअत का हासिल करे मगर इसने गौर व फ़िक्र से काम न लिया हो और न किसी ऐसे उस्ताद से पढ़ा हो जो उसे सही रास्ता दिखाए, बल्कि इसने बतौर ख़ुद शेख़ इब्न तैमिया और उनके शागिर्द इब्न कैय्यिम जौज़िया के कुछ तसानीफ का मुताला किया और बेसमझे हुए उनकी तक़लीद कर ली हो हालांकी ख़ुद वह दोनों तक़लीद को हराम करार देते हैं।

सैय्यद मुहम्मद अमीन बिन उमरे मारूफ बाबिन आबिदीन ने अपनी किताब "रद्दे मुख़तार" की तीसरी जिल्द में ***"बगात"*** के ज़िक्र के जैत में लिखा है।

"जैसा कि इस ज़माने में इब्न अब्दुल वहाब के ताबईन में हुआ जिन्होंने नजद से ख़ुरूज किया और हरमैन मक्का व मदीना पर कब्ज़ा कर लिया यह लोग हंबली होने के दावेदार थे लेकिन उन्होंने यह अक़ीदा ईख़तियार किया कि बस वह मुसलमान है। और उनके

मुख़ालिफ जितने है सब मुशरिक है और इस तरह अहले सुन्नत और उनके उल्मा के कत्ल को मुबाह समझा, यहां तक कि ख़ुदा ने इनकी ताक़त को तोड़ा और उनके शहरों को बरबाद किया और 1233 हि0 में मुसलमान उन पर ग़ालिब आए।"

ख़ुद वहाबी आलिम सुलेमान बिन अब्दुल्ला बिन मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब ने अपनी किताब "तौज़ीह" में लिखा है कि

"अहले तौहीद के लिए उन मुसलमानों के अमवाल और औरतें सब हलाल है और वह उन्हें गुलाम व कनीज़ बना सकते हैं।"

"यह दरहकीकत इनके पहले ख़्वारिज नहरवान का मज़हब रहा है जिन्होंने जनाब अमिरुल मोमिनीन अली बिन अबी तालिब अै0 और उनके साथ तमाम मुसलमानों को काफ़िर कराकर दिया और उनके जान व माल को मुबाह समझा और ग़ौर की निगाह से देखा जाये तो बहुत बातों में यह वहाबी लोग इन्हीं ख़वारिज के हम़मसलक हैं, जैसे वह नारा लगाते थे कि हुक्म बस अल्लाह के लिए है"

यह जुमला हक़ था मगर मक़सद उन का बातिल था, उसी तरह इनका नारा है कि ताज़ीम सिर्फ अल्लाह के लिए है दुआ बस अल्लाह से मांगी जाय, मुहब्बत बस अल्लाह से रखी जाय, यह सब जुम्ले दुरूस्त है मगर मक़सूद इससे ग़लत है। जब तारीख़ का मुताला किया जाय तो पता चलता है कि ख़वारिज की अहम शख़्सिअतें सब नजदी थी, चुनान्चे उनका सिपहसालार जंग में शबस बिन रबी और एक बड़ा सरदार मसअर बिन फ़दकी दोनों तैमी थे और इब्न अब्दुल वहाब का क़बीला भी बनी तमीम है और वहाबी जमाआत के फिर्क़े ख़्वारिज में से होने का इन्किशाफ शेरे मुहम्दाद बिन यूसुफ मशहूर बलकब "काफी" ने अपनी किताब "अलहसन वल जन्नता अला अक़ीदता अहलेस्सना" में कहा है।

वह लिखते हैं:

"आज कल यह ज़हेनीयत चल पड़ी है कि अवलियाये इलाही के करामात का इन्कार किया जाता है और उनके कुबूर की ज़्यारत को मना किया जाता है और उनके साथ अल्लाह की बारगाह से तवस्सुल से इन्कार किया जाता है। यह असल में अतराफ़ बग़दाद में बाज ख़्वारिज का मज़हब था उनका अक़ीदा यह था कि जिसने किसी क़ब्र की ज़्यारत की वह ऐसा है जैसे उसने किसी बुत की परस्तिश की और यह सब बातिल है। इसलिए कि ख़ुद रसूल ख़ुदा स0 क़ब्रस्तान की ज़्यारत के लिए तशरीफ़ ले जाते थे और तमाम उम्मत का इस पर इजमा रहा है। ऐसे लोगों से बहस करना बिल्कुल बेकार है।"

आलोसी मुसन्निफ "तारीख़ नजद" अगर चः ख़ुद वहाबियत की तरफ़ मायल है जो उनके अन्दाज़े तहरीर से ज़ाहिर है लेकिन कुछ न कुछ हक़ बात उनके क़लम की ज़ुबान पर भी जारी हो गयी है। उन्होंने सऊद बिन अब्दुल अज़ीज़ के हाल में लिखा है कि उन्होंने अपने लश्कर हर तरफ भेजे और तमाम बड़े-बड़े रो साये अरब का सर उनके सामने झुक गया मगर यह कि उन्होंने हज रोक दिया और ख़लिफातुल मुसलिमीन के मुक़ाबले में ख़ुरूज किया और अपने मुख़ालिफ मुसलमानों को काफ़िर करार देने में ग़ुलू से काम लिया और कुछ हुक्मों में बड़ा तशद्दुद किया और उन्होंने अक़्सर बातों को (जैसे ख़ुदा के हाथ, चेहरा, आँखें वग़ैराह) ज़ाहरी मफहूम पर महलूल किया, हाँ दूसरे लोग इनकी मुख़ालिफत में भी हद से बढ़ गए और इन्साफ का तक़ाज़ा है कि दरमियानी रास्ता ईख़्तियार किया जाए न इतना तशद्दुद होना चाहिए जैसा उल्माए नजद और उनके अवाम में है कि मुसल्मानों से जंग का नाम वह "जिहाद" रखते हैं और हज को रोकते है और यह उस तसाहुली

से काम लेना चाहिए जो आम तौर पर शाम और इराक़ के बाशिंदो में है कि ग़ैर ख़ुदा की क़सम खाते है और बड़ी सोने और चाँदी से आरास्ता और रंग बिरंग की मुनक्कश इमारते सालिहीन व मुर्करबीन के कुबूर पर बनाते हैं और उन के लिए नज़र करते हैं और ऐसी ही बातें जिनसे शारे ने मना किया है। खुलासा यह है कि दीन के बारे में अफ़रात व तफ़रीत कोई रूख मुसलमानों की शान के लायक़ नही है बल्कि मुनासिब यही है कि सल्फ सालिहीन की पैरवी की जाये और एक दूसरे को काफ़िर कहना गज़ब इलाही का बाईस है।

जब यह साबित हो गया कि यह लोग तमाम मुसलमानाने आलिम को काफ़िर कहते है तो अब रसूल ख़ुदा स0 की यह हदीस देखिये जो सही बुख़ारी में है कि :

"जो किसी को काफ़िर कहे तो उस की जद में उन दोनों में से एक ज़रूर आएगा यानी अगर वह मुसलमान जिसे काफ़िर कहा है। वाकिअन काफ़िर नहीं है तो लाज़िमन काफ़िर कहने वाला पेश ख़ुदा काफ़िर क़रार पाएगा।"

इसके अलावा यह पहले आ चुका है कि यह लोग मुजस्समह में दाखिल है और मुजस्समा को तमाम उल्माये इस्लाम काफ़िर कहते हैं। फिर अहलेबैत रसूल अलै0 से दुशमनी जिसे पैग़म्बरे ख़ुदा स0 ने कुफ़्र का मिस्दाक़ क़रार दिया है, फिर ख़वारिज के कुफ़्र पर उल्माए इस्लाम मुत्तफिक़ है यहाँ तक कि इब्न अब्दुल वहाब की किताब "अत्तौहीद" के शारह ने भी लिखा है

"रसूल ख़ुदा स0 ने ख़वारिज के लिए गवाही दी है कि वह कसरत से नमाज़ 'रोज़ा और तिलावते कुर्आन के काम अन्जाम देते होंगे। और लाइलाहाइल्लल्लाह का कल्मा पढ़ते होंगे और इसके

बावजूद वह महकूम बकुफ़्र है और हजरत स0 ने फरमाया कि अगर मैं इस जमाने में हूं तो उन्हें क़त्ल कर दो जैसा की 'सहीहैन' में है।"

फिर जैसे ख़्वारिज उन आयात को जो कुफ़्फार व मुशरकीन के बारे में है मुस्लीमीन व मोमिनीन पर मंतबक करते थे, इसी तरह यह वहाबी हजरात तमाम आयतों को जो मुशरिकों के बारे में है, मुसलमानाने आलम पर मंतबक करते है। जैसा कि इब्न अब्दुल वहाब की उस इबारत से जिसे आलोसी ने नक़ल किया है। मालूम हो गया और इब्न अब्दुल वहाब ने इस बारे में मुस्तक़िल रिसाला लिखा है जिस का नाम है ***"कशफुशशुबहात फीतशकीका बिल्मुतशाबिहात"*** जिस में बड़ी तफ़सील के साथ उन शिर्क वाली आयतों को मुसलमानों पर मंतबक करने की कोशिश की है और इसकी इत्तला भी रसूल ख़ुदा स0 ने देदी थी जैसा की बुख़ारी ने अपनी सहीह में अब्दुला बिन उमर से रवायत की है ख़वारिज के वस्फ़ में कि उन्होंने उन आयतों को जो काफ़िरों के बारे में है, मोमिनीन के बारे में क़रार दे दिया और एक रवायत में इब्न उमर की जिसे बुख़ारी के अलावा दूसरों ने नक़ल किया है हजरत स0 ने फरमायाः

"सबसे ज्यादा मुझे अपनी उम्मत के लिए जो परेशानी है वह उस शख्स से जो कुर्आन की आयतो को बेमहल सर्फ़ करे"

इसका का इब्न दहलान ने ज़िक्र किया है और जिस तरह खवारिज ने मुसलमानों का खून मुबाह समझ लिया था और नाहक़ मोमीनीन की ख़ूनरेज़ी जायज़ साझी थी, इसी तरह इन वहाबीयों ने इन बेशुमार मुसलमानों को तह तेग़ किया। चुनानचः "कशतुलआबाब" में है कि उनके हाथों जो मुसलमान कत्ल हुए उन की तादाद एक लाख से ज्यादा है और तायेफ में अमान देने के मुआहिदे के बाद उन्होंने क़त्ल

आम किया। हालांकि इरशाद इलाही है किः

"जो किसी एक मोमिन को कत्ल करे, वह ऐसा है कि उसने तमाम इन्सानों को क़त्ल किया।"

चः जायका वह लोग जिन्होंने हज़ारों, लाखों मुसलमानों को क़त्ल कर दिया हो और रसूल ख़ुदा स0 ने फरमायाः

"मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उसे क़त्ल करना कुफ़्र है।" इसे इब्न माजा ने अपने सुनन में दर्ज किया है, नेज इरशाद इलाही है कि :

"जो एक मोमिन को कत्ल करेगा उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वह हमेशा हमेशा रहेगा और अल्लाह उस पर गज़बनाक होगा और उस पर लानत करेगा और उसे बड़ा अज़ाब करेगा।"

पाँचवा बाब

वहाबी अक़ीदा अंबिया व सालिहीन के कुबूर के बारे में

उनका मज़हब यह है कि कुबूर पर कोई इमारत बनाना हराम है और न उनके गिर्द कोई इमारत बनाना चाहिए और वहां दुआ माँगना और नमाज़ पढ़ना, यह सब बातें हराम है। बल्कि इन सबका इनहिदाम और इनका मिटा देना वाजिब है। यहां तक कि हज़रत ख़ातमुल अंबिया स0 की कब्र मुबारक, इसका भी यही हुक्म है। इब्न अब्दुल वहाब और उनके ताँबईन के नज़दीक यह मशाहिद और कुबूर सब मिस्ल बुतों के हैं और रसूल स0 को वह (मआज़ अल्लाह) सबसे बड़ा बुत समझते है।

इन तमाम अक़वाल में भी इनके पेशवा, वही इब्न तैमीया और उनके शागिर्द इब्न कैय्यंम है। चुनान्चे इब्न क़ैय्यंम ने अपनी क़िताब "जादल मिआद फ़ी हदी खैरुलइबाद" में तसरीह की है कि इन रौज़ो का जो कुबूर पर बने हुए है, जहां तक कुदरत हो, गिराना वाजिब है और इनका एक दिन भी बाकी रखना हराम है, इसलिए कि यह लात और उज़्ज़ा (असनाम) के मिस्ल है, बल्कि उनसे बढ़कर यहां शिर्क होता है और (हाकिम वक्त पर लाज़िम है कि उन अम्वाल को जो रौज़ों के लिए लाए जाते हैं, लेकर दूसरे मसारिफ़ में सर्फ़ कर दे। जैसा कि रसूल ने लात (बुत) के अम्वाल के साथ किया था। इसी तरह इन इमारतो को गिराना वाजिब है या यह कि फरोख़्त करके उनकी क़ीमत मुसलमानों के मफ़ाद के कामों में सर्फ करे, इसी तरह इन अवक़ाफ़ को जो उनसे मुतअलिक़ हैं। इसलिए कि वक्फ इन पर बातिल है और यह माल है और जो ज़ाया हो रहा है उसे सर्फ कर देना चाहिए मुसलमानों के कामों में, और जिल्द दोम में लिखा है कि रसूल अल्लाह ने मस्जिद ज़िरार को

मुनहदिम कर दिया तो यह मज़ारात भी जो इमारते है क्योंकर काबिले इन्हिदाम न होगी और नेक काम के खिलाफ कोई वक्फ सही नहीं है, और वह मस्जिद भी जो किसी कब्र पर हो मुन्हदिम कर देना चाहिए जिस तरह उस मय्यत को जो मस्जिद में दफन हो कबर खोदकर निकाल देना चाहिए क्योंकि दीन इस्लाम में मस्जिद और कबर दोनों इकठ्ठा नहीं हो सकते बल्कि जो पहले हो, वह सही है और जो बाद में है, उसे मना किया जाएगा।

अब इस महल पर मुनासिब मालूम होता है कि नजद के क़ाजी क़ज़ात इब्न बल्हीद के इस्तिफता और उस जवाब को जो उल्मा मदीना की तरफ मंसूब कर के इन्हिदाम जन्नतुल बक़ीय के मौक़े पर शाय हुआ था, यहा दर्ज किया जाय जिस से उन का अक़ीदा इस सिलसिले में बिल्कुल ज़ाहिर हो जाएगा, बाद में हम उन दोनों के मुंदराज़ात की काफ़ी व वाफ़ी रद करेंगे, अफशर

इस्तफता

क़ौल है उल्माये मदीना मुनव्वरा का (ख़ुदा उनकी समझ और इल्म में ज़्यादती करे) कब्रों पर इमारत और उन्हें मस्जिद बना लेने के बारे में, यह जायेज़ है या नहीं? और जबकि वह नाजायेज़ है बल्कि उसकी सख़्ती से मुमानियत है तो किया उनका गिराना और उनके पास नमाज़ पढ़ने को रोकना वाजिब है? और जब वह इमारत एक वक्फ़ी ज़मीन पर हो जैसे बक़ीय और वह मानय हो उस मिकदार में फायदा उठाने से जिस पर इमारत है तो किया यह गसब है जिस का खत्म करना ज़रूरी है ताकि दूसरे मुस्तहक़ीन पर जुल्म न हो और उन के हुकूक मारे न जायें।

या यह वाजिब नहीं है? और जो कुछ जाहिल लोग इन ज़रीहों के पास करते हैं कि उनसे तमस्सुह करते हैं और अल्लाह के साथ-साथ

उनसे दुआ मांगते है और क़सदे क़ुर्बत करते हैं उस साहबे कब्र से और उस की नज़र मानते हैं और वहां रोशनी करते हैं यह सब जायेज़ है या नहीं? और जो यह लोग हुजरह रसूल स0 के पास करते हैं कि दुआ वगैराह के वक्त उधर का रुख़ करते हैं और तवाफ करते हैं और बोसा लेते हैं और तमसुह करते हैं इसी तरह जो मस्जिद शरीफ में करते हैं कि तरहीम और तज़कीर करते हैं अज़ान और इक़ामत के बीच में और नमाज़ जुमे के पहले, क्या यह शरा में वारिद है या नहीं?

इस सवाल की ग़लती बल्कि गलत बयानी

इस सवाल में एक बड़ी ग़लत बयानी मौजूद है कि बक़ीय की ज़मीन वक्फ़ी है और यह इमारते हक़दारों को उनके हक़ से रोकती है। इसलिए उनका हटाना वाजिब है। और इसकी ताईद इस मफ़ूरज़े पर शाफई के कौल से होगी किताब अलआम में कि क़ब्र की इमारत अगर वक़्फ़ी ज़मीन पर बनाई गयी हो तो इसका गिराना वाजिब है यह ग़लत इसलिए है कि कुतुब तारीख व सीर का मुताला बताता है कि बक़ीय की इमारते किसी वक़्फ़ी ज़मीन पर नहीं है बल्कि तमाम ममलूका ज़मीनों पर बनी है चुनान्चे साहिबे वफ़ा उलवफ़ा में इब्राहीम फ़रज़ंद पैगम्बर स0 की क़ब्र के बारे में लिखा है कि यह एक घर था जो बाद में मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अली की मिल्कीयत में आया, फिर इसी क़ब्र के पहलू में उसमान बिन मज़ऊन और फिर यहीं अब्दुर रहमान बिन औफ़ की कब्रें बनी। यह सब एक कुब्बे मे थे इससे ज़ाहिर होता है कि यह कुब्बा ममलूका जमीन में था, फिर अज़वाजे रसूल का कुब्बा, वह मिल्कीयत था, अक़ील इब्न अबी तालिब की, इसका भी ज़िक्र वफ़ा उल उफ़ा में है, अब रहा अइम्मा अहले बैत अलै0 का कुब्बा तो कुतुबे सीर से ज़ाहिर है कि यह ज़नाब

अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का कुब्बा था चुनानचः सवाइक़ मेहरक़ा अल्लामा इब्न हजर मक्की में इमाम मुहम्मद बाक़िर अलै0 के हाल में है कि वह अपने पिदर बुजुर्गवार के पहलू में दफन हुए, इमाम हसन अलै0 और अब्बास के कुब्बे में जो बक़ीय में है। और अब्बास के कुब्बे के लिए बाख़बर मुसन्निफीन ने लिखा है कि अक़ील के मकान के गोशे में थी, चुनानचः शाह अब्दुल हक़ मोहदिस देहलवी ने अपनी किताब "जज़बुल कुलूब इला दियारिल महबूब" में लिखते हैं किः

''अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब को भी फातमा बिन्त असद बिन हाशिम के कुब्बे के नजदीक मुक़ाबिर बनी हाशिम के शुरू में जो अक़ील के मकान के गोशे में है दफन किया।''

इससे साबित हुआ कि कुब्बा भी ममलूका जमीन में था और अल्लामा सैय्यद इब्राहीम रावी रिफायी ने अपनी किताब "अवराक़े बग़दादिया" में लिखा है कि इमाम शाफ़ई का कुब्बा इब्न अब्दुल हकम के घर में था, रह गयी बक़ीय की सर ज़मीन इसका वक़्फ होना साबित नहीं है।

अलावा उन तसरीहात के जो पहले इस ज़मीन के ममलूक होने के मुतअल्लिक आ चुके हैं। गुज़िशता सदियों में बराबर उल्माये इस्लाम का इस पर एतराज़ न करना भी बताता है कि उनके नज़दीक इन कुब्बों में कोई शरई महजूर न था और मुसलमानों का हर दौर में इनकी तामीर व दुरुस्ती की तरफ मुत्वज्जा रहना इनके नज़दीक उनके इस्तेहसान की दलील है और अगर वहाबीयीन इन्तिहायी धानधली से काम लेकर उन तारीख़ी तस्रीहात को कुबूल न करें जो उन की ज़मीन के मुख़तलिफ अशख़ास की मिलकियत होने को बताते है हालांकि यह इन्साफ से बहुत दूर है। इसलिए कि तारीख़ी वाक़ियात में अहले तारीख़ के ब्यान पर

ऐत्माद के सिवा चारये कार नहीं है। फिर भी जब हदीस और तारीख़ में इसका पता नहीं है कि यह ज़मीन पहले किस की मिल्कियत थी और उसने उसे वक़्फ़ किया तो समझना होगा कि वह इब्तिदायी हालत पर बाक़ी है कि तमाम ज़मीन मिल्क ख़ुदा है और तमाम ख़ल्क के लिए मुबाह है और उसका हुक्म यह है कि जो कोई क़तआ जमीन को महदूद बनाकर उस पर कोई इमारत बना लें, वह उससे मख़सूस हो जाएगी, फिर किसी दूसरे को इसका मुन्हदिम करना जायेज़ न होगा।

यह थी वह ग़लती और ग़लत बयानी जो असल सवाल में थी और वह सवाल उल्मा से चूंकि किसी आमी जाहिल का न था बल्कि एक बड़ी वहाबी शखसीयत यानी उनके काज़ीउल कुजात का था लिहाज़ा इस पर नज़र डालना जरूरी था, अब उस जवाब को जो उल्माये मदीना की तरफ मंसूब करके नजदी हुकूमत ने शाय किया था। वह मुलाहिज़ा हो :

जवाब

क़ब्रों पर इमारत बनाना इजमाअन ममनू है इसलिए कि इसकी मुमानियत में जो अहादीस है, वह सही हुस्सनद है लिहाज़ा बहुत से उल्मा ने फ़तवा दिया है कि उनका गिराना वाज़िब है और इसमें वह सनद पेश करते हैं। हज़रत अली की हदीस की कि आपने अबुललयाज़ से फरमाया कि मैं तुम्हें इस मुहिम के लिए भेजता हूँ जिस के लिए रसूल स0 ने मुझे भेजा था कि जो मूरत तुम्हें मिले उसे मिटा दो और जो क़बर ऊंची मिले उसे बराबर कर दो। इसकी मुस्लिम ने रवायत की है और क़बरों पर मस्जिदे बनाना और वहां नमाज पढ़ना मुतलक़न ममनू है और वहाँ चराग़ जलाना भी ममनू है। इब्न अब्बास की हदीस की वजह से कि

रसूल स0 ने लानत की न औरतों पर जो कब्रों पर ज्यारत के लिए जाये, और इन लोगों पर जो वहा मस्जिदे बनाये और चराग़ रौशन करें, इसकी अहले सुनन ने रवायत की है, जाहिल लोग जो ज़रीहों के साथ तमसह करते हैं और बकसदे कुर्बत जानवर ज़बह करते है और नज़रें देते हैं और अल्लाह के साथ इन साहिबाने कुबूर से दुआ मांगते है, यह सब हराम है और शरअन ममनू है जिसका करना बिल्कुल जायेज़ नहीं है और दुआ के वक़्त हुजरये पैगम्बर स0 की तरफ मुंह करना, उसे भी बेहतर है कि रोका जाय जैसा कि मशहूर व मारूफ मज़हबी मोतबर किताबों में दर्ज है और तमाम सिम्तों से बेहतर सिम्त काबा है और तवाफ़ और तमसह और तरहीम और तसलीम मज़कूरा अवकात में, यह सब बाद की ईजाद की हुई चीजें है जो मेरी नाक़िस समझ में आया है। वह यह है और हर साहिबे इल्म से बाला तर एक बड़ा आलिम है।

25 रमजान 1344 ही0

जवाबे मज़कूर की रद

उल्माए मदीना के इस फ़तवे की रद अल्लामा सैय्यद हसन सदर और अल्लामा शेख़ जवाद बलागी वगैराह ऐसे बुर्जुग उल्मा ने की है मगर यहां उसके एक जुज़ की मुकम्मल रद् लिखी जाती है।

मालूम होना चाहिए कि कुबूर पर तामीर का जवाब किताब इलाही और सुन्नत मुस्तफ़वी और मुसलमानों के अमल दरआमद सबसे साबित है।

किताबे इलाही में इस मौके के जिक्र में जब लोगों को इत्तिला हुई और वह लोग उस गार के पास आये जहा असहावे कहफ़ महवे आराम थे। यह आयत है कि,

"उन सबने कहा कि उन पर एक इमारत क़ायम करो, उन्होंने जो इनके सिलसिले में ग़ालिब आये, कहा कि हम उन पर मस्जिद तामीर करेंगे"

अन्दाज़े ब्यान से ज़ाहिर है कि अल्लाह ने मुसलमानों के इस फैसले को जो उन्होंने किया बसूरते इस्तेहसान दर्ज किया है और ज़ाहिर है कि कुर्आन मजीद में अंबियाये मासल्फ़ और उममे साबक़ा के हालात सिर्फ़ तफ़रीह तबाय के लिए दर्ज नहीं होते बल्कि इसलिए कि उनसे इस उम्मत को दर्स हासिल हो तो अगर इमारत बनाना क़बर पर अल्लाह के नजदीक इस उम्मत के लिए क़ाबिले मज़म्मत अमर होता तो वह इस वाक़िया के दर्ज करने में उस पर मुतनब्बा फ़रमाता ताकि इस उम्मत के अफ़राद उससे परहेज करें, जब ऐसा नहीं हुआ और उसने इस वाक्ये को इस अंदाज़ में बयान फ़रमाया तो इससे इसकी ताईद हुई और यह ज़ाहिर हुआ कि यह फैसला उसकी मर्ज़ी के खिलाफ नहीं हुआ और वह इस लायक है कि इस उम्मत के अफ़राद इसकी पैरवी करें और हकीकत यह है कि इस आयत के अलावा अगर इस मुद्दा के लिए कोई दलील न होती तो बस यह आयत उसके सुबूत के लिए काफ़ी थी, मगर चूंकि यह वहाबियों के अकीदे के बिल्कुल खिलाफ है इसलिए इब्न अब्दुल वहाब की किताब 'अत्तौहीद के शारह ने इसे दर्ज करने के बाद लिख दिया है कि

"यह इसकी दलील है कि जो उनके मामलात में गालिब आए वह काफिर थे, इसलिए कि अगर वह मोमिन होते तो यह फैसला न करते कि नेक आमाल अशखास की कबरों पर मस्जिद बनाये जबकि हमारे पैगम्बर स0 ने ऐसा करने वाले पर लानत की है।"

यानी उन्होंने अपने मसलक को असल करार देकर कुर्आन को

अपना ताबय बनाना चाहा है और इसके लिए हजारों मुसलमानों पर कुफ्र के फतवों का सैलाब उनका इतना बढ़ा कि गुज़िश्ता दौर के सच्चे मुसलमानों पर भी वह फतवाये कुफ्र लगाने लगे मगर अव्वल तो पूरी आयत पढ़िए तो पता लगेगा कि इमारत बनाने पर दोनों फरीक मुत्तफिक थे, इख्तलाफ बस यह था कि इमारत किस तरह की हो? तो अगर बिल्फर्ज़ गालिब आने वाले काफिर हों, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, फिर यह कि मुफस्सिरीन तसरीह करते हैं कि गालिब आने वाले लोग मोमिन थे चुनानचः मुआलिमुत्तन्जील बगवी में है किः

"मुसलमानों ने कहा हम इन पर मस्जिद की तामीर करेंगे जिसमें परवरदिगार आलमयान के लिए लोग नमाज पढ़े।"

खाजन ने लवाबुत्तावील में लिखा है कि**!**

"इब्न अब्बास ने इस इमारत के बारे में फरमाया कि मुसलमानों ने कहा हम इन पर मस्जिद बनाएंगे जिस में लोग नमाजें पढ़ें, इसलिए कि यह हमारे दीन पर थे।"

इसी तरह के अल्फाज तफसीर जलालैन और कशाफ और तफसीर अबुससऊद में है- और "तनवीरुल मकबास इब्न अब्बास" में है कि "जो गालिब आए, वह मोनिन थे, उन्होंने कहा कि हम इन पर मस्जिद बनाएंगे कि यह हमारे दीन पर थे"

और नेशापूरी ने गरायेबुलकुर्आन में लिखा है कि

"जो गालिब आए वह मुसलमान जमाअत थी और उनका बादशाह मुसलमान था, इसलिए उन्होंने वहा मस्जिद बनायी जिसमें मुसलमान नमाज पढें और उनके इस महले कयाम से बरकत हासिल करें और इन्हीं को ज्यादा हक था उन कूबूर की हिफाजत के लिए इमारत बनाने को इस सब के बाद क्या इस शख्स का कहना दुरुस्त हो

सकता है कि वह गालिब आने वाले मआज़ अल्लाह काफिर थे जबकि इतने बड़े मुफस्सिरीन जिनमें तरजुमानुल कुर्आन "जरा अल्अमातः" अब्दुल्ला बिन अब्बास भी है, उन्हें अहले इस्लाम व अहले ईमान से बता रहे हैं।

इसके बाद आइए सुन्नत पर नजर डालें, मालूम होना चाहिए कि हमारी गुफतगू यहाँ इस जमाअत के मुकाबले में है जिनके यहां मेयार सुन्नत में एक तो वह चीज है जो हमारे और उनके दरमियान मुशतरिक है। यानी सुन्नत पैग़म्बर खुदा सं0 जिसमें आपका क़ौल, फ़ेल, और तक़रीर दाख़िल है। और एक बात में वह हमसे अलग है यानी वह सहाबा रसूल की पैरवी भी जरूरी समझते हैं और उस हदीस को मानते हैं कि मेरे असहाबे मिस्ल सितारों के है जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे तो अब हमें लाजिम है कि कबरों की तामीर के सिलसिले में पहले सुन्नते रसूल को पेश करें, फिर सीरते सहाबा व ताबईन कि यह सब हुज्जत कायम होने के लिए काफी है।

(1)

उसमान बिन मज़ऊन की कब्र के लिए रसूल का अमल

नूरद्दीन समहूदी ने वफा उल वफा में लिखा है कि "मुहम्मद बिन कुदामा की रिवायत है कि उनके बाप के ज़रिए उनके दादा से कि जब रसूल खुदा स0 ने उसमान बिन मज़ऊन को दफन किया तो हुक्म दिया कि उनकी कबर के सरहाने एक पत्थर रख दिया जाये कुदामा का ब्यान है कि जब अर्से के बाद हम वकीय गए तो उस पत्थर को देखा और समझे कि यह उसमान बिन मजऊन की कबर है।"

दूसरी रवायत में है कि

"हजरत स0 ने फरमाया कि यह पत्थर में इसलिए रखवाता हूँ

कि मेरे भाई की कबर का उससे इल्म हो और उसके पास अपने अज़ीज़ो में जिसका इन्तिकाल हो, उसे मैं दफन करूं।"

और ज़ाहिर है कि किसी हुक्म या अमल के साथ जब वजह बता दी जाय तो वह वजह जिस सूरत से ज्यादा हासिल हो, वह हुक्म वहा बदर्जा अवला जारी होगा हजरत सं0 ने पत्थर रखने की वजह यह बताई कि इससे कबर का इल्म हो और उससे उसके पास दूसरी कुबूर बनाये जा सकें, जाहिर है कि जरीह या कुब्बा बनाने का मक्सद भी यही होता है जो उससे बदर्जा अतम पूरा होता है तो अमल हजरत पैगम्बर खुदा स0 का उसके इसतेहसान का सुबूत होगा।

हर शख्स समझ सकता है कि हज़रत स0 के सामने बहुत से सहाबा की वफात हुई, मगर किसी के लिए हज़रत स0 ने यह एहतिमाम नहीं फरमाया, इससे साबित होता है कि सब दफन होने वाले यकसाँ नहीं होते और इसी लिहाज से सब कबरे यकसा नहीं होनी चाहिए बल्कि बाज को इम्तियाजे खास होता है। ख्वाह सब्कत ईमानी की वजह से या दीनी एजाज की वजह से और वह इब्तिदायी इस्लाम का दौर बेसरोसामानी का था, जो आम मेयारे ज़िन्दगी पैगम्बर खुदा स0 और फिर दूसरे मुसलमानों का था, उसके लिहाज़ से जरिह और कुब्बे वगैरा की तामीर मुमकिन न थी, लिहाज़ा उस वक़्त के लिहाज़ से इम्तियाज़ी अलामत जो हो सकती थी, उसका उसमान बिन मज़ऊन के लिए रसूल खुदा स0 ने इन्तिजाम कर दिया और जब आम मेयारे ज़िन्दगी मुसलमानों का ऊँचा हो गया तो इसी लिहाज़ से अंबिया व अवलिया के कुबूर के लिए इम्तियाजी निशान के तौर पर इमारतों में तरक्की होने लगी, जो होना चाहिए थी, और जितना मरतबा जिस का ज्यादा हो इसके लिहाज से इसमें इज़ाफा होना चाहिए।

(2)

इब्राहीम फरज़ंदे पैगम्बर स० की कब्र पर इमारत

उसी किताब वफा उलवफा में इब्न जबाला की रवायत है "सैय्यद बिन मुहम्मद बिन जबीर से कि उन्होंने इब्राहीम फरज़न्द पैगम्बर खुदा स0 की कब्र देखी "ज़दरा" के पास, अब्दुल अजीब बिन मुहम्मद ने कहा यह वह घर है जो बाद में जैद इब्न अली की मिल्कियत में आया।"

अगर इमारत का होना कब्र पर जाएज़ न होता तो रसूल खुदा स0 अपने फरज़न्द इब्राहीम को घर के अन्दर क्यों दफन करते और अगर हम बिल्फर्ज यह मानें कि कब्र सहन में थी, जब भी दीवारे सहन की तो कबर के गिर्द होगी, हालांकि वह लोग उसे भी ममनू समझते हैं।

(3)

हज़रत खातून जन्नत की सीरत

वफा उलवफा में इमाम मुहम्मद बाकिर अलै0 की रवायत है कि "जिगर गोशा रसूल खुदा स0 हजरत फतिमा ज़हरा इस्लामुउल्लाह अलैहा जनाब हमज़ा रिजवानुल्लाह की कब्र की ज़्यारत को जाती थी और उसकी मरम्मत करती थी और दुरुस्त करती थी और उन्होंने भी उसकी शनाख्त के लिए एक पत्थर रख दिया था।"

मालूम होना चाहिए कि यह अमल हजरत फातिमा जहरा अलै0 का अपने वालिद बुजुर्गवार के दौरे हयात में था और जाहिर है कि हजरत सरवरे कायनात स0 के इल्म में था, इसलिए वह तकरीर रसूल में दाखिल होकर जुज सुन्नत रसूले खुदा स0 करार पाता है। और यह बिल्कुल वहाबी नजरिये के खिलाफ है इसलिए कि वह खास तौर पर ख़्वातीन के लिए कब्र की ज्यारत को कतअन ममनू समझते हैं और फिर कुबूर के इम्तियाज़ को मुतलकन मना करते हैं मगर जनाब फातिमा स0

कब्र हमज़ा की बराबर मरम्मत करती रहती थी, अगर उसकी बका जरूरी न समझती तो वक्तन फवकतन उसकी ख़बर क्यों लेतीं और जब हिफाज़त कब्र का मुस्तहसन होना इस अमल से ज़ाहिर हो गया तो कुब्बे की तामीर करना जो इस मकसद को पूरा कर सकता है क्यों मुस्तहसन न होगा?

(4)

कब्रे रसूल के लिए हजरत अली और तमाम अहले बैत व सहाबा का अमल

हर शख़्स समझ सकता है कि अगर कब्र पर इमारत बनाना ममनू हो तो इस से कोई फर्क नहीं पड़ता, पहले से हो और उसमें कब्र बनायी जाये या कब्र पहले हो और उस पर इमारत तामीर की जाए, क्योंकि मेयार दोनों में एक है और वह यह है कि लोग ज़्यारत के लिये आयें और वह इमारत उनके लिए बाइसे आराम होगी, अब अगर यह चीज ममनू हो तो खुद हज़रत पैगम्बर खुदा स0 को हुजरये आयशा में क्यों दफन किया जाये जिस पर यकीनी तौर पर छत थी खुसूसियत के साथ अमीरुलमोमिनीन हजरत अली बिन अबी तालिब अलै0 इस पर इकदाम क्यों करते जबकि वहाबियों के कौल के मुताबिक उन्ही को हज़रत पैगम्बर खुदा स0 ने कब्रों की इमारत को मिसमार करने के लिए भेजा था इससे जाहिर है कि अहले बैत और सहाबा सब मुत्तफिक थे कि कब्र पर इमारत होने में कोई मुजायका नहीं।

(5)

वक़्तन फवक़्तन रौज़्ये रसूल के तजदीद व इस्तेहकाम की कोशिश

वफा उल वफा समहोवी में है कि "पैगम्बर खुदा स0 के हुजरे की छत पहले दरख़्ते ख़ुरमा की छाल से बनी हुई थी, सबसे पहले जिसने इटों वाली छत बनवायी वह खलीफ़ा दोम उमर बिन खत्ताब थे।"

इसके बाद जैसा नोदी ने शरह सहीह मुस्लिम ने लिखा है :

"जब मुसलमानों की कसरत हुई और सहाबा और ताबईन को मस्जिद रसूल स0 की तौसी की जरूरत हुई और यह तौसी अज़वाजे रसूल के मकानात तक पहुंच गयी जिसमें हुजरये आयशा भी था तो इन हज़रात ने कबरे रसूल स0 के गिर्द दायरे की शक्ल में ऊंची दीवारे बनवा दी ताकि मस्जिद में इस तरह नुमाया न हो कि अवाम इसकी तरफ रुख कर के नमाज पढ़ने लगे फिर दो दीवारें कबर के दो शुमाली गोशो से मिलाकर बनायी ताकि कोई कबर की तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ ही न सके।"

इससे ज़ाहिर है कि कब्र पर या कब्र के गिर्द इमारत में कोई हर्ज नहीं, बस कब्र की तरफ रुख़ करके नमाज़ न होनी चाहिए।

इसके बराबर रौज़ये रसूल की बका और तजदीद में एहतिमाम होता रहा यहाँ तक कि बुख़ारी ने सहीह से रवायत की है हशाम बिन उरवा से और उन्होंने अपने बाप उरवा बिन जुबैर से कि**!**

"जब वलीद बिन अब्दुल मलिक के जमाने में हुजरये रसूल स0 की चार दिवारी गिर गयी और उसकी तामीर शुरू हुई तो एक पैर बाहर निकल आया जिससे यह ख़्याल करके लोग घबरा गए कि यह रसूल अल्लाह स0 का क़दमे मुबारक न हो और कोई ऐसा न मिला जो इस के मुताआल्लिक किसी अपने इल्म का इज़हार करें। बस उरवा बिन जुबैर ने देख कर कहा कि यह बखुदा रसूल अल्लाह स0 का पाये मुबारक नहीं है, हो न हो यह उमर का पैर है।"

और मालूम होना चाहिए कि वलीद की ख़िलाफत 86 हि0 से 96 हि0 तक थी, इस ज़माने तक सहाबा में से बाज़ अफराद मौजूद थे।

(6)

ज़ौजये रसूल उम्मे हबीबा की कब्र पर इमारत

समहूदी ने लिखा है कि ज़ैद बिन सायेब की रवायत है अपने दादा की जबानी कि:

जब अकील बिन अबी तालिब रजी0 ने अपने घर में एक कुँआ खुदवाया तो एक मुनक्कश पत्थर निकला जिस पर लिखा था कि "यह उम्मे हबीबा दुखतर बिन हरब की कबर है तो अकील ने कुआँ को पटवा दिया और उस पर इमारत बनवा दी, इब्न सायेब का बयान है कि मैं उस इमारत में दाखिल हुआ तो मैंने वह कब्र खुद देखी।"

(7)

इमाराते कुबूरे अंबिया बिल्खुसूस हज़रत इब्राहीम अलै0

अल्लामा मआसिर सैय्यद इब्राहीम रावी रिफायी ने "अवरौक़े बगदादिया" मैं लिखा है कि:

"जब मुसलमानों ने शाम और बैतुल मुकद्दस को फतह किया तो अंबिया की कबरों पर इमारते देखी, उन्हे मुनहदिम नहीं किया और सबसे ज्यादा मशहूर वह इमारत है जो जनाब इब्राहीम खलील अल्लाह की कबर पर है और उसे खलीफा दोम उमर बिन खत्ताब ने देखा और उसे मुनहदिम नहीं किया, और शेख तकीयुद्दीन इब्नतैमिया ने अपनी किताब "सिराते मुस्तकीम" में इस इमारत के वजूद का जनाब इब्राहीम की कब्र पर फतूहात के दौर में जिक्र किया है मगर कहा है कि 400 हि0 तक इस इमारत का दरवाज़ा बन्द था।"

हम कहते है कि सहाबा का जिनमें खलीफा दोम उमर भी थे, इस इमारत को बाकी रखना इसकी दलील है कि कब्र पर इमारत के होने में उनके नजदीक कोई हर्ज नहीं था, और इब्न तैमिया का यह कौल कि दरवाजा इसका 400 हि0 तक बन्द था। एक इद्दआ है जिसका

कोई सुबूत नहीं बल्कि तारीख़ का बयान इसके ख़िलाफ़ है और पता चलता है कि चौथी सदी के पहले भी लोग हज़रत इब्राहीम अलै0 की ज़्यारत को जाते थे चुनान्चे सैय्यदा नफीसा जिनकी वफात दूसरी सदी हिजरी में है हर नमाज के बाद दुआ करती थी कि-

"खुदाबन्दः मुझे अपने खलील इब्राहीम की कब्र की ज़्यारत नसीब कर।"

इसका ज़िक्र उस्मान बिन मददोख शाफयी ने अपनी किताब "अल अदलुश शाहिद फी तहक़ीकुल मुशाहिद" में किया है।

(8)

जनाब फातिमा बिन्ते असद की कब्र पर इमारत

गुज़िश्ता शवाहिद के बाद ही इमारते कुबूर के जवाज में कोई शक न रहना चाहिए जबकि रसूल खुदा स0 का अमल और तकरीर और फिर अहले बैत और सहाबा व ताबईन का अमल खैरुलकुरून और उससे मिली हुई सदियों में बराबर जारी रहा और जो शख्स मजीद जुस्तुजू करे, उसे और ज्यादा पता चलेगा कि पहली ही सदी में कुब्बे की तामीर होने लगी थी, चुनानचः समहूदी ने वफा उलवफा में लिखा है किः

"फातिमा बिन्त असद (मादर हजरत अली बिन अबी तालिब) की कबर के मुतअल्लिक अब्दुल अजीज की रवायत हैः जिसकी सनद मुहममद (हनीफा) इब्न अली बिन अबी तालिब तक पहुंचती है, कि जब फातिमा बिन्त असद की हालत मरज में खराब हुई और पैगम्बर खुदा स0 को इसका इल्म हुआ तो फरमाया कि इन्तिकाल हो जाये तो फौरन मुझे इत्तला देना चुनानचः जब वफात हो गई तो हजरत स0 को इत्तेला दी गयी, फौरन हज़रत तशरीफ लाये और उनकी कब्र खोदने का हुक्म

दिया उस मस्जिद के अन्दर की जमीन पर जिसे अब "कब्रे फातिमा कहा जाता है।"

समहूदी कहते है कि यह कहना जनाब मुहम्मद हनीफा का कि "उस मस्जिद के अन्दर की जगह में" बतला रहा है कि उस वक्त उनकी कबर पर मस्जिद थी जिस में कबर का आमतौर पर लोगों को इल्म था, मुहम्मद हनीफा की वफात 81 हि0 में है। इसलिए जनाब मुहम्मद हनीफा की यह रवायत बता रही है कि पहली ही सदी में जनाब फातिमा बिन्त असद की कबर की तामीर हो गयी थी।

(9)

जनाब हमजा रजी0 की कबर पर इमारत

वफा उल वफा में है कि अब्दुल अज़ीज ने कहा कि ज़्यादा गुमान हमारे यहाँ यह है कि मसअब बिन उमैर और अब्दुल्लाह बिन हजश दफन हुए है उस मस्जिद के नीचे जो हमज़ा रजी0 की कब्र पर बनी हुई थी।"

और यह अब्दुल आजीज दूसरी सदी के शख्स है जिसकी सराहत समहूदी ने इसके पहले की है और लिखा है कि आइन्दा फसल में हमजा की कबर के जिक्र में अब्दुल अजीज बिन मरवान की जबानी आएगा कि कदीम जमाने से हमजा की कबर पर मस्जिद थी और यह दूसरी हिजरी का जिक्र है।

(10)

जनाब अब्बास रजी0 और इमाम हसन अलै0 की कब्र का कुब्बा

उल्लामा इब्न हजर मक्की ने सवायक महरका में इमाम मुहम्मद बाक़िर

अलै0 के हाल में लिखा है कि:

"आप की वफात 117 हि0 में 58 बरस की उमर में मिस्ल अपने वालिद बुजुर्गवार के ज़हर से हुई थी, और आपकी वालिदा उनके वालिद के चचा इमाम हसन की बेटी थी और आप बाप और माँ दोनो तरफ से हजरत रसूल स0 की औलाद में है और आप भी अपने वालिद के पास इमाम हसन अलै0 और जनाब अब्बास के कुब्बे में जो जन्नतुल बकीय में था दफन हुए" इससे जाहिर है कि अब्बास की कब्र पर कुब्बा 117 हि0 में मौजूद था और मुहद्दिस ख्वाजा पारसा बुखारी ने अपनी किताब "फजलुल खिताब" में इमाम जैनुल आबिदीन के हाल में लिखा है कि:

"आप की वफात मदीने में 95 हि0 में हुई और आपकी उम्र 54 बरस की थी और आप इस कुब्बे में दफन हुए जिसमें अब्बास और आपके चचा हसन दफन थे। फिर इसमें आपके फरज़न्द मुहम्मद बाक़िर अलै0 और उनके फरज़न्द जाफर सादिक़ अलै0 दफन हुए।"

और इब्न खल्कान ने आपके हाल में लिखा है कि:

"आपकी वफात 94 हि0 में हुई और आपके चचा इमाम हसन अलै0 के मक़बरे में इस कुब्बे में दफन हुए जिसमें अब्बास की कबर थी।"

इसी तरह इमाम मुहम्मद बाकिर अलै0 के हाल में लिखा है। इससे मालूम होता है कि पहली सदी के आखिर में अब्बास की कबर पर कुब्बा मौजूद था।

इसके बाद यह कहना कि "यह बिदअत ताबईन के बाद पैदा हुई है" हकीकत अमर से बेखबरी या तजाहुल का नतीजा है बल्कि नजद के काजी कुजा अब्दुल्लाह इब्न सुलेमान बिन वलहीद ने इस पर तुररा कर दिया है कि अपने मजमून में जो "उम्मुलकुरा।" के शुमारा रोजजुमा 4 जमादी अस्सानी 1345 हि0 में शाय हुआ है लिखा है कि:

खैरुलकुरून में सुन्ने में नहीं आया कि यह बिदअत पैदा हुई हो बलकि बिदअत पाँच सदियों के बाद वजूद में आयी है।"

यह निहायत अजीब इददआ है जिसे तारीख़ बिल्कुल झूठ साबित करती है क्योंकि तारीख से पाँच सदी के बहुत कबल से कुब्बो का वजूद आपके सामने आ चुका है और सहमूदी ने वफा उलवफा में लिखा है कि:

"पैगम्बर खुदा स0 की कबर मुतहर की इमारत की दीवारें नीची थीं। अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने निहायत इस्तेहकाम के साथ उन्हें ऊँचा करवा दिया। फिर अबुल बखतरी" ने जो हारून रशीद की तरफ से मदीने का गवरनर था 193 हि0 में उस हुजरे की छत तामीर करवायी, फिर मुतवक्किल ने हरमैन के गवरनर इस्हाक बिन सल्मह को 242 हि0 में हुक्म दिया कि वह इस हुजरे को संगमरमर से मजबूत बनवा दे।

और इब्न खल्कान ने इमाम मूसा काज़िम अलै0 के हालात में खतीब बगदादी से नकल किया है जो 392 हि0 में पैदा हुए है कि।

"मूसा काज़िम अलै0 मकाबिर कुरैश में कुब्बे से बाहर दफन हुए और उनकी कब्र वहाँ मशहूर है ओर ज़्यारत गाहे खल्क है। और इस पर रौज़ा बना हुआ है ओर कन्दीले वहाँ आवेज़ा है और तरह-तरह के सामान और बे इन्तिहा फर्श फुरोश है।"

इसमें यह अल्फाज़ कि "कुब्बे से बाहर दफन हुए" यह बताते है कि एक कुब्बा वहां आपके दफन होने से पहले मौजूद था और इमाम मूसा काज़िम अलै0 की वफात 183 हि0 में हुई है और इस वक़्त मकाबिर कुरैश में कुब्बा मौजूद था, और फिर मूसा काज़िम अलै0 का रौज़ा खतीब के ज़माने से पहले बन चुका था तो ज़्यादा से ज़्यादा उसे चौथी सदी हिजरी के दरमियान में मानना पड़ेगा।

और जमालुद्दीन इब्न अनीया ने "उम्दतुततालित" में लिखा है कि "हारून रशीद ने हजरत अमीरूल मोमिनीन अलीबिन अबीतालिब अलै0 की कवर पर कुब्बा तामीर कराया था।"

और ऐसा ही "हबीब अलसीर और कामिल इब्न असीर वगैराह में है और हुसैनबिन हज्जाज शायर जिनकी वफात 327 हि0 में है उनके एक कसीदे का मतला इस मज़मून का है।"

"ऐ नजफ में चमकते हुए कुब्बे वाले। जो आपकी कब्र की ज़्यारत करे और शिफा तलब करे, वह शिफा पाएगा। और इब्न खल्कान ने अबुतमाम हबीब बिन ओस ताई (शायेर) के हालात में लिखा है कि "उनकी वफात 230 हि0 में हुई और उनकी कब्र पर नहशल बिन हमीद तूसी ने कुब्बा तामीर किया।"

इसी तरह बोरान बिन्त हसन बिन सुहैल के कुब्बे का ज़िक्र किया है जिनकी वफात 271 हि0 में हुई है। इसी तरह गुसदुलदौला दैलमी के हाल में लिखा है जिनकी वफात 271 हि0 में हुई है कि!

"वह पहले अपने घर में दफन हुए, फिर इमाम मूसा काज़िम अलै0 के हरम की तरफ मुन्तकिल किए गए जो मकाबिर कुरैश में है।"

इब्न वकीय शायेर के हाल में लिखा है जिनकी वफात 393 हि0 में हुई कि "वह बड़े कब्रस्तान में दफन हुए उस कुब्बे में जिसकी तामीर वहाँ उनके लिए हुई।"

और उसमान बिन मद्दूख शाफई ने अपनी किताब "अलअदलुराशहिदफी तहकीकिलमुशाहिद" में सैय्यद इब्राहीम हुसैन के रौजे के बारे में लिखा है कि:

"यह रौज़ा काहिरा से बाहर खन्दक के करीब है उसके और मतरिया के बीच में और मस्जिद तबराला खशीदी के नाम से मशहूर है

इसलिए कि उन्होंने उसे सैय्यद इब्राहीम मज़कूर की कब्र पर बनवाया है फिर लिखा है कि तबरा खशदी की वफात 360 हि0 में हुई"

रौजतुससफा से पता चलता है कि मामून खलीफा अब्बासी ने अपने बाप हारून रशीद की कब्र पर कुब्बा बनवाया था और यह 203 हि0 के कबल की बात है। चुनान्चे इमाम रज़ा अलै0 के हाल में अबुस्सल्लात हरवी की रवायत दर्ज है, उनका बयान है कि :-

"मैं एक दिन इमाम रजा अलै0 के पास था, आपने फरमाया उस कुब्बे की तरफ जाओ जिसमें हारून रशीद की कब्र है और थोड़ी सी मिट्टी वहाँ की ले आओ, उन का बयान है कि मैं गया और ले आया तो आपने उसे सूंघा और फिर फेंक दिया फरमाया। बहुत जल्द वह वक्त आने वाला है कि मेरे लिए वहीं कबर खोदी जाय।"

सबको मालूम है कि यह खलीफा मामून अल्अब्बासी खुद अहले इल्म में से था जैसा कि सुयूती की तारीख अलखुल्फा में है कि मामून अदल व इन्साफ का पाबन्द, इल्म फिका का माहिर और बड़े उल्मा में इस का शुमार था, फिर दूसरे उल्मा भी इस ज़माने में बकसरत मौजूद थे जिन में इमाम शाफयी, अहमद बिन हंबल और सुफयान बिन अनीया ऐसे लोग थे मगर किसी ने कुब्बे की तामीर में इज़हार इख़्तिलाफ नहीं किया है।

इस मुख़तसिर किताब में इतने शवाहिद का दर्ज करना काफी है जो शख़्स पूरे तौर पर तलाश करे उसको मजीद शवाहिद इसके बकस्रत मिलेंगे।

'इजमा', यहाँ हम उस इसतिलाह के मुताबिक उसे देखेंगे जो अहले सुन्नत की है यानी मुसलमानों की एक कसीर जमाआत का इत्तिफाक राय। यह कुबूर की तामीर की मवाफ़िकत और मुसलमानों की

राय आम इन इमारतों के बका और एहतिराम पर मुत्तफिक रही इसका सुबूत इससे मिलता है जिसे हाफिज़ जलालुद्दीन सुयूती ने तारीख़ अलखुल्फा में लिखा है कि जब मुतवक्किल ने इमाम हुसैन अलै0 के रौजे को मुनहदिम कराया और इससे भी यह ज़ाहिर है कि तीसरी सदी में आप की कब्र पर इमारत थी और इसके गिर्द और भी इमारतें थी जिन्हें मुतवक्किल ने मुनहदिम कराके खेती करा दी और लोगों को ज्यारत से रोक दिया और मुतवक्किल का नासबी यानी दुशमन अहले बैत होना आम तौर पर मशहूर था तो मुसलमानों को इससे बड़ा सदमा पहुँचा और बगदाद के बाशिन्दों ने उसके खिलाफ नारे दीवारों पर लिख दिए और शुअरा ने उसकी मज़म्मत में अशआर कहे जिनमें से बाज़ सुयूती ने नकल भी किए है। इससे ज़ाहिर है कि आम मुसलमान जिन्हें "जमहूरेउम्मत" कहना चाहिए, इस इमारत के एहतिराम पर मुत्तफिक थे और अक्सर उल्मा ने इसके मुताबिक तसरीह की है चुनान्चे, साहब दर्रे मुख़्तार ने लिखा है किः

"इमारत बनाने में एखतिलाफ है। हमारा मुखतार यह है कि इसे कोई मुजायका और मुल्ला अली कारी ने शरह मिशकात में लिखा है किः"

"सल्फ सालिहिन ने मुस्तहसन समझा है इमारत बनाने को मशायेख़ और मशहूर उल्मा की कब्रों पर ताकि लोग इनकी ज़्यारत को जायें और इन इमारतों में ठहरकर आराम पायें।"

और ऐसा ही मुहद्दिस मुहम्मद ताहिर फितनी ने मजमा अलबहार में लिखा है और दूसरे उल्मा के अकवाल भी इसी के मुताबिक है।

इसके बाद उल्माये मदीना का यह कौल गलत हो जाता है कि

कुबूर पर इमारत बनाना इज्माअन ममनू है इसलिए कि वह अहादीस जो उसे रोकते हैं सहीहुस्सनद नहीं मगर मालूम हो गया कि इज्मा और उन अहादीस का अददआ बिल्कुल बेबुन्याद है।

उनका यह कहना कि अकसर उल्मा ने फत्वा दिया है कि इन इमारतों को मुन्हदिम करना वाजिब है। हजरत अली अलै0 की हदीस की बिना पर कि आपने अबुललहयाज से यू फरमाया, हम जहाँ तक किताबों पर नजर डालते हैं, हमें यह उल्मा नजर नहीं आते, मालूम होता है कि यह तमाम उल्मा सिर्फ नजद की सरज़मीन से तअल्लुक रखते हैं। बाकी हर जमाने के उल्मा तो तमाम तेरह सदीयों में इन इमारतों को देखते रहे और कभी उनके मुन्हदिम करने का फतवा नहीं दिया, सिवा इब्न तौमिया और इब्न कैय्यिम के जो जमहूर उल्मा की मुख़ालिफत का निशाना रहे और रुसवाए ज़माना हुए। इसके बरख़िलाफ तमाम उल्मा के सुकूत और ताईद के साथ तमाम मुसलमान इन इमारतों की तजदीद ओर इसतेहकाम की तरफ मुतवज्जा रहे। अबुललहाज वाली हदीस से जो यह लोग इस्तनाद करते है, वह बातिल है कई वजूह से।

1. अव्वल यह कि यह हदीस कुफ्फार व मुशरिकीन के कुबूर से मुत्आल्लिक है जिनके वजूद से कोई दीनी फायदा नहीं बल्कि मुज़र्रत का अंदेशा है, लेकिन अंबिया व सालिहीन के कुबूर की बक़ा में दीनी फ़वायद है जो पसन्दीदा खालिक है। जैसे ज्यारत इन कुबूर की जिसके लिए हुक्म भी हुआ है कि कब्रों की जाकर ज़्यारत करो कि उनसे आख़िरत की याद तरो ताज़ा होती है और फिर उन कारनामों की याद ताज़ा होती है जो इन हज़रात ने इशाअते दीन और खुदा की राह में किये थे और कुबूर कुफ़्फार से इस हदीस के तअल्लुक होने का करीना खुद हदीस में मौजूद है, इसलिए कि एक साथ दो चीजों के महव करने

का हुक्म हुआ, एक मूर्तियाँ और दूसरी ऊँची कब्रें और ज़ाहिर है कि यह मूर्तियां मुसलमानों की तामीर करदा नहीं थी बल्कि मुशरिकीन की बिना करदा थी, तो यह कब्रें भी उन्हीं की होंगी और यह दरायतन भी ज़ाहिर है क्योंकि मुसलमान उस दौर में माली हैसियत से कहाँ इतने मुतमइन थे कि वह कब्रों पर इमारतें तामीर कराते और सहाबा शर्फ सुहबत के लिहाज से सब बराबर की हैसियत रखते थे। लिहाज़ा उनमें कुछ अफराद को ऐसी इम्तियाजी खुसूसियत हासिल न थी कि इनकी कब्रों पर इमारत तामीर होती लिहाजा वह कुबूर जिनके मिटाने का हुक्म हुआ था हरगिज मुसलमानों की कब्रें न थी वरना उन पर साबिक ख़ुल्फा के दौर में इमारतें क्यों तामीर होती जो अब जनाब अमीर अलैहिस्सलाम को उनके मुन्हदिम कराने की जरूरत होती और फिर रसूल खुदा स0 के हुक्म का आपने हवाला दिया कि मुझे इस मुहिम के लिए भेजा था तो रसूल अल्लाह स0 के दौर में मोमिनीन के कुबूर पर यह इमारते क्यों कर बन गयी और खुद हजरत स0 को बवक्त तामीर खबर न हुई जो बाद में उनके गिराने के लिए हजरत अली अलै0 को भेजा?

अब यह कि वह अंबिया सल्फ की कब्रें हों तो ऐसा भी नहीं था। एक तो वह मदीना और उसके अतराफ में न थीं बल्कि शाम व फिलस्तीन में थी या ईराक में थी और फिर अगर उन कब्रों के इन्हिदाम को भेजा था तो वह बाद में बाकी क्योंकर रहा जो तमाम अतराफे अर्ज़ में मुनतशिर है जैसे जनाब दानियाल अलै0 की कब्र शोसतर में और जनाब हूद अलै0 और सालेह और जनाब यूनुस और जिलकफल और यूशा के कुबूर नजफ और सरज़मीन बाबुल में और बहुत से अंबिया के कुबूर शाम और फिलस्तीन में।

और सुनीए!

रसूल अल्लाह स0 की मादरे गिरामी जनाब आमना बिन्त वहब की वफात कब हुई थी? जब हजरत स0 की उमर मुबारक 6 बरस की थी और चालीस बरस की उम्र में हजरत स0 मबउस बरिसालत हुए यह चौतीस हो गए, फिर तेरह बरस के बाद हिजरत हुई। अब हुए सैतालीस (47) बरस, फिर 8 हि0 में फतह मक्का हुई। यह पचपन 55 बरस यानी आधी सदी का ज़माना गुज़र गया और उस वक़्त तक जनाब आमना की कब्र नुमायां थी, मगर रसूल खुदा स0 ने उसे गिराने या मिटाने का हुक्म नहीं दिया बल्कि खालिक से उनकी कब्र की ज़्यारत के लिए इजाज़त हासिल फरमायी और खुदावन्द आलम ने हज़रत स0 को इसकी इजाज़त दी और आप कुछ सहाबा की मयीयत में वहाँ ज़्यारत के लिए तशरीफ़ ले गए, सरहाने बैठे और सरमुबारक को इस तरह जुम्बिश दे रहे थे जैसे कुछ बातें कर रहे हो और फिर गिरिया फरमाया जिस पर तमाम हाज़िर वक़्त मुसलमान जो सब सहाबा थे गिरिया करने लगे। इसका ज़िक्र सहीह मुस्लिम में भी है।

फिर इसका भी ज़िक्र पहले हो चुका है कि आप स0 के फरज़न्द जनाब इब्राहीम की कब्र भी मकान के अन्दर थी और वह कब्र खुद हज़रत स0 नं बनवायी थी। यह मकान भी हज़रत स0 के दौर में और इसके बाद बराबर बाकी रहा।

इसके बाद खुद हज़रत स0 की कब्र मुबारक इमारत के अन्दर हुई जिसे खुद हज़रत अली बिन अबी तालिब और दीगर अहले बैत और सहाबा ने बनवाया और वह इमारत भी बराबर बाकी रही बल्कि उसके स्तेहकाम और इमारत की शान में इज़ाफा किया जाता रहा और इसके बाद जनाब अब्बास अम्मे रसूल स0 की कब्र पर कुब्बे की तामीर भी इसी दौर में हुई जो हज़रत अमीर अलै0 के दौर हुकूमत के कबल का था और

यह कुब्बा भी इसके पहले और इसके बाद बराबर कायम रहा।

इस सबसे ज़ाहिर है यह मुन्हदिम करने का हुक्म अगर था तो वह कतअन कुफ्फार व मुशरिकीन के कुबूर से मुताआल्लिक था और मुकर्रबीन व सालिहीन के कुबूर में इम्तियाज खास का होना मरतकजात नुफूस अहले इस्लाम में से था चुनानचा असाबा हाफिज़ इब्न हजर में मुहम्मद बिन शरजील के हाल में है कि खुद उनका बयान है कि :-

"मैंने साअद बिन मआज़ की कब्र की थोड़ी सी ख़ाक मुट्ठी में लेकर सूंघी तो इसमें से मुशक की खुशबू महसूस की।"

अब जबकि वह हुक्म इन्हिदाम दर सूरत यह कि उस हदीस के माने यही हो, कुफ्फार और मुशरिकीन के कुबूर से मुतअल्लिक था तो उससे अइम्मा दीन और मोमिनीन सालिहीन के कुबूर के इन्हिदाम पर इस्तदलाल करना बिल्कुल गलत है। दूसरी बात यह है कि "जो कब्र ऊँची देखो उसे बराबर कर दो" इसके माने यह निकलते हैं कि खुद कब्र ऊँची है जैसे इसाइयों की कब्रें होती हैं या खुद मुसलमानों के एक तबके में कोहाने शुतर की तरह ऊपर उठी हुई कब्रें बनायी जाती है तो उन कब्रों को ऊपर से मुन्हदिम करके बराबर कर देने का हुक्म हो लिहाज़ा इस हुक़्म की ज़द उन पर नहीं पड़ती जो मुसतह बनायी गयी हों लेकिन इनके गिर्द इमारत बना दी गयी हो या कुब्बे की तामिर की गयी हो जैसा कि अइम्मा दीन और सालीहीन व मुर्कर्बीन के कुबूर होते हैं। हदीस का तअल्लुक उन कुबूर से नहीं है।

हकीकत यह है कि खुद कुबूर की साख़्त में इख़्तिलाफ है। अहले सुन्नत की अक्सरीयत कोहान शुत्र की तरह ऊँची बनाती है लेकिन फिका इमामिया में जिसकी बिना अइम्मा अहले बैत अलै0 के तालीमात पर कायम है जो अपने जद्दे बुजुर्गवार हज़रत पैगम्बर खुदा

स0 के पहुंचाए हुए शरह इलाही के अहकाम से ज्यादा वाकिफ थे और नेज फिका शाफयी में कब्र को मुसत्तह बनाना चाहिए। यह हदीस इससे मुतअल्लिक है। इसलिए हमारे एक बड़े मुहद्दिस शेख़ हुर आमली अलै0 ने हदीस की अपनी बड़ी मबसूत किताब "वसायेलुशशिया" में उसे "तसतीहकब्र" के बाब में दर्ज किया है और मुहद्दिस नबी ने भी जो बड़े उल्मा अहले सुन्नत में से हैं यही मतलब समझा है। चुनान्चे शरह सहीह मुस्लिम में इस हदीस की शरह में लिखा है कि:

"सुन्नत यह है कि कब्र ज़मीन से ज़्यादा ऊँची न हो और उसे कोहान शुतर की तरह का न बनाया जाय बल्कि बस एक बालिश्त ऊँची रखी जाय और यही शाफयी और उनके हम खयाल उल्मा का मसलक है।"

और किस्तलानी ने भी शरह सही बुखारी में उसे कब्रों के मुसत्तह बनाने के दलायल में दर्ज किया है और कहा है कि उस हदीस में कुबूर के बराबर करने के मायने यह नहीं है कि उन्हें ज़मीन के बराबर कर दिया जाय बल्कि उसका मतलब यही है कि उन्हें मुसत्तह कर दिया जाय।

हकीकत यह है कि सव्वतिया की लफ़्ज़ जो तसव्वयता से है, इसके साथ अगर किसी चीज का नाम लिया जाय तो मायने उस शैय से बराबर करने के होंगे लेकिन जब किसी दूसरी चीज़ का नाम न लिया जाय तो उसके मायने यह होंगे कि बस अपनी जगह उस शैय को मोतदिल और मुसत्तह बना दिया चुनानचः फैयतोमी ने मिस बाहुलमुनिर में लिखा है कि इस्तवलमकान के माने यह है कि यह जगह मोत दिल व मुतवाजिन हो गयी और सव्वयता के माने है कि मैंने उसे मोतदिल व मुतवाजिन बना दिया इस तरह कामूस में है, अगर वह माने होते तो

सव्वयता बिल अर्ज कहा जाता जैसे कामूस ने कहा है कि सत्वयता बिही तसरियता और सत्वयता बैन हुमा और सावैयता अवसरीयता बिही, इस सबके माने यह है कि मैंने उसको दूसरे के बराबर कर दिया, यहा सिर्फ सवय्यता है तो इसके माने वही है कि जो उल्मा ने समझे हैं कि कबर की बीच वाली ऊँचाई को खत्म करके उसे मुसत्तह कर दिया जाय।

अगर कब्र को ज़मीन के बिल्कुल बराबर करने का हुक्म होता तो पैगम्बरे खुदा स0 ने उसमान बिन मस्उन की कब्र को ज़मीन से ज़रा ऊँचा क्यों रखा जिसकी सराहत हदीस में मौजूद है और एक हदीस अभी आएगी जिसमें है कि रसूल खूदा स0 ने एक शख्स को देखा कि कब्र से तकिया लगाए बैठा है और तकिया लगना मुमकिन ही नहीं जब तक कि कब्र ज़मीन से कुछ न कुछ ऊँची न हो।

इस तामीर के शोअबे से मुतअल्लिक एक चीज है कब्र पर साया करना जिस की मुमानियत भी कुछ वहाबी अफराद की ज़बानी गोश ज़द हुई है हालांकि इसका भी वकू उसी दौर में जो खैरुलकुरून था नजर आया है। चुनान्चे असाबा हाफिज़ इब्न हजर में सालबा बिन मालिक की रवायत है किः

"हकम बिन अबील आस की दौरे खिलाफते उसमान में मौत हो गयी और गर्मी उस दिन शिददत से थी तो कब्र पर एक खेमा नसब किया गया कुछ लोगों ने इस पर "चेमेगोई" करना शुरू की तो जनाब उसमान ने कहा कि उमर के जमाने में जैनब बिन्त हजश की कब्र पर खेमा लगाया तो उस वक़्त किसी ने ऐतराज नहीं किया।"

हकम की मौत 32 हि0 में हुई थी।

इसके अलावा तफसीर रूहलमआनी में है कि जनाब मुहम्मद हनफ़िय्या रजी0 ने जनाब इब्न अब्बास रजी0 की कब्र पर खेमा लगवाया

और सहीह बुखारी में है कि जब हसन बिन हसन अलै0 की वफात हुई तो उनकी जौजा मुर्करमा (फातिमा बिन्त हुसैन) ने उनकी कबर पर खेमा नसब किया और वहाँ एक साल कयाम किया।

यह कहना कि "कबरो को मस्जिद बनाना और उनमें नमाज, यह भी ममनू है" इसका मुस्तनद शायद रसूलखुदा स0की यह हदीस हो कि अल्लाह यहूद और नसारा पर लानत करे कि उन्होंने अपने अंबिया की कबरों को मस्जिद बनाया मगर इस हदीस का सहीह मतलब वह है जिसे मुहदिदस ताहिर फितनी ने मज़मा अलबहार में लिखा है किः

''वह लोग इन कब्रों को किबला बनाकर उनकी तरफ हर नमाज़ में मिस्ल बुतों को सजदा करते थे।"

और हाफिज सयूती ने अपनी किताब ""जहर्करबा में इस हदीस की शरह में लिखा है कि!

"जब इनमें कोई नेक आदमी मरता था तो इसकी कब्र पर मस्जिद बनाते थे"

बैजावी ने लिखा है किः

"चूँकि यहूद व नसारा अपने पैगम्बरों की कब्रों का सजदा करते थे और उन्हें किबला बना कर उनकी तरफ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे और उन्हें बुत बना लिया था इसलिए उन पर लानत की गयी और मुसलमानों को रोका गया कि वह ऐसा न करे लेकिन अगर कोई शख़्स किसी नेक आदमी की कब्र के पास मस्जिद बनाए सिर्फ हुसूल बरकत के लिए और इसकी तरफ रुख़ करके नमाज़ न पढ़े तो इसमें दाख़िल न होगा।"

अल्लामा सनदी मदनी हाशिया सुनन निसई में लिखते है किः

"हज़रत स0 का मकसूद यह था कि अपनी उम्मत को डराए

उस से जो यहूदी व नसारा ने अपने पैगम्बरों की कब्रों के साथ किया था कि उन्हें मस्जिद बना लिया तो इस तरह कि उन्हीं को सज्दा करने लगे या उन्हें किब्ला बना लिया कि नमाज़ वगैराह में उन्हीं की तरफ रुख़ करने लगे लेकिन अगर जवारे कब्र में हुसूल कब्र के लिए मस्जिद बनाए तो वह ममनू नहीं है।"

पहले इसी किताब में कब्र पर मस्जिद की तामीर के शवाहिद दर्ज हो चुके है जैसे असहाबे कहेफ़ पर मस्जिद की तामीर और फातिमा बिन्त असद की कब्र पर मस्जिद का जनाब मोहम्मद हनफिया के सामने वजूद और दूसरी सदी में जनाब हमज़ा की कब्र पर मस्जिद का मौजूद होना और यहाँ मजीद इज़ाफा इस पर यह है कि "कुनजूल हकायेक मनादी" में दैयलमीकी रवायत है कि :-

"मस्जिद ख़ैफ में सत्तर नबी दफन है।"

और एक मुकाम पर इसकी रवायत तिबरानी से है। इससे इब्न क़ैय्यिम के इस दावे की रद हो जाती है कि दीन इस्लाम में मस्जिद और कब्र यकजा नहीं हो सकते बल्कि जो बाद में हो, उसे रोक दिया जाय और पहले वाले को बाकी रखा जाय और सबसे बड़ी मिसाल दोनों के यकजा हो जाने की मस्जिद-ए-हराम की है अन्दर हुजरे इस्माईल में जनाब इस्माईल और हाजरा की कब्र का वजूद है।

एक और मायने उस हदीस के यहूद और नसारा ने अपने अंबिया के कुबूर को मस्जिद बना लिया वह है जो इमाम बुखारी ने समझे है, वह यह कि यहूद और नसारा ने अपने अंबिया की कुबूर को खोद डाला और उनकी जगह पर मस्जिदें बना दी तो रसूल स0 ने उन पर लानत की है। पैगम्बरों की तौहीन की वजह से चुनान्चे उन्होंने अपनी सहीह में उन्वान कायम किया है कि मुशरिकीन जाहिलियत की कबरों

को खोद डाला जाय और उनकी जगह पर मस्जिदें बना दी जायं। इसके सबूत में उन्होंने यह हदीस दर्ज की है कि रसूल स0 ने यहूद व नसारा पर लानत की इस बात पर कि उन्होंने पैगम्बरों की कबरों को मस्जिद बनाया, साहब कतहुलबारी ने इसकी शरह में लिखा है कि :-

"इस हदीस से कुफ्फार के कुबूर को मस्जिद बनाने पर इस्तदलाल इस बिना पर है कि रसूल स0 ने उन पर लानत फरमायी जिन्होंने अंबिया के कुबूर को मस्जिद बनाया और अंबिया के साथ इस हुक्म में उनके ताबईन शरीक हैं जो मोमिनिन सालिहीन है लेकिन दूसरे लोग यानी मुशरिकीन, उनके कब्रस्तानों को खोद कर मस्जिद बनाया जा सकता है।"

हदीस का मफहूम यह हो तो वह वहाबी नुक्तये नज़र के बिल्कुल खिलाफ़ है इसलिए अंबिया के कब्रस्तानों को खोदकर मस्जिद बनाने पर लानत जब अंबिया की तौहीन की बिना पर हुई है तो बगैर मस्जिद बनाए हुए बिला वजह बतौर जुल्म व फसाद उन के मकबरों का खोदना जो यकीनन उनकी तौहीन है, क्यों कर मूरिदे लानत न होगा। मकबरों में नमाज, इसके हराम होने पर कोई दलील नहीं है। जम्हूर उल्मा कराहत के कायल हैं। वहाबियों का जो नुक्तये नज़र हैं। उसके खिलाफ़ अहले बैत कराम और सहाबा का अमल मौजूद है चुनान्चे गज़ाली ने अहया उलउलूम में इमाम जाफर सादिक अलैहहिस्सलाम की रवायत लिखी है कि हज़रत फातिमा ज़हरा अलै0 जनाब हमजा रजी0 की कब्र की ज़्यारत को जाती थी और वहाँ नमाज पढ़ती थी और रोती थीं। इसके अलावा हुजरे इस्माईल में जनाब इस्माईल और हाजरा की कब्रों के होते हुए, वहाँ नमाज़ की फज़ीलत वारिद हुई और इब्न असीर ने निहाया में लिखा है कि :-

"मकबरों में नमाज़ की मुमानियत इसलिए हुई है कि वहाँ की ख़ाक में अक्सर मुर्दों के जिल्द से निकली हुई रतूबते मिली हुई होती हैं, वरना अगर किसी पाक साफ जगह नमाज़ पढ़ें तो कोई हर्ज नहीं।"

ऐसा ही मुहदिदस फित्नी ने "मजमअलबहार" में लिखा है और इतना इज़ाफा किया है किः

"यह मुमानियत मख़सूस है उन कब्रों से जो खुदी हुई हों।"

इसके अलावा कब्रों के पास नमाज़ की मुमानियत में अगर इस हदीस से इस्तदलाल किया जाय कि कब्रों को मस्जिद नहीं बनाना चाहिए तो इसके मफहूम पर काफी बहस हो चुकी है और इसका सबूत इब्ने हबान की सहीह से भी होता है कि उसमें यह है कि रसूल स0 ने कब्रों की तरफ नमाज़ पढ़ने से मुमानियत फरमायी है और इमाम अहमद बिन हंबल ने पैगम्बरे खुदा स0 से रवायत की है कि आपने फरमाया कब्रों पर बैठो नहीं और कब्रों की तरफ नमाज़ न पढ़ो।

इसके बाद उन अहादीस के मफहूम में शक व शुबह बाकी नहीं रहता और नेक आमाल अफराद की कब्रों के पास नमाज़ हुसूल बर्कत के लिए बराबर सल्फ सालिहीन के जारी व सारी रही जिसकी तकवीयत इस हुक्म कुर्आनी से होती है कि :-

"इब्राहीम के खड़े होने की जगह को अपनी नमाज़ का महल बनाओ।" और अब्दुल्लाह बिन उमर हज़रत पैगम्बर खुदा स0 के आसार की जुस्तुजू करते थे और वहाँ नमाज़े पढ़ते थे और इब्न तैमिया हंबली ने 'सिराते मुस्तक़ीम' में लिखा है जैसा कि "अवराक़ि बगदादिया" में नकल हुआ है कि सनदी खवारजमी का ब्यान है कि :-

"हमने इमाम अहमद बिन हंबल से दरयाफ्त किया कि कोई शख़्स इन मुतबर्रिक मुकामात पर जो बने हुए हैं जाए, इस बाब में आप

क्या फरमाते है? उन्होंने कहा इब्न उम्मे मकतूम की हदीस है उन्होंने पैगम्बर खुदा स0 से दरयाफ्त किया कि वह अपने घर में नमाज़ पढ़ा करें कि वह एक मरकज नमाज़ का हो जाए और इब्न उमर का अमल कि वह पैगम्बर खुदा स0 के ठहरने के मकामात पर जाकर नमाज़ें पढ़ते थे, इन दोनों रवायतों की बिना पर इन मुतबर्रिक मकामात पर भी जाकर नमाज पढ़ने में कोई मुजायक़ा नहीं है मगर लोगों ने इसमें इफरात से बहुत काम लिया है और इसमें बहुत ज़्यादती कर दी है।"

इसी तरह अहमद बिन कासिम ने उनसे नकल किया है कि उनसे पूछा गया इन मकामात मुतबर्रिका पर जाने के मुतअल्लिक जो मदीना तैय्यबा में है तो उन्होंने कहा कि "इब्न मकतून की हदीस और अब्दुल्ला बिन उमर के अमल की बिना पर जो वह रसूल अल्लाह स0 के तशरीफ ले जाने के मकामात पर नमाज़ें पढ़ते थे। इसमे कोई हर्ज नहीं है और उसकी इजाजत है।"

किताब "अलआलाम ला अलाम बैतुललाहिल हराम" में जनाब खदीजा रजी0 के मकान का ज़िक्र करने के बाद लिखा है कि उसे अक़ील बिन अबी तालिब ने ले लिया, फिर उनसे मावीया बिन अबी सुफ्यान ने खरीदा और उसे मस्जिद बना दिया कि इसमें नमाज़ पढ़ी जाए।

मालूम हुआ कि अंबिया और सालिहीन के रौजों पर नमाज़ पढ़ना शर्अन जायज़ हैं और इसकी हुरमत पर कोई दलील नहीं है बल्कि सीरत इस्लाफे सालिहीन उसके इस्तेहसान का पता देती है।

यह कहना कि चराग जलाना कब्रों पर ममनू है इब्न अब्बास की रवायत की बिना पर कि रसूल खुदा स0 ने लानत की कब्रों की ज़्यारत करने वालियों और उन्हें मस्जिद बनाने वालों और चराग जलाने वालों

पर, इसके मुतअल्लिक अर्ज़ है कि चराग जलाना अगर बगैर किसी सही मक़्सद के हो तो इसकी मुमानियत हो सकती है। लेकिन अगर वह ज़ायरीन की सहूलियत और तिलावते कुर्आन करने वालों, अदिया व ज़्यारात पढ़ने वालों के लिए है तो वह अआनत अलल ख़ैर है। इन पर हरगिज़ रसूल खुदा स0 की लानत मुतवज्जा नहीं हो सकती, और ज़्यारत कुबूर वाली मुमानियत के मुत्अल्लिक तोहफतुल बारी और इरशादीएसारी वगैराह में है कि वह बाद में मंसूख हो गयी और कुबूर के मस्जिद बनाने के मफहूम पर बहस पहले हो चुकी है। तमस्सुह और दुआ के बारे में शवाहिद भी पहले आ चुके है, मजीद बराँ यह है कि इब्न तैमिया ने "सिराते मुस्तकीम" में लिखा है कि अबुबक्र असरम ने रवायत की है कि :-

मैंने अहद बिन हंबल की कब्रे रसूल स0 के साथ तमस्सुह के बारे में पूछा उन्होंने कहा मुझे इसके मुतअल्लिक कोई इल्म नहीं फिर मिम्बर के लिए दरयाफ्त किया, उन्होंने कहा इसके लिए रवायत आयी है कि अब्दुल्लाह बिन उमर मिम्बर से तमसह करते थे और सईद बिन मुसय्यब का अमल भी बयान हुआ है।

इससे ज़ाहिर है कि इमाम अहमद बिन हंबल ने भी कब्रे रसूल के लिए यह जुर्रात नहीं की कि उससे तमस्सुह को हराम करार दें। बस अपनी लाइल्मी का इजहार किया हालांकि हर शख्स समझ सकता है कि जब मिम्बर से तमस्सुह का शाहिद मिल गया तो कब्रे रसूल स0 तो मिम्बर से ज्यादा काबिले एहतिराम है और कब्र के बारे में जो इनका कौल बयान किया गया है कि मुझे उसके मुतअल्लिक इल्म नहीं है। यह बज़ाहिर इस रावी का सहू है या यह कि यह शख़्स कबिले ऐतमाद न था, इसलिए इमाम अहमद ने उससे खुलकर गुफ्तगू नहीं की इसलिए कि

जैसा अल्लामा सैय्यद हसन सदर ताब सराह ने अपने रिसाले में नकल किया है इमाम अहमद बिन हंबल के बेटे अब्दुल्लाह बिन अहमद ने जिनका कौल ज़ाहिर है कि अपने वालिद के बारे में ज्यादा मोतबर है "किताबुल अलल वस्सुआलात" में लिखा है कि :-

"मैंने अपने वालिद से इस शख़्स के मुतअल्लिक पूछा जो मिम्बरे रसूल को तबर्रुकन छुए और उसका बोसा ले और ऐसा ही कब्र मुबारक के साथ करे इस उम्मीद मे कि उसे सवाब मिलेगा, उन्होंने फरमाया कोई हर्ज नहीं है।"

नेज इब्न तैमिया ने यहया बिन सईद की रिवायत दर्ज की है कि जब वह इराक की तरफ जाने लगे तो मिम्बर रसूल की तरफ आए और उसे हाथ से छुआ और दुआ मांगी, और इमाम मालिक से नकल हुआ है कि वह मिम्बर रसूल0 स0 से बरकत हासिल करते थे और सबकी ने कहा है कि कबरे रसूल स0 से तमस्सुह से मुमानियत पर कोई इजमा नहीं है और इस रवायत से इस्तदलाल किया है कि मरवान बिन हकम ने देखा कि एक शख्स कब्रे रसूल से लिपटा हुआ है तो मरवान ने उसकी गर्दन पकड़ी और कहा कि यह तुम क्या कर रहे थे? उसने कहा कि मैं पत्थरों और इंटों की तरफ नहीं आया हूँ, मैं रसूल स0 की खिदमत में आया हूँ और यह शख्स जनाब अबु अय्युब अंसारी थे और ऐसा ही बिलाल मुअज्जिने रसूल स0 के मुत्अल्कि आया है कि उन्होंने अपना मुँह कबर रसूल स0 की मिट्टी से मला और यह अमल सदरे इस्लाम से बराबर मुसलमानों में रायेज रहा। ज़िबह और नज़र बेशक अगर खुदा का नाम लेकर न हो और कसद कुर्बत इलाही से न हो तो हम भी उस ज़िबह को हलाल नहीं समझेंगे। और न नज़र को दुरुस्त समझेंगे लेकिन अगर अल्लाह का नाम लेकर किसी रौज़े के ज़ायरो पर तक़्सीम करें तो

इसमें कोई खराबी मालूम नहीं होती और इसी तरह अगर अल्लाह से नजर करे उसे रौज़े के जायरीन की कुछ खिदमत के मुतअल्लिक तो इसके भी हराम होने की वजह कोई नहीं है।

यह कहना कि दुआ के वक़्त रौज़े रसूल स0 की तरफ रुख़ करने को रोकना बेहतर है और तमाम सिम्तों में सबसे अफज़ल सिम्त किबला है। यह पैगम्बर खुदा स0 के मरतबे से नावाक़फ़ियत या चश्मपोशी का नतीजा है।

रसूले खुदा स0 के बारे में जो सहीहुल अकीदा उल्मा है जैसे अली बिन बुरहानुद्दीन शाफ़ई "इन्सानुल उयून" और हाफिज जलालुददीन सुयूती "खसायेसे कुबरा" में सराहतन लिखते है कि:

"कबरे रसूल स0 की सरजमीन इजमाअन तमाम कतआत अर्ज यहां तक कि काबे की जमीन से भी अफज़ल है और बाज़ ने कहा है कि आसमान के भी हर मकाम यहाँ तक अर्श से भी अफज़ल है।"

और तवस्सुल की बहस में काज़ी अयाज़ की रवायत आ चुकी है कि मंसूर दवानिक़ी ने इमाम मालिक से पूछा कि मैं किबला रुख़ दुआ मांगो कि कब्रे रसूल स0 की तरफ रुख़ करके? तो उन्होंने कहा कि :-

अपना चहरा आप रसूल खुदा स0 की तरफ से क्यों मोड़िये हालाकि वह आपका भी वसीला है और आपके बाप हज़रत आदम का भी वसीला है।

और अल्लामा इब्न हजर मक़्क़ी ने "जौहरे मुनज्जम" में इस पर यह दलील कायम की है हम सब मुत्तफिक है। इस अमर पर कि :-

हज़रत स0 अपनी कब्र में ज़िन्दा हैं, और हज़रत स0 अगर हमारी आँखों के सामने ज़िन्दा बैठे होते तो आपके पास मुलाकात के लिए आने वाला लाज़मन आपकी तरफ रुख़ और किब्ले की तरफ पुश्त

करता तो ऐसा ही हज़रत स0 की कब्र की ज़्यारत के वक्त होना चाहिए।

तवाफ और तमस्सुह और बोसा लेने के लिए जो कुछ कहा गया है। उस पर बहस पहले आ चुकी है और अब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल की ज़बानी खुद इमाम अहमद बिन हंबल जिनकी तरफ इब्न अब्दुल वहाब और तमाम नजदी हजरात और उनके मुकतदायान इब्न तौमिया और इब्न कैय्यिम सबका इंतिसाब है उनका इरशाद आ चुका है कि कबरे रसूलका बोसा लेने में हरज नहीं है और जाहिर है कि मौत के बाद कबर का बोसा लेना वैसा है जैसे जिन्दगी में हाथों या पैरों का बोसा लेना क्योंकि मेयार दोनों का एक ही है और वह इज़्ज़त व एहतिराम है। और सुनन अबुदाऊद में अब्दुल्लाह बिन उमर की जुबानी है कि हम लोग रसूल स0 के पास गये और आपके हाथों का बोसा लिया और उम्मे अबान बिना वाजय बिन ज़राए की रवायत है अपने दादा ज़ारए से जो कबीला अब्दुल कैस के वफद में आए थे जब हम पहुँचे तो अपने मरकबो से जल्दी-जल्दी उतर के रसूल स0 के हाथों और पैरों के बोसे ले रहे थे। इसके अलावा ताज़ीम रसूल स0 के सिलसिले में बोसा लेने के दूसरे शवाहिद पहले आ चुके हैं।

अब बहम्दुलिल्लाह

उल्माये मदीना की तरफ मंसूब शुदा फतवे के तमाम अजजा के पड़ाखचे उड़ चुके है और साबित हो गया है कि कुबूर पर कुब्बों की तामीर और उनकी ताज़ीम व तौकीर के हराम या शिर्क होने की कोई वजह नहीं है बल्कि सीरत रसूल, सीरत सहाबा व ताबईन और तमाम मुसलमानों के अमल दरआमद से जो शुरू से अब तक रहा, जो इन इमारतों को मुंहदिम करे या इस इनहिदाम का हामी हो, वह बइस्तिलाह अहले सुन्नत ख़ारिज अज जमाअत होने से ख़ारिज अज दीन है।

छठा बाब

कुछ अहादीस और अख़बार जो अहले नजद के बारे में है

मिंजुमला उनके सहीह बुखारी ने हजरत पैगम्बरे खुदा स0 के लिए वारिद है कि "हज़रत स0 मिम्बर के पहलू में खड़े हुए और फरमाया उधर से फितना होगा जहाँ से शैतान का सींघ बरामद होगा।"

या फरमाया कि "सूरज की शुआबरआमद होती है।"

दूसरे लफ्ज़ों में तो बिल्कुल साफ है कि हजरत स0 का इरशाद मिम्बर ही की तरफ था, हाँ पहली सूरत में अल्फाज हदीस के मुबहम है। पता नहीं चलता कि हज़रत स0 का इशारा किस तरफ था? मगर इसकी तशरीह दूसरी हदीस से हो जाती है जो अब्दुल्लाह बिन उमर से है कि उन्होंने रसूल खुदा स0 को सुना जबकि आप मशरिक़ की तरफ रुख़ किए हुए थे कि आप फरमा रहे थे मालूम होना चाहिए कि फितना उधर से उठेगा जिधर शैतान का सींघ है। इससे पता चल गया कि हज़रत स0 का इरशाद मशरिक़ की तरफ था और यह सबको मालूम है कि मदीने से मशरिक़ की तरफ सरज़मीन नजद है।

दूसरी हदीस सहीह मुस्लिम में है कि :

"दिलों की सख़्ती और बेवफाई मशरिक़ में है और ईमान अहले हिजाज में है।" हजरत स0 ने इन हदीसों में साफ बता दिया कि अहले हिजाज निसबतन साहिबे इमान होते हैं और नजद के लोग सख़्त दिल और बेरहम होते हैं मगर इन वहाबियों ने उल्टा हुक्म लगा दिया है कि नजदी ही सिर्फ साहिबे ईमान है और तमाम दुनिया के मुसलमान काफ़िर व मुशरिक़ हैं। फिर अगर किसी को शक रहे इस में कि मशरिक़ से मुराद नजद है बल्कि ख्याल करता हो कि कोई और मुल्क मुराद है। हाँ

एक और हदीस में जो सहीह बुखारी में है इस इजमाल को बिल्कुल दूर कर दिया गया है। यह इब्न उमर की रिवायत है कि:

"हजरत पैगम्बर खुदा स0 ने कहा परवरदिगार हमारे शाम में बरकत अता फरमा और हमारे यमन में बरकत अता फरमा। लोगों ने कहा यह भी फरमा दीजिए कि हमारे नजद में बरकत अता फरमा। हज़रत स0 ने फिर वही दोनों जुमले कहे कि हमारे शाम में बरकत अता फरमा और हमारे यमन में बरकत अता फरमा लोगों ने कहा या रसूल अल्लाह स0 और हमारे नजद में भी। रावी का बयान है कि मुझे ख्याल हे कि तीसरी मरतबा हजरत स0 ने जवाब दिया कि वहां तो जलजले हैं और फितने और वहां से शैतान का सींघ बरआमद होगा।"

इस हदीस से जहां यह साबित होता है कि सरजमीन नजद शैतान के गलबे का मरकज है। वहां यह साफ जाहिर है कि वह खुदा और रसूल को नापसंद है। इसलिए कि रसूल खुदा स0 ने बावजूद इसरार के उसे अपनी दुआए ख़ैर में शरीक नही किया और इससे मालूम होता है कि रहमते खुदा इस सरज़मीन से हमेशा के लिए दूर है। यह हदीस कुतुबे अहले सुन्नत में भी है जैसा कि हवाला आपके सामने आया और हमारे उल्मा में से अल्लामा नूरी ने भी मुसतदरिकुल वसायेल में उसे दर्ज किया है।

इन अहादीस में कर्ननिशशैतान की लफ्ज़ है जिसके लफ्ज़ी मायने तो वही हुए जो हमने तरजुमे में लिखे हैं, यानी ''शैतान का सींघ'' इसके लिए ''कामूस'' में है कि कर्निशशैतान और कर्निशशैतान यानी "शैतान का सींघ" और शैतान के दोनों सींघ इसके माने है उसका गिरोह और इसकी राय के पैरू या इस की ताकत और उसका गलबा व तसल्लुत, गोया अहले नजद शैतान के हत्यारों की हैसियत रखते है कि

उन्हीं के ज़रिए से वह हमलावर होता है और अपने मक़ासिद हासिल करता है।

फिर एक हदीस पैगम्बरे खुदा स0 की है कि :-

"इमान मदीने की तरफ पनाह लेता है।"

इसे इब्न असीर जर्ज़री ने नहाया में दर्ज किया है और हज़रत स0 का यह भी इरशाद है किः

"शैतान ना उम्मीद हो चुका है कि अब जज़ीरतुल अरब में उसकी इबादत नहीं होगी।"

जिससे मक्के और मदीने का मुराद होना कदरे मुत्तकीन की हैसियत रखता है बल्कि इब्न असीर ने नहाया में इमाम मालिक का कौल दर्ज है कि यहां "जाज़िरतुल अरब" से खुद मदीना मुनव्वरा मुराद है। तो इसके बाद कितना तअजजुबखेज़ यह तसव्वुर है कि जिस सर ज़मीन को रसूले खुदा स0 ने शैतान का मरकज़ कहा हो, वहाँ के लोग दावेदार हो कि हम मोमिनीन है और सच्चे मुसलमान और जिन शहरों के लिए फरमाया हो कि वह इमान का मरकज है और वहां शैतानी पैरवी अब नहीं हो सकती, उन्हें समझा जाय कि वह सब काफिर व मुशरिक है।

हैरत अंगेज सुखन परवरी का करिश्मा यह है कि नजदी हज़रात आयाते कुर्आन और बाज़ अहादीस की तावील से जो माकूल वजूह पर भी मंबनी हो, शिददत के साथ इन्कार रखते हैं और उन्हें इस पर इसरार है कि अल्फाज को उनके जाहिरी मफहूम पर महमूल करना चाहिए लेकिन जब यह हदीसे पेश की जाती है तो वह इन्तिहाई दूर दराज तावीलो से काम लेकर धान्धली करके बताते हैं कि इससे सर जमीन नजद मुराद नहीं बल्कि सर जमीन इराक़ मुराद है इसलिए कि वह हिजाज से ऊँची सतह पर वाकय है। लेकिन लुग़त और जुगराफिया

और अशआरे अरब सब पर नजर करने से यह बात बईद अज हकीकत मालूम होती है और पता चलता है कि नजद की लफज जब बिला किसी कैद के बोली जाये तो उसके यही सरज़मीन मुराद होती है जो हिजाज के पास उससे ऊँची है। इसलिए नजद कहलाती है और इसके मुकाबिल में तिहामा है इसलिए कि वह उससे नीचे है और उसे गौर भी कहते हैं। जो मुकाबिल नजद होता है।

फ़ीरोज़ आबादी कामूस में नजद के मायने और उसके हुदूद में लिखते हैं कि उसके आगे तिहामा और यमन है और उसके इधर उधर इराक और शाम है और हिजाज की तरफ से वह जात अर्क से शुरू हो जाता है और जौहरी ने सिहाह में लिखा है कि नजद अरब के शहरों में से है और वह गौर के मुकाबिल है और गौर से मुराद तिहामा होता है और तिहामा से इराक तक बीच में जितना ऊँचा हिस्सा है वह नजद है और फयूमी ने 'मिसबाहुल मुनीर' में लफज नजद की तशरीह में लिखा है कि नजद मशहूर मुल्क है सर जमीन अरब में से इराक से मिला हुआ और वह हिजाज का जुज नहीं है। अगरचा जजीरतुलअरब में दाखिल है। तहजीब में है कि जो खन्दक कसरा ने इराक की सरहद पर खुदवायी थी, उस खन्दक के आगे जितना हिस्सा है वह नजद है। जहाँ तक कि हर्रह की तरफ मुड़ो, जब उस तरफ मुड़ जाओ तो हिजाज में दाखिल हो गए।

और महमूद शकुरी आलूसी ने तारीख़ नजद में तकरीबन दस कौल नजद की हद बन्दी में दर्ज किए है जो सबके सब इस बात के शाहिद है कि सरजमीन इराक नजद से खारिज है।

शोअराये अरब ने भी नजद की लफ्ज़ से इसी सरज़मीन को मुराद लिया है ना के सरज़मीन इराक को, बल्कि इराक का नाम नजद

के मुकाबले में लिया है वह अशआर हमने अपनी अरबी किताब में दर्ज किए हैं। इस उर्दु किताब में उनके नकल करने से कोई फायदा नहीं है।

"कामूसुल अलमुकन्नता वल बका" में है कि नजद के शहर, हिजाज़ के मशारिक में वाकय है और उनके दो हिस्से है। नजद हिजाज और नजद आरिज और इस सरजमीन से करामता ने खरूज किया और मुसलिमा कज्जाब वहीं से उठा और वहाबी लोग वहीं से बरामद हुए और उनका पायेतख्त शहर "रियाज" है जिसकी मरदुम शुमारी तीस हज़ार की है। इससे साफ ज़ाहिर है कि नजद की सरज़मीन वही है जो वहाबियों का मरकज़ है और यह हिजाज़ के मशरिक में है जिसके बाद उन अहादीस के मतलब पर कोई परदा नहीं रहता।

मिन जुमला उन अहादीस के एक वह है जिसे अहमद बिन जैन दालान ने "खुलासातुल कलाम" में दर्ज किया है कि:

हजरत पैगम्बर खुदा स0 ने फरमाया नजद से एक शैतान जाहिर होगा जिसके फितने से जजीरतुल अरब में तहलका पड़ जाएगा।

एक और हदीस उन्होंने यह दर्ज की है कि:

"मशरिक की तरफ से निकलेंगे ऐसे जो कुर्आन इस सूरत से पढ़ेंगे कि वह उनके गले से आगे नहीं बढ़ेगा, वह दीन से इस तरह निकल जायंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। वह दीन में फिर वापस नहीं आएंगे जब तक कि तीर कमान में वापस नहीं आता, उनकी खास अलामत सर का मुड़ाए हुए होना है। और ऐसे ही मजमून की दूसरी रवायते भी हैं।

खुलासातुल कलाम मं इन तमाम रवायतों के नकल करने के बाद लिखा है कि यह जो हज़रत स0 ने इरशाद फरमाया कि इनकी ख़ास अलामत सर का घुटवाना है। यह सराहतन उस जमाअत को

ज़ाहिर कर रहा है जो मशरिक़ से निकली और वह मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब की पैरू है। और इब्न अब्दुल वहाब की ताकीद थी कि वह सर को इस तरह घुटवाये कि ज़रा सा निशान भी बाल का न रह जाये और कोई आ जाता तो उसे उठकर जाने नहीं दिया जाता था जब तक कि उसका सर मुन्ड न जाये और इतनी पाबन्दी इस की इस जमाअत से पहले किसी भी गिरोह में देखी नहीं गयी और अब्दुररहमान मुफ्ती जुबैद का कौल था कि इब्न अब्दुल वहाब की रद में किसी किताब के लिखने की जरूरत नहीं, बस हज़रत स0 का यह इरशाद काफी है कि इस जमाअत की अलामत सर का मुड़वाना है। इसलिए कि किसी बिदअती गिरोह ने भी कभी इस पर इतना ज़ोर नहीं दिया और मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब की तरफ से इसकी ऐसी पाबन्दी थी कि वह औरतें भी जो इस मसलक की पैरू हो, उन्हें भी सर मुंडवाने की हिदायत होती थी।

मिन्जुम्ला उनकी एक हदीस हमारे बुलन्द पाया मुहद्दिस अल्लामा मजालिसी ने बहारुल अनवार की जिल्द फतन में अबु सईद खुदरी रज़ी की रिवायत से दर्ज है।

"हजरत अली अलै0 ने जबकि वह यमन में थे तो हजरत पैगम्बरे खुदा स0 के पास काफी मिकदार में कीमती सामान भेजा तो हजरत स0 ने उसे चार आदमीयों पर तकसीम कर दिया इकरा बिन हानिस और ऐनिया बिन बदर फजारी और अलकमा बिन अलका आमरी और जैदबिन खैल ताई तो कुरैश और अन्सार को इस पर गुस्सा आया और कहने लगे कि यह नजद के बड़े-बड़े आदमियों को देते हैं और हमें छोड़ देते हैं। आप स0 ने फरमाया कि उन्हें मैं तो तालीफ कल्ब के लिए देता हूँ। इसके बाद एक शख्स आया जिसकी आखें धंसी हुई थी और पेशानी की दोनों तरफ की हड्डियाँ ऊँची थी। दाढ़ी घनी थी और रुख़सार फूले

हुए थे और सर मुंडा हुआ था। इसने हजरत स0 का नाम लेकर पुकारा और कहा अल्लाह से डरिये। आप स0 ने फरमाया मैं अल्लाह की ना फरमानी करूँगा तो उसकी इताअत करने वाला कौन होगा? वह मुझ पर तमाम दुनिया जहाँ के लोगों के बारे में भरोसा किए हुए है और तुम लोग मुझ पर भरोसा नहीं करते हो, मुसलमानों में से एक शख़्स ने जो मेरा ख़्याल है ख़ालिद बिन वलीद थे, हज़रत स0 से उसे कत्ल करने की इजाज़त माँगी तो आप स0 ने इजाज़त नहीं दी और जब वह चला गया तो आपने फरमाया कि उसकी अस्ल नस्ल से एक गिरोह वह होगा कि कुर्आन पढ़ेगे इस तरह कि उनके गलों से नीचे नहीं उतरेगा, वह इस्लाम से यू निकल जायेंगे जैसे तीर कमान से निकलता है। वह मुसलमानों को कत्ल करेंगे और बुत परस्तों को छोड़े रहेगे। मैं अगर उनको पाऊ तो कत्ल करू इस तरह जैसे कबीला आद के किसी आदमी को कत्ल होना चाहिए।

दूसरी रवायत में है कि किसी ने पूछा कि उनकी अलामत क्या है? फरमाया

"उनकी अलामत सर का मुंडवाना है। इसके लिए 'तहलीक' की लफ्ज़ फरमायी या 'तसमीद' की तो जब उन्हें देखना तो उन्हें ख़्वाबे मर्ग का मज़ा चखाना।"

'नहाया' में इस हदीस के बाज अजज़ा के हललुतलुगात में लिखा है कि 'जुजियू' के माने 'अस्ल नस्ल' के है। और 'तसमीद' उनमें आम होगी। 'तसमीद' के माने सर मुंडवाने के है। इस तरह कि बाल बिल्कुल नेस्तनाबूद हो जाय एक रवायत में है कि यह शख्स जविलखो ससीरा तैमी था। इस हदीस से दो बातें साबित हैं एक यह कि नजद वाले ऐसे मुख़ालिफीन इस्लाम में थे कि उनमें से जो दायरा इस्लाम में

दाखिल हो, उनके लिए उस तरह तालीफ कल्ब की जरूरत होती थी जैसे अबु सुफयान वगैरह की जो "मुअल्लाफतिल कुलूब" कहलाते थे।

दूसरे अबुल खब येसीरा तैमी के लिए यह फरमाया कि इसकी अस्ल नस्ल से ऐसे लोग होंगे और इब्न अब्दुल वहाब का तैमी होना पहले मालूम हो चुका है। इसलिए यह साबित हुआ कि सब अलामात इस जमाअत में वही है जिनका रसूल खुदा स0 ने पता दिया था। मुसलमानों का ख़ून बहाना, गैर मुस्लिम बुत परस्तों के खिलाफ कभी तलवार न उठाना, सरों का घुटा रखना, यह सब उमूर मुशाहिदे से तअल्लुक रखते हैं। इन्हीं से आदमी उन औसाफ को समझ सकता है जो आँख से देखने के नहीं है। जैसे कुर्आन का गले के नीचे न उतरना और इस्लाम से इस तरह ख़ारिज होना जैसे तीर कमान से निकलता है। ऐसी ही और हदीस तलाश से मिल सकती है जो बिल्कुल नजदी हज़रात पर मुंतबिक है और जिन्हें हज़रत पैगम्बर स0 का एक मोजिज़ा भी समझना चाहिए।

सातवाँ बाब

वहाबियों का करतूत इब्तिदा से दौरे हाज़िर तक

मालूम होना चाहिए कि यह लोग 1160 हि0 में जाहिर हुए और जब से सामने आये मुसलमानों की खूँ रेज़ी इनका शिआर रही और उनके उस वक़्त के हाकिम मुहम्मद बिन मसऊद ने मोहम्मद बिन अब्दुल वहाब से बैअत इसी पर की थी कि वह इस मस्लक के मुख़ालिफीन से जंग करेगें। और "राहे खुदा में जिहाद" के नाम से उनका खून बहायेगा। तो अब ऐसी जमाअत का पूछना क्या जिसके मज़हब की बुनियाद ही मुसलमानों के खून बहाने पर हो तो जितना इनका इक्तिदार मज़बूत होता जाय, उन्हें इस अमर से कोई चीज मानेय नहीं हो सकती थी। इसलिए जितनी-जितनी उनके इक्तिदार में मज़बूती पैदा हुई। इनकी खूनरेज़ी में इज़ाफा होता गया अलावा ख़ून बहाने के कितने ही नामूसों की बेहुरमती हुई, कितनी औरतों को कैद किया और उन्हें कनीज बनाया कितने ही बच्चों को कत्ल किया और यह तमाम मज़ालिम मुसलमानों पर हुए और अपने इख़्तिदार की पूरी उम्र में उन्होने गैर मुस्लिम आदमियों में से किसी का खून नहीं बहाया।

जब नजद के जाहिलों में उनका सिक्का बैठ गया तो उनके जुल्म व तआदी का कदम आगे बढ़ा और सऊद बिन अब्दुल अजीज बिन मोहम्मद बिन मसूद के दौर में कई मरतबा इराक पर हमला किया। चुनान्चे बुजुर्ग मरतबा शिया आलिम सैय्यद मोहम्मद जव्वाद आमली ने अपनी किताब "मिफताहुल कराम" में जिमान और शिफाआ और वकालता कई जिल्दों के आखिर में इन मजालिम का चश्मदीद तज़किरह किया है।

और इसी ज़माने में यह हरमैन शरीफैन में दाख़िल हुए और शरीफे मक़्का और उन में 1205 हि0 से 1220 हि0 तक मुसलसल जंग हुई जिसमें शरीफे मक़्का को शिकस्त हुई और उन्होंने हरमैन शरीफैन को "दारुल हर्ब" करार देकर वहाँ कत्ल व गारत का बाज़ार गरम किया और हुजरये नबवी में जितने अम्वाल और जवाहिरात को उन्हें लूटकर अपनी मर्जी से सर्फ कर डाला। इसका तफसीली ज़िक्र तारीख़ "अजायबुल असर" जबरती में है। हालांकि, मुख़्तलिफ मकामात से ज़ाहिर होता है कि यह मुसन्निफ खुद वहाबियत की तरफ मैलान रखता था और मुसलमानों को हज से रोक दिया और मौसम हज में ऐलान किया गया कि ऐ साहिबान इमान मुश्रिकीन नजिस है। तो वह इस साल के बाद मस्जिद हराम के करीब न आए, यह नतीजा हुआ कि 1221 हि0 से शाम व मिस्र के हाजियों का आना बन्द हो गया जिसका ज़िक्र खुलासतुल कलाम अहमद बिन जैनी दहलान में मौजूद है।

और 1223 हि0 में उस वक्त के इब्ने सऊद ने मक्के वालों से कहा कि कुब्बे जितने हैं वह गिरा दिए जायेगें और इन बुतों को ख़त्म किया जाये ताकि सिवा अल्लाह के कोई माबूद न रहे चुनान्चे दूसरे दिन लोग फावड़े लिए हुए इधर उधर मुतबर्रिक आसार और कुबों को गिराने के लिए रवाना हो गये। चुनान्चे सबसे पहले जन्नतुलमुअल्ला के कुब्बे गिराये जो बड़ी तादाद में थे। फिर मोलिदे पैगम्बर खुदा स0 और मकाम विलादत अबु-बक्र और मज़ार जनाब खदीजा रजी0 के कुब्बे गिराये और तमाम उन मकामात को मिस्मार किया जो आसार मुकद्दिसा की हैसियत रखते थे। और वह गिराते वक़्त रजज़ पढ़ रहे थे। और ढोल बजा रहे थे और गा रहे थे और अहले कुबूर को गालिया दे रहे थे और कह रहे थे कि यह सब वह माबूद है जो लोगों ने तराशे है। इस सब का

ज़िक्र अल्लामा इब्न दहलान ने अपनी तारीख़ "खुलासतुलकलाम" में किया है।

इसी तरह मदीने की कब्रों को मुन्हदिम किया गया सिवा कुब्बा नबवी के इसके अलावा तमाम कुबूर मुकदिदसा और आसार मुतबर्रिका को खुसूसियत के साथ जन्नतुल बकी के मजारात को मुन्हदिम किया यह उनके हरकात बराबर जारी रहे। यहा तक कि मिस्र की फौजें आयी और उन्होंने उनको यहाँ से निकलने पर मजबूर किया और इस सिलसिले में जंग बड़ी शिद्दत से जारी रही यहाँ तक कि बिला आख़िर नजदी फौज को शिकस्त हुई और मुसलमानों का लश्कर फतहयाब हुआ और शाबान 1234 हि0 में मुहम्मद अली पाशा हाकिम मिस्र का हुक्म नजद में मिस्र फौज के सालार इब्राहीम पाशा के पास पहुँचा, जो दरइया तक पहुँच चुके थे। कि शहर दरइय्या को मिसमार कर दो चुनान्चे मिस्री फौज ने तेज़ी के साथ इस शहर को मिसमार कर दिया और आग लगा दी और वहाँ के बाशिन्दे सब इधर उधर मुँताशिर हो गये लेकिन हज़रत अमीरुल मोमिनिन अली बिन अबी तालिब अलै0 ने खवारिज के लिए पहले खबर दी थी यह बिल्कुल ख़त्म कभी नहीं होगे। जब एक शाख़ इनकी क़ता होगी, दूसरी शाख़ बर आमद हो जाएगी, चुनान्चे कुछ मुद्दत गुज़रने के बाद फिर उन्होंने सर उठाया।

फिर इराक आए ओर करबलाये मुअल्ला में शहर के अन्दर दाख़िल हो कर हज़ारो मोमिनीन को तहेतेग किया और हरम अकदस की तौहीन की। बिल्कुल उसी तरह जेसे मुस्लिम बिन उकबा यजीदी फौज के अफसर ने मारकए हुर्रह के बाद हरम मदीने के अन्दर किया था कि वहा नजासतो का अंबार कर दिया गया इसके अलावा जरीह अकदस को उखाड़ डाला और जो कुछ हरम अक़दस का खज़ाना था

सब लूट लिया। बस नजफ अशरफ में दाखिल नहीं हो सके हालांकि कई दिन तक वहा मुहासिरह रखा मगर कुदरत की तरफ से उन्हे नकामी का सामना करना पड़ा और बहुत से आदमियों के इतलाफे जान के बाद वह नामुराद वापस हुए।

इसके बाद तकरीबन एक सदी तक वह ज्यादा सर नहीं उठा सके। बस अपने नजद के शहरों में महदूद रहे। यहाँ तक कि अब आखिर में अंग्रेजों की बदौलत उन्हें आगे बढ़ने का ऐसा मौका मिला कि नजद का हाकिम सुलतान नजद व हिजाज और वाली हरमैन हो गया। और अब उन्होंने वह जुल्म सितम किया और शआरेइलाही की बेहुरमती की जिससे इस्लाम और मुसलमानों के दिलों में घाव पड़ गए है। इस वकत के अब्दुल अजीज आल सऊद ने बरसर इकतिदार आकर पहले तो तायेफ में कत्ल आम किया और तर्जुमानु कुर्आन, इमामुलमुफससिरीन, खैरुल इमामा अब्दुल्लाह बिन अब्बास रजी0 के कुब्बे को मुन्हदिम किया फिर मक्का मुअज्जमा में जितने कुब्बे थे सबको गिरा दिया जिनमें पैगम्बर ख़ुदा के जददे अमजद जनाब अब्दुल मुत्तलिब का कुब्बा था और आप स0 के अम्म नामुराद जनाब अबुतालिब का कुब्बा और आपकी जौजा ताहिरा उम्मुल मोमिनीन जनाब खदीजा का कुब्बा और आपकी मादर गिरामी जनाब आमना बिन्त वहब का कुब्बा, इन सबको मिसमार कर दिया।

इन हज़रात के जाती फज़ायेल व मरातिब के अलावा इस हैसियत से देखा जाय कि उनमें अकसर सरबर आवरदह कबीला कुरैश के अफराद थे जिनके बारे में खुद इन नजदियों के पेशवा इमाम अहमद बिन हंबल ने मुस्तनद में हदीस है कि:

"हज़रत रसूल खुदा स0 ने फरमाया कि जिसने कुरैश की

तौहीन की, उसकी खुदा तौहीन करेगा।"

और इस में कुछ शक नहीं हो सकता कि कब्र का मिसमार करना साहिबे कब्र की तौहीन है, और हज़रत पैगम्बर ख़ुदा स0 ने एक शख़्स को देखा कि वह एक कब्र से तकिया लगाये बैठा है। हजरत स0 ने फरमाया साहब कब्र को अज़ीअत न पहुँचाओ और इब्न अबी शैबा ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद से नकल किया है कि उन्होंने कहा मोमिन को अज़ीयत देना उनकी मौत के बाद मिस्ल अज़ीअत देने के है। उसकी ज़िन्दगी में और हमें उन्होंने मोमिन को अज़ीअत पहुँचाने से मुमानियत की हैं अब हर शख़्स अन्दाज़ा कर सकता है कि किसी का घर गिरा दिया जाय तो ज़िन्दगी में उसे अज़ीअत होगी या नहीं? तो इसी सूरत से कब्र पर फावड़े चलाए जाय तो यकीनन उस मैय्यत को इजा होगी जिसकी वह कब्र है और जब यह आयत पढ़िए कि :-

''जो लोग मोमिनीन और मोमिनात को बिला जुर्म व ख़ता ईजा पहुँचाये उन्होंने बड़े गुनाह का बोझ उठाया।''

तायेफ और मक्का मुअज्जमा में उनके यह अफआल मुसलमानाने आलम में बेचैनी पैदा करने के लिए काफी ही थे कि फिर मदीना मुनव्वरा के तमाम माआसर व आसारे मुकददसा को मुन्हदिम किया और जन्नतुल बकीय के तमाम कुब्बो को मिसमार किया जिनमें अज़वाजे रसूल, अक़रबाये रसूल और असहाबे रसूल की कब्रे थी जैसे उसमान बिन मज़ऊन जिन्हें ख़ुद रसूल खुदा स0 ने दफन किया था और उनकी कबर के नुमाया करने में एहतिमाम फरमाया था जिसका ज़िक्र इस किताब में पहले हो चुका है और पैगम्बरे खुदा स0 के वालिद बुजुर्गवार जनाब अब्दुल्लाह और हजरत स0 के फरज़न्द जनाब इब्राहीम और आप स0 के चचा अब्बास बिन अब्दुलमुत्तलिब और चचाजादभाई

जनाब अक़ील और सहाबी अब्दुल्लाह बिन मसऊद और अब्दुर्रहमान बिन औफ वगैरा और सबसे बढ़कर हजरत खातून जन्नत जनाब फातिमा जहरा सलामुल्लाह अलैहा का मज़ार मुबारक जहाँ बहुत से उल्माए अहले सुन्नत जैसे मोमिन सुबलन्जी "नूरलअबसार" में और मुहम्मद बिन सबान "अस आफुरीगिबीन" में और अबुल अब्बास अहमद बिन यूसुफ दमिशकी "अखबारददौल" और "आसारुलेअव्वल" में और अली बिन बुर्हानुददीन शाफई "इन्सानुलउयून" में और इब्न अब्दुलबर "किताबुल इसते आब" में और दूसरे मुसन्निफीन हजरत सैय्यदा की कबर होने के कायेल है जिनके लिए पैगम्बरे खुदा स0 की साफ हदीस सहीह बुखारी में मौजूद है कि

"जिसने इनको अजीअत पहुँचाई उसने मुझे ईजा पहुँचाई"

और यह हदीस पहले आ चुकी है किः

जो बाद मौत ईज़ा पहुंचाए, वह ऐसा ही है जैसे जिन्दगी में ईज़ा पहुचाये। तो इसके बाद कुर्आन की यह आयत पढ़ना चाहिए जिसका मजमून यह है कि जो अल्लाहा और उसके रसूल स0 को ईज़ा पहुँचाये, उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया और आखिरत में और उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब है इस सबके अलावा उस कुब्बे को मुन्हदिम किया जिसमें अइम्मा अहले बैत अलै0 में से से चार हस्तियाँ

1. सिब्ते अकबर हजरत इमाम हसन अलै0
2. जैनुल आबदीन इमाम अली बिन अल हुसैन अलै0
3. बाकिरुल उलूम अव्वलीन वल आखिरीन इमाम मुहम्मदबिन अली अलै0।
4. सादिक़ आले मुहम्मद इमाम जाफर बिन मुहम्मद अलै0

यह सब हज़रात मदफून थे जिनके मनाक़िब व फज़ायेल मोतबर

कुतुब अहले सुन्नत में भी मौजूद है और यह कुबबा जिसमें यह हजरात दफन थे, तमाम मुसलमानो के नज़दीक ख़ास एहतिराम व तकद्दुस रखता था। चुनान्चे अल्लामा इब्न हजर मक़्की सवायेक मुहररिक़ा में लिखते हैं इमाम जाफर सादिक अलै0 के हाल में किः

"आप भी उस कुब्बे में दफन हुए तो क्या कहना उस कुब्बे का कितना बुजुर्ग मर्तबा और मुतबर्रिक और शरीफ है।"

और मोहद्दिस मुहम्मद पारसा बुखारी ने "फसलुलखिताब" में इमाम जैनुल आबदीन अलै0 के हाल में लिखा है किः

"आप उस कुब्बे में दफन हुए जिसमें इससे पहले रसूल के चचा अब्बास और खुद आपके चचा इमाम हसन दफन हो चुके थे। और आपके बाद इसमें आपके फरज़न्द मोहम्मद बाकिर और फिर उनके बेटे जाफर सादिक दफन हुए तो क्या कहना इस कुब्बे का कि कितना बुर्जुग और साहबे शराफत यह कुब्बा है।"

ऐसे ही और उल्मा के कल्मात भी है।

और इस कुब्बे के इन्हिदाम से बिला तफरीक शिया व सुन्नी मुसलमानों को कितना रंज पहुँचा, उसका अन्दाज़ा ख़्वाजा हसन सानी निजामी के हसब जेल तासुरात से हो सकता है। जो उन्होंने माहनामा "मनादी" नई देहली के दिसम्बर 1968 हि0 के शुमारे में "इरान व इराक के ज्यारात नामे" में रौजे इमाम रजा अलै0 के हालात दर्ज करने के बाद लिखे है।

"यहाँ के कैफियात के साथ मदीना मुनौववरा का तस्ववुर बंध जाता है। आँखों के सामने वकीय का कबरस्तान आ जाता है। सब शिकसता सब बे साया न गुंबद, न कबर पोश, न फूल, न किसी दरख़्त की छाँव, न घास की दो पत्तियाँ।"

मेरी अक़्ल हैरान है कि जब रसूल स0 हुजरे में आराम फरमा सकते है जब रसूल स0 की आरामगाह पर गुम्बद बन सकता है, जब हजरत अबु बकर और हजरत उमर हुजरे में मदफून हो सकते है और उनको वहा दफन करने वाले सहाबा, वह सहाबा जिन्होंने रसूल की आखें देखी, जिन्होंने इस्लाम को इस्लाम लाने वाले से बराहरास्त सीखा इनमें से कोई भी हुजरों के अन्दर, इमारतों के नीचे, दफन होने में कोई बुराई नहीं देखता तो फिर आज मकबरो को ढाने और मिस्मार करने का हक किसी को कैसे पहुँच जाता है? क्या यह कबर शिकन सहाबा से ज्यादा दीन को समझ सकते थे? खाकिम बदहन क्या सहाबा किराम इन लोगों के मुकाबले में कम दीनदार थे? नऊज बिल्लाह मिन ज़ालिक

बात असल में यह है कि खैर व शर और हक और न हक का मुकाबला कभी हल नहीं होता। मक्का और तायेफ़ की इज़ा रसानिया बदर उहद की चढ़ाईयाँ।

सिफ़्फीन व करबला के मआरके,

सिलसिला दर सिलसिला आज भी मौजूद है। मुहम्मद और मुहम्मद वालों को (अलै0) दुनिया की आजमाइश गाहों में हर तरह सब्र व सबात का नमूना दिखाना है। जब भी दिखाया, अब भी दिखा रहे हैं।

अल्लाह मदीने के सब्ज गुम्बद को सलामत रखे, अगर इस का बनना और सलामत रहना जाऐज है। तो क्या इस दुख का कोई अन्दाजा कर सकता है जो इस सब्ज गुंबद के मकीन को अपनी लाडली बेटी फातिमा और अपने चहीते नवासे हसन और दूसरे कितने ही प्यारो की शिकस्ता कबरो और बेसाया मजारो पर होता होगा।

अल्लाह ताला उस दिन की सुबह किसी मुसलमान को नसीब न करे जिस दिन उस के कौल व फेल से रसूल स0 को दुख पहुँचे।

तमामशुद

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

बिस्मिल्लाह-हिर-रहमानिर-रहीम

अर्ज़ेहाल

इदारा यादगार हुसैनी की यह दूसरी पेश कश है। इस दौर में जब मज़हबी इन्तिहापसन्दी के नतीजे में अज़ादारी के जुलूसो, उर्स के इज्जितमाआत, ज़ायरीन के काफलो पर हमले किए जा रहे हो यह जानना ज़रूरी है कि ऐसी हरकतों की फिकरी ख़बरें कहाँ फैली हुई है।

सरकार सैय्यदुल उल्मा की यह मारकुत आरा तसनीफ़ हक़ीकत की पर्दा कुशाई करती है।

इस किताब के अशाअत में हमारे बहुत से मोमिनीन ने तआउन दिया है मगर उन्होंने अपना नाम 'सीग़ए राज में रखने की ख्वाहिश की है कायरीन से गुजारिश है कि तमाम हक गो और हक नवाज मोमिनीन की अरवाह के लिए सूरये-फातिहा की तिलावत फरमाए, फक़त।

मुहम्मद अब्बास(सदर)
0522-2404714

हसन यूसुफ (नायेब सदर)
9956739935

अजीज हैदर(जनरल सेकरेट्री)
0091-9565772492

शादाब आब्दी (सेकरेट्री नशर व इशात)
9532432488

मीसम नक़वी (ख़ाज़िन)
9918577502

सय्यद हामिद हुसैन तवातवाई
0935353554

राब्ता कायम करें :-
सादिक अब्बास (मुम्बई)
91-7505438285

दफ्तरः- शरियत कदा मौलाना हसन नक़वी मरहूम
मस्जिद ममोला पुल फिरंगी महल, विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ।

नोटः इदारह का अकाउन्ट इलाहाबाद बैंक चौक लखनऊ में है। चेक यादगारे हुसैनी के नाम से दी जा सकती है।

इलतिमास सूरये-फातिहा

बराए इसाले सवाब

आप हज़रात से गुज़ारिश है कि हुसैनियत के मक़सद को फरोग़ देने की इस मुहिम में शिरकत के सबब एक मरतबा सूरये हम्द और तीन मरतबा सूरये तौहीद की तिलावत फ़रमायें।

1. सैय्यद हबीब असग़र नक़वी मरहूम
2. बेगम व हकीम सैय्यद मुहम्मद यूसुफ
   व सैय्यद मोहम्मद यामीन मरहूम
3. मिर्ज़ा हैदर हुसैन व मिर्ज़ा ग़ज़नफर हुसैन मरहूम
4. सैय्यद ज़व्वार हुसैन मरहूम
5. मिर्ज़ा इफ़तिख़ार हुसैन मरहूम व मरहूमा आज़म जहां बेग़म
   व जुमला मोमनीन व मोमिनात
6. मिर्जा राहत हुसैन व मिर्जा सईद इफतिकार मरहूम
7. अलहाज ज़फ़र हुसैन मरहूम (अलीको इन्जीनियर)
8. सय्यद अबुल हसन व हादिया बेग़म मरहूमा
9. अतिया अब्बास तवातवाई